श्रीः

ज्योतिष्मती

त्रैमासिक

वर्ष १७
सं० २०३०

संख्या २
माघ



वार्षिक मूल्य ६·००

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

इस अङ्क का मूल्य २·६४

विषय-सूची

आवश्यक निवेदन

पाठकोंको विदित है कि गत ६ मासमें कागजका मूल्य दुगुना हो गया है और छपाई भी बढ़ रही है। आवश्यकतानुसार कागज मिलना एक कठिन समस्या बन गई है। बड़े-बड़े प्रतिष्ठित दैनिक साप्ताहिक मासिक पत्र-पत्रिकाओंने पृष्ठ संख्या कम कर दी और मूल्य बढ़ा दिया है। परन्तु हमने न तो 'ज्योतिष्मती' की पृष्ठ संख्या कम की और न मूल्य अधिक बढ़ाया है। अतः गुणग्राही पाठक 'ज्योतिष्मती' के संरक्षक सहायक या आजीवन सदस्य बनानेकी कृपा करें और प्रत्येक स्नेही सज्जन कमसे कम एक नये ग्राहकका वार्षिक मूल्य ९) नौ रुपये मनीआर्डर द्वारा भिजवा दें तो 'ज्योतिष्मती' हम और भी अधिक अच्छे रूपमें प्रस्तुत कर सकेंगे।

जिन ग्राहकोंका मूल्य इस अङ्कमें समाप्त है उन्हें छपा हुआ मनीआर्डरफार्म साथ भेजा जा रहा है, वे अपना आगेका वार्षिक मूल्य शीघ्र भेज दें। अब जो नयी ग्राहक संख्या नामके साथ लिखी है वह स्मरण रक्खें। पुराने सब नम्बर बदल गये हैं। श्री त्रिवेदीजीको ज्योतिषसम्बन्धी अन्य कार्यके लिए अवकाश नहीं है, अतः इस सम्बन्धमें उनसे कोई पत्रव्यवहार न करें।

निवेदक :—व्यवस्थापक 'ज्योतिष्मती' सोलन (हि०प्र०)

★ श्रीः ★

ज्योतिष्मती

[अखिल भारतीय ज्यौतिषपरिषद्‌की मुखपत्रिका]

सम्पादक एवं संचालक

हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

मुख्य सभापति—अ०भा० ज्यौतिषपरिषद (भारत सरकारसे पंजीकृत)

उपसम्पादक

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी साहित्य-सांख्य-योगाचार्य
एम.ए (हिन्दी-संस्कृत) पी.एच.डी.

प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१. भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिः-शास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती'के संरक्षक माने जायेंगे। संरक्षकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे। सहायकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

(३) जो सज्जन एक बार ५०१) रु० देंगे वे आजीवन समान्य सदस्य और जो १२५) रु० एक बार देंगे वे आजीवन सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य ९ ०० नौ रुपये और एक प्रतिके दो रुपये पैंसठ पैसे हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझें जायगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (हिमाचल-प्रदेश) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद् पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरद्पूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अङ्क न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिख कर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'ज्योतिष्मती'का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवें गे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है। प्रकाशन तिथिसे सात दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथि से १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना देनी चाहिए।

व्यवस्थापक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[त्रैमासिक पत्रिका]

माघ-फाल्गुन-चैत्र मास (दि० ६ जनवरी १६७४ से ६ अप्रैल १६७४ तक)

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले॥

वर्ष १७ | सोलन, पौष शु० १५ मंगलवार, सं० २०३० वि० ८ पौष शाके १८६५ (८ जनवरी १६७४ ई०) | संख्या २

अमृते लोके अक्षिते

यत्र ज्योतिः अजस्रं, यस्मिन् लोके स्वर हितम्।
तस्मिन् मां धेहि पवमान ! अमृते लोके अक्षिते॥ (ऋ० ६।११३।७)
यत्र राजा वैवस्वतो, यत्र अवरोधनं दिवः।
यत्र अमूः यह्वती आपः तत्र माम् अमृतं कृधि॥ (ऋ० ६।११३।८)
यत्र अनुकामं चरणं त्रिनाकं त्रिदिवे दिवः।
लोकाः यत्र ज्योतिष्मन्तः, तत्र माम् अमृतं कृधि॥ (ऋ० ६।११३।६)
यत्र आनन्दाश्च मोदाश्च, मुदः प्रमुद आसते।
कामस्य आप्ताः कामाः तत्र माम् अमृतं कृधि॥ (ऋ० ६।११।११)

हे ! परम पवित्र प्रभु ! मुझे उस देशमें निवास दे – जहां सतत ज्योतिका विस्तार है, सुखके सब साधन हैं। अक्षय दूध है, अखूट अन्न है और ज्ञानका भण्डार है। वैवस्वत राजा जहां राज्य करता है, सूर्य जिसके वशमें है, जिस देशमें सिन्धु-गंगा सदृश बड़ी-बड़ी नदियां बहती है। मुझे दीर्घायु कर और सुखी बना। जिस देशमें आने-जाने, काम करनेकी पूर्ण स्वतंत्रता है। जिस देशके लोग द्यौलोकके तारोंके समान तेजस्वी हैं। जहां ज्ञान-ज्योति सदा प्रज्वलित रहती है, वहां मुझे बसा। जहां ज्ञान-सुख और विषय सुख दोनों हैं, जहां पदार्थ सुख और कुटुम्ब सुख प्रचुर मात्रा में विद्यमान है, जहां मन कभी अतृप्त नहीं रहता, सब इच्छायें पूरी होती हैं, वहां मुझे चिरजीवी कर।

सम्पादकीय विचार —

जेतारमपराजितम्

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना,
जहां कुमति तहँ विपति निधाना ॥ (तुलसी)

विश्वमें कोई पदार्थ स्थायी नहीं। अतः आर्थिक संकट भी स्थायी नहीं। परन्तु अल्पकालिक और स्थायी ये शब्द कालापेक्षित हैं। भारतकी दरिद्रता क्या स्थायी है। पर यह चिरकालिक तो अवश्य है। जिस दिन शाह आलमने ईस्ट इण्डिया कम्पनीको पूर्वी भारत (बंगाल-बिहार-उड़ीसा) की दीवानी दी—असम दिल्लीके शासनाधीन नहीं था—उसी दिनसे इस देशमें निरक्षरता और दरिद्रताने डेरा जमाया। प्रधानमंत्री और उनके चाटुकार भक्त कुछ भी कहें, भारतकी दरिद्रता-गरीबी प्रतिदिन बढ़ रही है। बढ़ती बेकारी इस सत्य को प्रमाणित करती है।

रजिस्टर्ड बेकारोंकी संख्या

दिसम्बर १९७१ में ५१ लाख
दिसम्बर १९७२ में ६८·९६ लाख
अगस्त १९७३ में ८०·७९ लाख

जो देश पराजयमें गौरव माने, पराजित नेताकी जयजयकार करे, क्या उस देशसे निरक्षरता और कंगाली एवं क्षुधाका अन्त हो सकता है? अतः आर्थिक संकट अधिक गहन है और अल्पकालिक नहीं। प्रधानमंत्री केवल देशको भुलावेमें रखनेके वास्ते तोता रटन्तके समान कहती है 'आर्थिक विपत्ति कुछ दिनोंकी है।' परन्तु सत्यको छिपानेसे घोर निराशा ही उत्पन्न होगी।

भारी पराजयकी स्मृति

सोवियत रूसकी कम्युनिस्ट पार्टीके जनरल सैक्रेटरी श्री ब्रेझनेव २६ नवम्बरको भारत आए। इसने नवम्बर १९६२ में चीनी सेना का तेजपुर पहुंचे बगैर वापस लौटनेकी घोषणा करना और नेफाकी १२,००० वर्गमील भूमि पर चीनी सेनाका अधिकार होना, नेफा उदयाचल हो गया, पर चीनकी बढ़ी सीमा नवम्बर १९७३ में भी ज्योंकी त्यों कायम है। चीनी सेनाको हिमालय पार भेजनेका कोई प्रयत्न नहीं किया गया है। यह पराजय क्या भारतमें नया उत्साह, नवीन पुरुषार्थ उत्पन्न कर सकता है? और क्षत विक्षत भारत राष्ट्रमें संजीवनी प्राण-शक्तिका संचार कर सकता है? नार्वेके तट पर १९४० में ब्रिटिश नौ-सेना पराजित हुई। नेविल चेम्बरलेनको प्रधानमंत्री का पद त्यागना पड़ा। क्या कोई ब्रिटन उसको याद करता है? चैम्बरलेनका स्थान विंस्टन चर्चिलने ले लिया, विजयश्रीने ब्रिटेनके पग चूमे। साम्राज्य विलुप्त हो जाने पर भी ब्रिटेन एक समृद्ध देश है। भारतमें पराजित प्रधानमंत्रीकी विलुप्त होती स्मृतिको चिर नवीन बनाये रखनेका प्रयत्न कर विजयसे पराजयको, सफलतासे विफलताको महान् और श्रेष्ठ बनाकर क्या हम नई पीढ़ीको नहीं बता रहे हैं। इस दशामें यदि भ्रष्टाचार हर क्षण बढ़े, सरकारी उद्योग अपनी भूलसे अपना घाटा

भरें तो क्या कोई भारी विस्मयकी बात है? जब पराजयकी जयजयकार होती है तब राष्ट्रीय चरित्रका क्या विकास सम्भव है? राष्ट्रीय चरित्रके निर्माणके अभावमें भ्रष्टाचार का बढ़ना क्या रुकना सम्भव है? विजिलेंस कमीशनकी रिपोर्ट क्या नागरवाला कांड और मारुति प्रकरण पर रोक लगा सकेगी? श्री ज्योतिर्मय वसुने कहा है—"प्रधानमंत्री मूर्तिमान् भ्रष्टाचार है।" लोकसभामें कही यह बात क्या उज्ज्वल भविष्यकी सूचक है?

भारत कहां है?

इस्लाम और मुस्लिम लीगके आगे कांग्रेस ने आत्म-समर्पण किया और भारत विखण्डित हुआ। विखण्डनकी यह प्रक्रिया जारी है। भारतभूमिके प्रति भक्ति और श्रद्धा उत्पन्न करनेका आधार ही नष्ट कर दिया गया। यह विभाजन नहीं, विच्छेद है, शब्दोंके इस मायाजालसे क्या यथार्थ सत्य छिपाया जा सकता है? इस्लामकी प्रच्छन्न प्रभुता सेक्युलरिज्म (ऐहिकवाद) के नामके व्याजसे जारी है। भुट्टोका आसन दृढ़ करनेके वास्ते पाकिस्तानको छम्ब दे दिया गया। यह क्या विजयी होनेका प्रमाण है? यह क्या ठीक वैसा ही नहीं है, जैसा कि मानसिंहका बंगाल जीत कर अकबरको देना?

'टाइम' साप्ताहिक पत्रका एक अंक जब्त कर लिया गया और उसका इन्दिरा राज्यकी सीमामें बेचना बन्द कर दिया गया। क्योंकि उसमें पैगम्बर मुहम्मदका चित्र छपा था। यह क्या इस्लामकी प्रभुताको स्वीकार करना नहीं? क्या यह विचार स्वातंत्र्यका अपहरण नहीं? दूसरी ओर तमिलनाडुके नगरोंमें पुलिस संरक्षणमें जुलूस निकलते हैं, हिन्दू देवी देवताओं को चप्पलों और जूतोंसे रास्ते भर पीटा जाता है, इस पर पाबन्दी कौन लगाए? इस्लामके आगे आत्म-समर्पण करने वाला और भारत राष्ट्रवादको समाधि देने वाला शासकवर्ग यह क्यों लगाए? यह तो भारत राष्ट्रकी भावना तकको मिटा देनेका संकल्प किए हुए है। इस सत्यको जो नहीं देख पाते, उनकी दृष्टि दोषके वास्ते भगवान्को उत्तरदायी ठहराना तो हमारे विवेकी होनेका प्रमाण नहीं माना जा सकता। पराजित और दुर्बल सम्मान पानेका अधिकारी नहीं। इस सत्यको विस्मृत करनेका फल आज यह देश भोग रहा है।

भीषण चुनाव संग्राम

उत्तर-प्रदेश, उड़ीसा, पांडुचेरी और नागालेण्डमें विधान सभाका चुनाव होगा। लोकसभाके हुए उपचुनावोंमें प्रधानमंत्रीकी पार्टी अहमदाबाद, बेगूसराय, डिंडीगुलमें पराजित हुई। इन पराजयोंके बाद प्रधानमंत्री को आवश्यकता अनुभव हुई कि उपचुनावोंका होना रोका जाये। पर राज्यसभाकी कोई सीट रिक्त रहने नहीं दी गई। क्योंकि अप्रत्यक्ष चुनावमें विजय सुनिश्चित है।

इस बीचके समयका उपयोग प्रधानमंत्री ने विपक्षी दलोंको संयुक्त मोर्चा बनानेका अवसर नहीं दिया और न यह तैयार होने दिया। प्रत्येक पक्षमें पारस्परिक अविश्वासकी भावना उत्पन्न की। यही कारण है सोशलिस्ट पार्टी उड़ीसामें प्रगति पार्टीके साथ मिलकर चुनाव लड़नेको उद्यत नहीं। यही बात यू०पी० में है। जनसंघको अपनी शक्तिका अभिमान

है, अतः वह चुनाव समझौता करनेको भी तैयार नहीं । वह इन्दिरा-कांग्रेसका अपनेको विकल्प मानता है। पर सत्य यह है कि १९६७ में उसने जितनी सीटें (९९) जीती थीं, उससे १९६९ में उससे कम स्थान (५५) वह जीत पाया। लोकसभाके चुनावमें वह ८ प्रतिशत वोट ही पा सका। १९७४ में वह शायद ही १०० सीटें पा सके।

इन्दिरा कांग्रेसको ४२ सीटोंमेंसे २१५, २२५ सीटें चाहिए। २१७ सीटें पा ले तो वह अपनेको धन्य मानेगी। वह ३०० सीटें पानेकी आशा बांधे हुए है। कम्युनिस्ट पार्टी को अपने साथ रखनेके लिए २५ से ४० सीटें देगी। इस दशामें इन्दिरा-कांग्रेस १२५-१५० से अधिक सीटें पानेकी आशा नहीं कर सकती। मंहगा अनाज, मंहगा किरासिनका तेल हरिजनोंको वाध्य करेगा कि वह श्रीमती इन्दिरा गांधीको भूलकर भी वोट न दें। यद्यपि २२ दिसम्बरसे किरासिनका दरिया बहाया जायेगा। यू०पी के लोग इसमें नहा सकेंगे। महिलायें भी समझ गई हैं कि श्रीमती गांधी अन्नपूर्णा नहीं है. यह अकाल दुर्भिक्ष लाने वाली है। अतः स्त्री उम्मीदवार भारी संख्यामें खड़े करने पर भी इन्दिरा-कांग्रेस १२५-१५० से अधिक स्थान पानेकी आशा नहीं कर सकती। शेष कमीकी पूर्ति वह २० करोड़ रु० की जमा थैलीसे करेंगी। एक वोटकी कीमत १००० रु० बताई जाती है। अतः एक विधायक पानेका मूल्य ५ लाख रु० लगाया जाता है। श्री कमलापति त्रिपाठीने विधानसभामें अपनी पार्टीकी शक्ति १५० से बढ़ाकर २७२ पर पहुंचाई थी। यहां प्रनानमंत्री बेजोड़ है। १९ ७ में संविद मंत्रिमण्डल बनने पर एक विधायकका मूल्य १ लाख रु० था। अतः अब १९७४ में ५ लाख रु० से मूल्य कम न होगा मुख्यमंत्री श्री बहुगुणाने शपथ विधि पर २० लाख रु० खर्च किया बताते हैं। इसके बाद प्रधानमंत्रीके स्वागतमें ९८ द्वार बनाने और एक लाख भीड़ जमा करनेमें लगभग १ करोड़ रु० खर्च किया। श्री बहुगुणा श्री त्रिपाठीके कदमों पर चल रहे हैं। चचियाश्वसुरके पदचिन्हों पर चलकर वह योग्य दामाद सिद्ध होना प्रमाणित कर रहे हैं।

चौ० चरणसिंहकी पार्टी किसानोंकी है। किसान इस देशमें पिछड़ा वर्ग है। शिक्षा, आर्थिक और सामाजिक दृष्टिसे चौ० चरणसिंह इस पिछड़े वर्गके नेता हैं। जोतोंको छोटा करने, खेती पर भार बढ़ानेसे यह वर्ग गांव में रहते बुए भी प्रधानमंत्रीको वोट न देगा। अतः चौ० चरणसिंह १९६९ के समान ९९-१०० सीटें पानेकी पूरी आशा कर सकते हैं।

सिंडीकेट कांग्रेसके नेता श्री चन्द्रभानु गुप्त हैं। परन्तु हृदयरोगसे पीड़ित हैं। जनसंघके समान ४२५ उम्मीदवार खड़े करनेको वाध्य हैं। क्योंकि इसके अभावमें इन्दिरा-कांग्रेसको छोड़कर इनकी पार्टीमें लौटकर आवेंगे, ये वही लोग होंगे, जो १९७० व १९७१ में इनको छोड़ गए थे। संगठनकी दृष्टिसे जिलोंमें इनका संगठन इन्दिरा-कांग्रेससे अधिक दृढ़ है। यद्यपि १९७१ में लोकसभाके चुनावमें इस पार्टीको ६ प्रतिशत ही वोट मिले। परन्तु बैंकों के सरकारीकरण करनेके बादसे भारतकी आर्थिक स्थिति अधिक बिगड़ी है। जुलाई १९६९ से पहलेकी दशामें अर्थव्यवस्था सांस

लेती थी। आज दम तोड़े हुए है। अतः दोनोंमें भेद करना १९७१ के समान कठिन नहीं रहा, और वह आजकी स्थितिके वास्ते दोषी ठहराई नहीं जा सकती है। धन-बलसे क्षीण होने पर भी सिंडीकेट-कांग्रेस १२०-१५० सीटें पानेकी आशा कर सकती है। इन्दिरा-कांग्रेस हारकर भी विजयी होगी। यद्यपि नैतिक मृत्यु उसकी हो जायेगी। डा० लोहियाके समान आन्दोलन-कारी नारे लगा सकेंगे। "इन्दिरा-सरकार गद्दी छोड़े, इन्दिरा मंत्रिमण्डल त्याग पत्र दे।"

ज्योतिषियोंके अनुसार फरवरी तकका समय प्रधानमंत्रीके वास्ते संकटपूर्ण है। उनके अपने ही विश्वस्त व्यक्ति उनका साथ छोड़ देंगे पर यह तभी ठीक माना जा सकता है, यदि प्रधानमंत्रीका जन्मलग्न कर्क न हो। इस राशिके लोग परिवार पालक होते हैं। परन्तु प्रधानमंत्रीने अपनी १२ जन्म-कुण्डलियां फैला रखी हैं। इनमेंसे कौन सी सच्ची है, यह जब तक ज्ञात न हो भविष्यवाणियों पर राजनीति में भरोसा न करना ठीक है।

जातिकी दृष्टिसे यू०पी० में महाराष्ट्र आन्ध्रके समान किसी एक जातिकी प्रधानता नहीं है। यथा—

यू०पी०में जातियोंकी शक्ति

(प्रतिशतमें)

जाट	१.५
मुसलमान	१५.०
चमार	१३.०
ब्राह्मण	९.०
अहीर	८.०
राजपूत	८.०
कुर्मी	३.५

१९६९ में कुछ पक्षोंको वोट मिले थे—

१९६९ में मिले प्रतिशत वोट

भारतीय क्रान्तिदल	२१ प्रतिशत
संयुक्त कांग्रेस	३३ प्रतिशत

स्पष्ट है श्री चन्द्रभानु गुप्तने ३३ प्रतिशत वोट पाकर मंत्रिमण्डल बनाया था। कांग्रेस विभक्त है। श्रीमती गांधी अब सवत्सा गो-रक्षिका अन्नपूर्णा नहीं रही। फिर १९६९ के समान मुस्लिम वोट विभक्त हैं। चमार और ब्राह्मण एक साथ हैं। इन्दिरा-कांग्रेसका यू०पी० में अध्यक्ष चमार है। मुख्यमंत्री ब्राह्मण है। कम्युनिस्ट साथ हैं। उर्दू भिखारी मुस्लिम भी साथ हैं। इस वास्ते कोई पक्ष चुनावमें ४० प्रतिशत वोट पानेकी आशा नहीं कर सकता। जनसंघका नेतृत्व मण्डल ब्राह्मण है। पर दल दण्डीमार दुकानदारोंका है। दण्डीमारोंसे जनता पीड़ित है। इस वास्ते टक्कर जोरदार होने पर भी निर्णयात्मक संग्राम न होगा। सिंडीकेट कांग्रेसको छोड़कर अन्य सबने चुनाव का बिगुल बजा दिया है।

पराजय स्वीकार

श्रीमती गांधी तमिलनाडुमें अपनी पार्टी नहीं बना सकीं। कम्युनिस्टोंकी सहायता भी कोई फल नहीं लाई। द्रविड़ मुनेत्र कषगम चोट पर चोट करके भी टूटी नहीं। अण्णा द्रविड़ मुनेत्र कषगम शक्तिशाली पार्टी नहीं बन सकी। १९७१ में श्रीमती गांधीने द्रविड़ मुनेत्र कषगमसे मैत्री की थी। लोकसभाकी १० सीटोंके बदले विधानसभाका चुनाव न लड़ना मान लिया। परन्तु मुख्यमंत्री श्री करुणानिधि ने मुस्लिमलीगके समान इन्दिरा-कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टीको मंत्रिमण्डलमें स्थान नहीं

दिया। सिंडीकेट कांग्रेस भी विफल रही। द्रविड़ मुनेत्र कषगमके हाथोंमें १९६७ से शासन सूत्र है, यह श्रीमती गांधीके व्यक्तित्वकी भारी पराजय है। यह उन्होंने मान लिया है। उनको बैसाखीकी जरूरत है।

पाण्डुचेरी विधानसभाका चुनाव सींडीकेट और इन्दिरा कांग्रेस मिलकर लड़ेंगे। द्रविड़ मुनेत्र कषगम सम्भवतः १९६९ के समान कम्युनिस्ट पार्टीके साथ मिलकर विधान सभा का चुनाव और लोकसभाकी दो सीटोंका उप-चुनाव लड़ेगा। श्रीमती गांधी सत्ता लोलुप है। सिण्डीकेट कांग्रेस अब प्रतिगामी नहीं रही है। विचित्र बात यह है कि प्रधानमंत्रीने कम्युनिस्ट पार्टीके प्रति विश्वासघात किया है। कोयम्बतूरकी लोकसभाकी सीट द्रविड़ मुनेत्र कषगमकी सहायतासे उसने जीती थी। न्यायतः यह सीट प्रधानमंत्रीको अपनी मित्र और सहयोगी पार्टीके वास्ते छोड़ देनी चाहिए थी। क्योंकि मृत सदस्य भी उसी विमान दुर्घटना में मरा था, जिसमें इस्पात मंत्री श्री कुमार मंगलम्का देहान्त हुआ था। कम्युनिस्ट पार्टी को तमिलनाडुमें प्रधानमंत्रीका लात मारना और यू०पी० में गले लगाना क्या सूचित करता है? श्रीमती गांधी और इन्दिरा-कांग्रेस पार्टी का कोई सिद्धान्त नहीं, कोई ऊंचा लक्ष्य नहीं। एक उद्देश्य है, एक लक्ष्य है सत्ता हाथसे न जाने पाये। इस बातका प्रमाण यह है कि स्व० कुमार मंगलम्की पत्नी श्रीमती कल्याणी कुमारमंगलम् को जितानेके लिए कामराजसे समझौता किया गया है।

कामराज-इन्दिरा-पैक्ट श्री मुरारजी देसाईके शब्दोंमें एक मायाजाल है। यह तमिलनाडुमें सिंडीकेट कांग्रेसको समाप्त करनेकी योजना है। क्योंकि पाण्डीचेरी विधानसभामें ये दोनों मिलकर भी ३० में से २० सीटें न पा सकेंगे। इस बातको श्री कामराज जानते हैं। अतः उन्होंने पैक्ट किया है। यदि वह असफल हुए तो सिंडीकेट कांग्रेसके लोग द्रविड़ मुनेत्र कषगममें मिल जायेंगे। क्योंकि श्री कामराज भी अब अंग्रेजीमें बातचीत करने लगे हैं। दुभाषियेकी उनको जरूरत नहीं। प्रभाव नष्ट हो जाने पर वह प्रार्थीके रूपमें प्रधानमंत्रीके समक्ष उपस्थित होंगे और चाहेंगे कि उनको राष्ट्रपति बना दिया जाये। राजनीतिक स्थिति का अध्ययन श्री देसाईका यथातथ्य होता है। १९६६ में उन्होंने श्री कामराजको सावधान किया था और कहा था—'कांग्रेस गुजरातमें नहीं तमिलनाडुमें हारेगी।' अतः श्री देसाईका यह कहना कि कामराज-इन्दिरा-पैक्ट गलफांस है, जाल है, यथार्थ स्थितिका विश्लेषण है। श्री कामराजका भाग्य और प्रान्तिक दृष्टि परीक्षा कसौटी पर है। श्री कामराज श्री कुमार स्वामी नैकरके राजनीतिक पुत्र हैं। वह सदा संकीर्ण प्रान्तिक दृष्टिसे सोचते विचारते रहे हैं। वह कभी भारतीय नहीं हुए।

न युद्ध न शान्ति

पश्चिमी एशियामें इस समय न युद्ध हो रहा है और न शान्ति स्थापित हो रही है। अरब इस्लाम और इजराइल दोनों पक्ष लड़ाई पुनः प्रारम्भ करनेको व्याकुल हैं। विश्व शक्तियोंने अपने शस्त्रास्त्रोंकी परीक्षा कर ली। युद्ध और शान्ति रूस और अमेरिकाकी इच्छा पर निर्भर है। मिश्र मानता है कि रूसने पुनः उसको धोखा दिया। मिग—२५ विमान नहीं

दिया। देता तो वह हारता नहीं।

इजराइल मानता है कि अकेला अमेरिका उसका सहायक है। वह एकाकी है। अतः वाशिंगटनकी बात मानने और जैनेवामें सन्धि-सम्मेलनमें भाग लेनेको बाध्य है। मिश्र संयुक्त राष्ट्रके तत्वावधानमें इज़राइलके साथ एक मेज पर बैठनेको तैयार है। क्योंकि वह अमेरिकी हथियारोंके बिना इजराइलसे लड़ नहीं सकता। दिसम्बरके अन्तमें इजराइली पार्लमैंटका चुनाव होगा। श्रीमती गोल्डा मायर विजयी होंगी। किन्तु यदि उनका मजदूर दल पहलेसे कम सीटें ले सका तब जेनेवा सन्धि सम्मेलनके सफल होनेकी आशा नहीं की जा सकती।

अरब मुस्लिम राष्ट्रोंके पास मूल्यवान् तेल है। पर वह तेल पी नहीं सकते। उनके पास तेलको छोड़कर केवल रेत रह जाता है। तेलका राजनीतिक अस्त्रके रूपमें व्यवहार कर जीवित नहीं रह सकते। यूरोप उत्तरी सागरसे तेल पा लेगा। अमेरिका इनसे केवल ५ प्रतिशत तेल लेता है। वह आत्म-निर्भर होनेके लिए सचेष्ट है, अलास्कासे तेल पाइप न्यूयार्क ले आयेगा। १९८० तक वह स्वाश्रयी हो जायेगा। इसका अर्थ है कि विश्व युद्ध अब १९९० तक स्थगित मानना चाहिए। फलतः भारत भी १९९० तक विभक्त रहेगा। इसमें चीनका और विचार करना चाहिए। माओत्से तुङ्गके आंख मूंदते ही चीन लड़ना चाहेगा। उसकी तैयारी पर्याप्त है। आन्तरिक स्थिरता बनाये रखनेके लिए चीनके वास्ते लड़ना अनिवार्य है। गृह युद्धको टालनेका यही एक उपाय है। डा० सन्यातसेनके मरनेके बाद चीनमें जो हुआ था, वह न हो और तैवान चीनमें अन्तःकलह पैदा न करे, इसके वास्ते चीनका रूससे लड़ना जरूरी है। अमेरिका इसको रोक नहीं सकता। इसी वास्ते चीन पश्चिमी एशियामें हुए युद्ध विरामका विरोधी है। भारत प्रायःद्वीपका भावी भविष्य इससे नत्थी है।

राजस्थानके नये मुख्यमंत्री

राजस्थानमें छठे मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी बनाए गए हैं। प्रधानमंत्रीकी योजनाको "जेतारमपराजित" करके वे चुने गए हैं। प्रधान मंत्रीकी योजना थी कि पंजाब हरियाणाके समान राजस्थानमें भी कोई जाट नेता मुख्यमंत्री बनाया जाए। इस प्रकार जसलमेर-गंगानगर से अमृतसर तक स्वेच्छाचारी जाट-राज्य स्थापित हो जायेगा। भारतीय सेनामें जाट सैनिक अधिक हैं, पर वह अफसर अधिक नहीं है। राजनीतिक प्रभुता पाकर वह सदा इन्दिरा कांग्रेसको वोट देंगे। सरदार स्वर्णसिंह जाट साम्राज्यके स्वप्न द्रष्टा हैं। इससे पहले इसके सरदार बलदेव सिंह थे। किन्तु हरयाणा के मुख्यमंत्रीने अपने उद्दण्ड व्यवहार, स्वेच्छाचारी शासन और अशिष्ट भाषाका व्यवहार कर अन्य वर्गोंको असन्तुष्ट कर दिया है। अतः राजस्थानमें प्रधानमंत्रीकी इच्छाका व्याघात करनेमें गृहमंत्री श्री दीक्षित और कांग्रेस अध्यक्ष डा० शंकरदयाल शर्मा अग्रणी हुए। श्री हरिदेव जोशीको प्रधानमंत्रीके इन दो विश्वस्त सहयोगियोंका आशीर्वाद और समर्थन प्राप्त था। फिर राजपूतों और कम्युनिस्टोंने भी श्री जोशीका समर्थन किया। अमृत नाहटाने कहा है "जोशी सामन्तवादके कट्टर विरोधी हैं" अतः ब्राह्मण क्षत्रियोंका उनको

समर्थन मिला। श्रीमती चन्द्रशेखरकी पहली रिपोर्टको परराष्ट्रमंत्री सरदार स्वर्णसिंहने गलत बताया था। इस समय तक श्री रामनिवास मिर्धाका नाम तक सुनाई नहीं पड़ा था। सरदार स्वर्णसिंह आगे बढ़े और प्रधानमंत्रीं को कहकर श्री मिर्धाको उम्मीदवार बनाया। किन्तु प्रधानमंत्रीने पराजयकी आशंका से खुलकर नहीं कहा कि 'श्रीमिर्धाको चुनो'। अतः बलाबलका ज्ञान हो जाने पर श्रीमती गांधीने रणक्षेत्रसे लौटनेमें ही अपनी मानरक्षा मानी। इस वास्ते हमने श्री जोशीके विषयमें कहा है वे अपराजितको जीतने वाले हैं। प्रधानमंत्रीकी यह पराजय भी उनके दो सहयोगियोंका उनकी इच्छाका विरोध करना बताता है कि इन्दिरा-कांग्रेसमें दरारें पड़ने लगीं हैं। पहली दरारका नाम है हरिदेव जोशी। यह भारतके रंगमंच पर नूतन शक्ति है। यदि राणा प्रतापका पथ श्रीजोशीने दृढ़ता से अपनाया और राजस्थानको अंग्रेजी शासन के अभिशापसे सर्वथा मुक्त कर जन-नेता बनने में सफल हुए तो विश्वास करना चाहिए कि श्री हरिदेव जोशी एक दिन नई दिल्लीके प्रधान मंत्रीके निवास गृहमें विराजेंगे। उनकी संगठन की शक्तिका ही परिणाम था कि १९५५ से १९७१ तक सुखाड़िया मंत्रिमण्डल टिका रहा। सुखाड़िया मंत्रिमण्डलकी शक्ति श्री जोशी थे। जैसे पाण्डवोंकी शक्ति भगवान् कृष्ण थे। यद्यपि श्री जोशी 'नवयुग दैनिक' नहीं चला सके, फिर भी यह विफलता उनको आगे बढ़नेसे न रोक सकी। 'ज्योतिष्मती' उनका सादर अभिनन्दन करती है। उनके लिए यह पुराना वचन सत्य सिद्ध हो—

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ताम्
न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यम्
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु॥

श्वसुरसे उत्तराधिकारमें

यू०पी० के नए मुख्यमंत्री श्री हेमवती-नन्दन बहुगुणा यद्यपि गढ़वाली हैं, पर प्रयागवासी और छात्र युवा नेता हैं। आन्दोलनकारी हैं। श्री कमलापति त्रिपाठीकी भतीजी श्रीमती कमला मुख्यमंत्रीकी अर्द्धाङ्गिनी है और पतिकी स्वामिनी अधिष्ठातृ है। वह इलाहाबाद जिला कांग्रेस कमेटीकी अध्यक्षा हैं। १९७१ में श्री बहुगुणा सिंडीकेट कांग्रेसके वयोवृद्ध उम्मीदवार श्रीमंगलाप्रसादको हराकर लोकसभामें आए और संचार मंत्री बनाये गए, परन्तु कृतिके नाम पर उनके नाम पर कुछ नहीं। डाक व्यवस्था सुधरनेके बदले और अधिक बिगड़ी है। वे स्वयं विधानसभाका चुनाव दो बार हार चुके हैं। इसी कारण यू०पी० में इससे पहले मंत्रीपद तक नहीं पहुँच सके। मुख्यमंत्री आप बन सके हैं क्योंकि कम्युनिस्ट और मुस्लिम आपको चाहते थे। आपके सहयोगी मंत्रियोंका चुनाव कम्युनिस्ट नेताकी सहमतिसे श्री चन्द्रजीत यादवने किया है। अतः कैबिनेटके १५ व्यक्तियोंमें ३ हरिजन, ३ पिछड़ा वर्ग, २ मुस्लिम हैं और ७ सवर्ण या उच्चवर्गके हैं। यू०पी० के राजनीतिक नेतृत्व परसे ब्राह्मणोंका एकाधिकार समाप्त होनेकी यह सूचना है। योग्यता, विद्वत्ता और बुद्धिबलका त्याग कर श्री बहुगुणाने संख्याको महत्व दिया है और कम्युनिज्म एवं इस्लामको लखनऊमें अधिष्ठित किया है। नवाब वाजिद अली शाहके जमानेका शासनिक अपव्यय शुरु

हो गया है। प्रधानमंत्रीके १७ नवम्बरको लखनऊ पहुंचने पर यू०पी० में फरटीलाइजर, सीमैंट और किरासिन तेलसे भरी गाड़ियां लखनऊ पहुँचने लगीं। क्या ये चीजें गांवों तक पहुंच पायेंगी? यदि पहुंच सकीं तो श्री बहुगुणा सफल शासक सिद्ध होंगे। अन्यथा श्री त्रिपाठीसे उत्तराधिकारमें प्राप्त भ्रष्ट-शासन और भ्रष्ट सिद्ध होगा। कण्ट्रोल हटाया नहीं है, बढ़ा रहे हैं। उनकी सरकार भी व्यापार करने और दुकानदारी एवं दण्डी-मारने का काम करने लगी है। सरकारी व्यापारका क्षेत्र बढ़ाया है। यह भारी अपशकुन है। यह उनके सफल साहसपूर्ण नायकताकी घोषणा नहीं। वह पुराने पथ पर ही चल रहे हैं, जो प्रगतिका नहीं, जीवनका नहीं, अपितु अप्रगति और मृत्युका मार्ग है। यह भारत भक्ति और जनसेवाका मार्ग नहीं है। 'ज्योतिष्मती' यह जानते हुए भी श्री बहुगुणाका मुख्यमंत्री बनने पर प्रेमपूर्ण अभिनन्दन करती है और उनके सफल नायक होने की कामना करती है।

सत्य नहीं

प्रधानमंत्रीका दावा है कि उनकी पार्टी जातपांतके विचारसे कोई काम नहीं करती। किन्तु यह बात सरासर मिथ्या है। राजस्थान के नये जोशी मंत्रिमण्डलको जाति सन्तुलनकी दृष्टिसे दृढ़ माना जाता है। यथा –

जोशी मंत्रिमंडल

जाट	३
राजपूत	३
ब्राह्मण	२
हरिजन	२
गिरिजन	१
जैन	१
माहेश्वरी	१
माथुर	१
स्त्री	१
योग	१५

यह जात पांतकी भावना बढ़ायेगा या घटायेगा? योग्यता प्राप्त करनेकी क्या कोई आवश्यकता रह जायेगी?

लोकतंत्र पर प्रहार

श्रीमती गांधीकी लोकतंत्रकी हत्या करने, पार्लमैंटकी उपेक्षा करने, संविधानकी भावना का निरादर करनेकी प्रवृत्ति घटनेके बदले बढ़ रही है। आर्डिनेंसोंके जरिये शासन करना उनकी अधिनायक होनेकी प्रवृत्तिका द्योतक है। अतः पेट्रोल पर उत्पादन शुल्क आर्डिनेंस द्वारा लगाने और ४०० करोड़ पानेका लोभ संवरण न कर सकीं। ४०० करोड़ रु० का नया कर भार आर्डिनेंससे बढ़ाकर उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि उनके दिलमें पार्लमैंट्री शासन प्रणालीके प्रति कोई आस्था नहीं।

यू०पी० में उन्होंने १४८ दिनोंके बाद राष्ट्रपतिका शासन समाप्त कर दिया। क्योंकि गवर्नरका शासन आपकी पार्टीके वास्ते विजय पथ प्रशस्त करनेमें विफल रहा। चाहिए था नवम्बरमें विधानसभाका चुनाव कराना, लेकिन वह उसको फरवरीमें बढ़ाकर ले गई।

आन्ध्रमें अपनी पार्टीको टूटनेसे बचानेके लिए आन्ध्र प्रदेशकी जनताको २१ जिलोंमें विभक्त कर दिया। यह संविधानकी हत्या है। यह अब श्रीमती गांधीको ज्ञात हुआ। अतः आन्ध्रमें गवर्नरका शासन १० दिसम्बरको समाप्त हुआ। लंगड़ाता भारतीय लोकतंत्र आगे बढ़ रहा है।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

भारतीय गणतन्त्रके २५वें वर्षका भविष्य

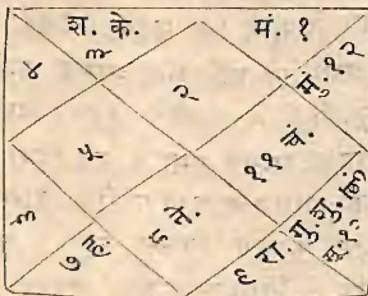
—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी—

[नये विक्रमी सं० २०३१ वि० का विस्तृत भविष्य-विवेचन हमने 'श्रीविश्वविजयपंचांग' में पृष्ठ २४ से ३२ तक दैवज्ञकी दृष्टिमें प्रकाशित किया है। स्थानाभावके कारण वह विवेचन यहां न देकर केवल प्रवेश होने वाले २५वें गणतन्त्र वर्षलग्नकी ग्रहस्थितिका दिग्दर्शन मात्र २०३१ वि०के 'श्रीविश्वविजयपंचांग' से यहां उद्धृत कर रहे हैं। —सम्पादक]

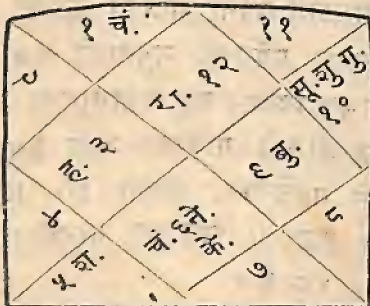
भारतीय गणराज्यका २५वां वर्ष

सं० २०३० शके १८९५ माघ शुक्ला ३ शनिवार दि० २६ जनवरी १९७४ को मध्याह्नोत्तर स्टे.टा. १-५९ (इष्ट घटयादि १६।४८) पर वृषभ लग्नमें भारतीय जनतन्त्रको २५वाँ वर्ष प्रवेश होगा। उस समयकी ग्रहस्थिति यह है—

गणतन्त्र वर्षलग्न



गणतन्त्र जन्मलग्न



भीड़ तन्त्रसे सावधान !

गणतन्त्रके इस २५वें वर्षका लग्नेश शुक्र निर्बल-ग्रस्त और वक्री है, एवं वर्षलग्न शनि मंगल की पापकर्त्तरीमें है, राहु अष्टम, मंगल बारहवें और शनि केतु द्वितीयमें है—यह योग इस वर्ष भारतीय गणतन्त्रके लिए अग्नि परीक्षाका है। शनि स्वयंमें इतना भयावह या बुरा नहीं है, किन्तु जब यह किसी पापग्रह मंगल राहु या केतुके सम्पर्कमें आ जाता है तब राक्षसीप्रवृत्ति वाला बन जाता है। जब शुभग्रह गुरु शुक्र निर्बल या पीड़ित होते हैं और शनि मंगल राहुकेतु हर्षल नेपच्यून पारस्परिक सम्बन्ध बनाते हैं तब अराजकता वा भीड़तन्त्रका जन्म होता है। इस गणतन्त्र वर्षलग्नमें गुरुशुक्र दोनों निर्बल हैं। मंगल स्वक्षेत्री और शनि केतु मित्र क्षेत्री बलवान् है। मंगल सीधी कार्यवाही हड़ताल हिंसा क्रान्तिका ग्रह है। शनि केवल प्रजातन्त्रका ही ग्रह नहीं अपितु औद्योगिक श्रमिकोंका भी स्वामी है। यहां यह फलितार्थ निकलता है कि इस वर्ष राष्ट्रको सबसे बुरे आर्थिक राजनैतिक संकटका सामना करना पड़ेगा। औद्योगिक अशान्ति, किसानों एवं छात्रोंमें उत्तेजना और भाषाविवाद या साम्प्र-

दायिकताके करण यत्रतत्र हिंसा भड़केगी। बेकारी, महार्घता, भ्रष्टाचार और निर्लज्जता बढ़ेगी। हड़ताल, बन्द, घेराव आदि उपद्रवों से जनजीवन अव्यवस्थित क्षुब्ध होगा। आयात निर्यातमें व्यवधान पड़नेसे भी गम्भीर आर्थिक संकट पैदा होगा। यदि शासनसूत्र संचालकोंने समय रहते इस भीड़ तन्त्रकी प्रवृत्ति पर अंकुश नहीं लगाया तो भारतमें प्रजातन्त्रका भविष्य उज्ज्वल नहीं होगा। आने वाले कुछ वर्ष भीड़-तन्त्रको प्रोत्साहन देने वाले हैं। हिंसा और उपद्रव करने वाले तत्वोंको राजनीतिज्ञ अपनी स्वार्थसिद्धिके लिए आश्रय देंगे और शासन इनसे प्रभावपूर्ण दण्डनीतिसे निपटनेकी अपेक्षा अवास्तविक नीति पर चलेगा। बंगाल असम उड़ीसा केरल तमिलनाडु पश्चिम-भारत और उतरप्रदेशके विभिन्न भागोंमें औद्योगिक साम्प्रदायिक एवं राजनैतिक कारणोंसे अशान्ति फैलेगी। शनि मंगलके कारण लोहा, इस्पात उद्योग, धमनभट्ठियां, रेलवे डाक तार विभाग विशेष रूपसे प्रभावित होंगे। शासनको विवश होकर श्रमिकोंके प्रति नरम अवास्तविक और पक्षपातपूर्ण नीति अपनानी पड़ेगी। इस गण-तन्त्र वर्षारम्भकी प्रथम तिमाहीमें राष्ट्रके दो प्रधान पुरुष कालकवलित होंगे।

भारत प्रगति करेगा

जहां यह गणतन्त्र वर्षलग्न पापकर्तरीमें है वहीं जन्मलग्नेश वर्ष लग्नेश और मुंथेश गुरु शुक्र बली तो नहीं, परंतु त्रिकोणमें सुखेश-पंचमेश सूर्य बुधके साथ हैं—ये सभी प्रकारकी भीषण विघ्नबाधाओंको पार करनेकी शक्ति प्रदान करके भारतको प्रगति पथ पर अग्रसर करेंगे। इनका फल प्राचीन आचार्योंने यों लिखा है—

यदा सवीर्यो मुथहाधिनाथो
लग्नाधिपो जन्मविलग्नपो वा।
केन्द्रत्रिकोणायधनस्थितास्ते
सुखार्थं हेमाम्बर लाभदा स्युः।।

भाग्यभवनमें केन्द्र त्रिकोणेश मुंथेशका बैठना भाग्यवृद्धि या भारतका गौरव बढ़ाने वाला योग है।

धनस्थानमें शनि, मंगलसे दृष्ट है, अतः अर्थसंकट विशेष रूपमें उपस्थित होगा। सुरक्षा सम्बन्धी व्यय बहुत बढ़ेगा। शत्रुओं या विरोधी तत्वोंसे भी राष्ट्रीय सम्पत्तिकी विशेष हानि होगी। अग्निकाण्ड बाढ़ और कहीं सूखा वा भूकम्प हिमपातसे भी हानि होगी। केन्द्र और प्रान्तका बजट घाटेमें रहेगा। नये करसे प्रजा-त्रस्त होगी। वर्षारम्भसे पहले माघ फाल्गुन (फरवरी मार्च १९७४) में मँहगाई पराकाष्ठा पर पहुंचेगी। केन्द्रीय और प्रान्तीय समस्याएं प्रधानमंत्रीके सामने विषमरूपसे उपस्थित होंगी। मंत्रिमण्डलोंमें पारस्परिक आन्तरिक वैमनस्य पनपेगा। लोकसभा विधानसभाओंमें हंगामें होंगे। प्रकृति-प्रकोपसे भी हानि होगी। दि० ९ फरवरीको गुरु कुम्भ राशिमें प्रवेश करेगा, यह कृषि नाश और दुर्भिक्ष कारक है—**कुम्भराशि गते जीवे मेघः स्वल्पाम्बु वर्षति, कृषिनाशं च दुर्भिक्षं पूर्वदेशे समर्घता।**" फिर २० अप्रैलसे आगेका समय प्रजाके स्वास्थ्य और समृद्धिके लिए अनुकूल नहीं है। मई जून-जुलाईमें अप्रत्या-शित घटनाएँ घटेंगी। किसी राष्ट्र प्रमुख पुरुष का देहावसान अथवा पदपरिवर्तन सम्भव होगा। सर्वोच्च न्यायालयके न्यायाधीश और केन्द्रीय-मंत्रिमण्डलमें भी कुछ परिवर्तन सम्भव है। नेता दुर्घटनाग्रस्त होगा। प्रधानमंत्रीको किसी वरिष्ठ अधिकारीका वियोग होगा। इस वर्ष भारतमें कहीं धूमकेतु या चोटी वाला तारा भी दिखाई देगा।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

जनवरी १९७४ ई०

ता० ८ मंगलवार—पौषी पूर्णिमा सत्य व्रत।
११ शुक्रवार—संकष्टहारिणी श्रीगणेश ४व्रत
१२ शनिवार—लोहड़ी महोत्सव पंजाबियोंका
१३ रविवार—मकरमें सूर्य संक्रान्ति अर्ध-रात्रोत्तर साढ़े छः बजे मु० ३०
१४ सोमवार—गंगासागर यात्रा मकर-संक्रान्ति पुण्यकाल, स्वामी विवेकानन्द ज०
१८ शुक्रवार—षट्तिला ११ व्रत।
२० रविवार—प्रदोषव्रत।
२३ बुधवार—मौनी अमावस, प्रयाग माघ मेला नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती।
२५ शुक्रकार—चन्द्रदर्शन मु० ३०
२६ शनिवार—गणतन्त्र दिवस।
२८ सोमवार—वसन्त पंचमी, लाज. नि.दि.
३० बुधवार—महात्मा गांधी निधन दिवस।
३१ गुरुवार—भीष्माष्टमी, दुर्गाष्टमी।

फ़रवरी १९७४ ई०

ता० ३ रविवार—जया एकादशी व्रत।
४ सोमवार—सोम प्रदोष व्रत, ताजिया मु०
६ बुधवार—माघीपूर्णिमा, सत्यव्रत, जैन रथ यात्रा ललिताज० रविदास ज०
९ शनिवार—श्रीगणेश ४ व्रत
१२ मंगलवार—कुम्भमें सूर्यसंक्रांति पुण्यकाल
१५ शुक्रवार—श्रीरामदास नवमी।
१७ रविवार—विजया ११ व्रत।
१९ मंगलवार—भौम प्रदोष व्रत।
२० बुधवार—श्रीमहाशिवरात्रि १४ व्रत।
२२ शुक्रवार—अमावस्या।
२३ शनिवार—चन्द्रदर्शन मु० ३०।
२४ रविवार—श्रीरामकृष्ण परमहंस ज०।

मार्च १९७४ ई०

ता० ४ सोमवार—आमला एकादशी व्रत स्मार्त्त.
५ मंगलवार—आमला ११ व्रत वैष्णवोंका
६ बुधवार—प्रदोष व्रत।
७ गुरुवार—सत्यव्रत होलिकादहन अर्धरात्रो
८ शुक्रवार—धुलेंडी धूलिवन्दन।
९ शनिवार—वसन्तोत्सव होला १ आम्रकलि.
१० रविवार—श्री सन्ततुकाराम जयन्ती।
११ सोमवार—श्रीगणेश ४ व्रत।
१४ गुरुवार—मीनमें सूर्यसंक्रान्ति मु० ३०
१५ शुक्रवार—शीतला सप्तमी।
१६ शनिवार—शीतलाष्टमी।
१९ मंगलवार—पापमोचनी एकादशी व्रत।
२१ गुरुवार—प्रदोषव्रत।
२२ शुक्रवार—मेला पृथूदक पिहोवा।
२३ शनिवार—शनैश्चरी अमावस्या।
२४ रविवार—चान्द्र संवत्सरारम्भ, नव-रात्रारम्भ, श्री गौतम जयन्ती।
२५ सोमवार—चन्द्रदर्शन मु०३०
२६ मंगलवार—गणगौरी पूजन, मत्स्यजयन्ती
२९ शुक्रवार—स्कन्दषष्ठी जैन ओली प्रा०
३१ रबिवार—श्रीदुर्गाष्टमी मेला मनसादेवी श्री तारादेवी।

अप्रैल १९७४ ई०

ता० १ सोमवार—श्रीरामनवमीव्रत, नवरात्र समा.
३ बुधवार—कामदा ११ व्रत।
४ गुरुवार—प्रदोषव्रत, अनङ्ग १३।
५ शुक्रवार—श्रीजैनमहावीर जयन्ती।
६ शनिवार—सत्यव्रत चैत्री पूर्णिमा, आय-म्बिल ओली समाप्त, ईद उल्मिलाद।

त्रैमासिक वायदा बाजार-भविष्य

[लेखक :—दैवज्ञ भूषण पं० श्री हंसराज शर्मा ज्योतिष चन्द्रमणि]

दि० ६-१-७४ से ६-४-७४ तक विशेष ग्रहयोग

इस अवधिमें बुध २६ जनवरी रात्रिमें कुम्भ राशिमें प्रवेश करके १५ फरवरी रात्रि में वक्री होकर १६ फ़रवरीको अस्त होगा और ३ मार्चको उदय होकर ६ मार्च रात्रिसे मार्गी ही चलेगा। इस समय यह १३ करोड़ मील दूरी पर है और २८ फरवरी तक पृथ्वीके निकट आने लगेगा, ५ करोड़ ७५ लाख ६० हज़ार मीलकी दूरी पर आ जाएगा। यह वायदा तथा हाजिर पर विशेष प्रभाव करता है। इस समय तक अर्थात् २८ फरवरीके करीब भाव बहुत चलेंगे।

शुक्र भी ३० मार्चको कुम्भमें प्रवेश करेगा, अभी यह तृथ्वीके निकट आ रहा है और २३ जनवरीको २ करोड़ ४६ लाख २४ हज़ार मीलकी दूरी पर आ जाएगा, १३ फरवरी तक वक्री भी रहेगा। शनि भी २७ फरवरी तक वक्री रहेगा। हर्षल १ फरवरीसे वक्री होगा, प्लूटो सारी अवधिमें वक्री रहेगा। नेप्च्यून १२ मार्चसे वक्री चलेगा, बृहस्पति २ फरवरी से २ मार्च तक अस्त रहेगा, और इसी समयमें राशि परिवर्तन करके अपना नीच भोग करेगा। शुक्र भी २२ से २७ जनवरी तक अस्त रहेगा। इन ग्रहोंकी स्थितिसे स्पष्ट है कि इस अवधिमें भाव आशासे भी अधिक चलेंगे। २८ फरवरीको बुधका पृथ्वीके निकटतम होना इस बातका सूचक है कि इन दिनोंमें हाजिरमें बहुत सी वस्तुओंके तो उपलब्ध होने में भी कठिनाईका अनुभव होगा। शुक्र तथा शनि भी पूरा भाग ले रहे हैं। इसका विशेष प्रभाव सिग्रेट, तम्बाकू, तेल मिट्टीका, पेट्रोल, मोम, माचिस, चीनी, मोती, बनस्पतति, डीज़ल, छोटी इलायची, सुपारी, कपास, शुद्ध घी, चन्दन, कस्तूरी, अरिण्डा, रुई, जिस्त, कली आदि पर पड़ेगा। इनका स्टाक १३ फरवरीसे पहले-पहले करने वाले अच्छा लाभ उठा सकेंगे। यदि बृहस्पतिके अस्त होनेसे पहले अर्थात् २ फरवरीसे भी पहले ही कर लें तो और भी अच्छा रहेगा।

परन्तु यह भी ध्यान रहे कि आगे चलकर बुध बृहस्पति युद्ध जो २८ जनवरी और फिर ४ मार्चको और उधर आगे चल कर अप्रेल मासमें बृहस्पति शुक्र और मंगल शनिका युद्ध भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे, और मन्दी भी करेंगे, जिससे सावधान रहें। इसका पूरा फल 'ज्योतिष्मती' के अगले अंकमें दिया जावेगा। इस प्रकार ऐसी वस्तुका स्टाक न करें जिनमें मन्देकी संभावना हो। वायदा बाजारके लिए यह अवधि विशेष महत्वपूर्ण है। और इस अवधिमें बजटका विशेष प्रभाव पड़ता है तथा एक दिनमें ही भाव या तो धड़ामसे नीचे गिर पड़ते हैं या अकस्मात् ही भड़क उठते हैं। इस वर्ष वजटके दिनोंमें ग्रहों की भारी हलचलसे स्पष्ट है कि वायदाके भाव भी काफी चलेंगे।

इण्डियन आयरन, हिन्द मोटर्स, सैञ्चुरी,

टाटा आर्डिनरी, ग्वालियर रेयन, ओरियण्ट पेपर, इण्डियन ऐलूमीनियम आदि शेयरों पर अधिक पड़ेगा, कुछमें टैक्सोंकी अफवाहोंसे मन्देके झटके लगेंगे और कुछ एकमें भाव ऊंचे उठेंगे। तेल तिल्हन भी पीछे नहीं रहेंगे। बाजार सराफ़ामें भाव कुछ कम चलेंगे और वह भी चांदीमें। अन्य धातुओंमें पीतल तथा जिस्तके भाव काफी चलेंगे। इनमें लम्बी लाईन कुछ इस प्रकारसे है :—

९—१—७४ से २०—१—७४ मन्दा।
२०—१—७४ से २७—१—७४ तेजी।
२८—१—७४ से १३—२—७४ साधारण मन्दा
१४—२—७४ से २—३—७४ तेजी।
३—३—७४ से ११—३—७४ मन्दा।
१२—३—७४ से २१—३—७४ तेजी।
२२—३—७४ से ७—४—७४ मन्दा।

भरतपुरमें हिन्दू संस्कृति प्रशिक्षण केन्द्रका उद्घाटन

गत दि० ४ दिसम्बर १९७४ मंगलवारको श्रीरघुनाथ मंदिर किला भरतपुर (राजस्थान) में हिन्दू संस्कृति प्रशिक्षण केन्द्रका उद्घाटन ज्योतिष्मतीके यशस्वी सम्पादक श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी के करकमलोंसे सानन्द सम्पन्न हुआ। इस उद्घाटन समारोहकी अध्यक्षता श्री लक्ष्मण मन्दिरके परमपूज्य विद्वान् महन्त राजगुरु श्री १०८ स्वामी गंगादासजी महाराजने की। अ०भा० विद्या-परिषद वृन्दावनके अध्यक्ष श्री १०८ स्वामी योगानन्दजी महाराज पी.एच.डी, राज-स्थानके विधायक श्री गिरिराज प्रसाद तिवारी एडवोकेट, श्री सेठ चिरंजीलाल पोद्दार और स्थानीय गण्यमान्य अधिकारी एवं नागरिक तथा मथुरा वृन्दावन आगरा दिल्लीसे भी कई महात्मा विद्वान् एवं नेतागण पधारे थे। त्रिवेदीजीका लगभग पौन घंटे तक हिन्दू-संस्कृति पर अन्वेषणात्मक विद्वत्तापूर्ण भाषण हुआ। जब श्री त्रिवेदीजी सपत्नीक ट्रेन द्वारा भरतपुर पहुंचे तो स्टेशन पर आपके स्वागतके लिए अनेक गण्यमान्य नागरिक उपस्थित थ। गाड़ीसे उतरते ही त्रिवेदी-दम्पतिको पुष्पमालाओंसे लाद दिया। इसी दिन राजपंडित श्री श्यामशरणजी शास्त्रीकी पुत्रीका विवाह भी सानन्द सम्पन्न हुआ। दिल्लीसे केन्द्रीय संचार उपमंत्री श्री जगन्नाथ पहाड़िया भी इस शुभसमारोहमें सम्मिलित हुए थे। स्थानाभावके कारण यहां उद्घाटन भाषण और कार्यक्रम प्रकाशित न हो सका। इस केन्द्रके व्यव-स्थापक हैं—डा० राधारमण गुप्त *M.A.B.Sc.M.D.H*, संयोजक भरतपुरके प्रसिद्ध पत्रकार श्री रामजीलाल भारद्वाज और आचार्य हैं राजपंडित श्री श्यामशरणजी शास्त्री।

—रामजीलाल भारद्वाज (संयोजक)

'ज्योतिष्मती' के लिए विशेष लेखमाला

सूर्य और चन्द्रमा का विकिरणीय प्रभाव

[लेखक :—श्री केवल आनन्द जोशी]

[इस लेखके विद्वान् लेखक श्री जोशीजी ज्योतिष एवं खगोलके वैज्ञानिक विषयों पर अध्ययन अनुशीलन कर रहे हैं। इनके कुछ लेख अल्मोड़ाकी पत्रिका 'अलकनन्दा' में छपे हैं। आप मूलतः उत्तराखण्ड अल्मोड़ा निवासी हैं—जहांके विप्र बालकोंको ज्योतिष विरासतके रूपमें प्राप्त हैं। लेखक सहृदय उत्साही होनहार नवयुवक हैं, प्राच्य एवं पाश्चात्य ज्योतिषका गम्भीर अध्ययन कर रहे हैं। ये अपने अनुभवोंसे 'ज्योतिष्मती' के पाठकोंको लाभान्वित करना चाहते हैं—अतः आपका सहयोग हम सधन्यवाद स्वीकार करते हैं। आपका यह पहला लेख पर्याप्त उपादेय सिद्ध होगा। इस लेखमें जोशीजीने 'एस्ट्रालाजीकल मेगजीन' अंग्रेजी पत्रिकासे भी कुछ सामग्री ली है। यह लेख केवल 'ज्योतिष्मती' के लिए लिखा गया है, अतः अन्य कोई पत्र-सम्पादक इसे उद्धृत वा अनूदित बिना आज्ञा प्राप्त किये न करें।
—सम्पादक]

प्राचीन आख्यायिकाओंमें ब्रह्माण्ड और पिण्डाण्डका उल्लेख मिलता है। सन्तोंने यत्र तत्र बहुत कुछ इस विषयमें कहा। यदि सम्पूर्ण सृष्टि ब्रह्माण्ड है तो मानव उसका सूक्ष्म पिण्डाण्ड है। अतः स्पष्ट है कि ब्रह्माण्ड की परिधिमें जो कुछ भी घटित होगा उसका प्रभाव मानव शरीर पर भी होगा। कॉस्मिक किरण अनुसंधानकी प्रयोगशालाओं द्वारा यह प्रतिपादित हो चुका है कि मैक्रोकॉश्मसे महिक्रो कास्म किरणोंका उत्सर्जन यह सत्यापित करता है कि आकाशीय पिंडोंकी प्रतिक्रिया जीवित प्राणियों पर निरन्तर होती है। यहां तक कि जड़ पदार्थ भी इन कास्मिक किरणोंसे समयान्तरमें प्रभावित होकर अपना रंग या आकार भी बदल देते हैं। चेतन प्राणियोंमें सबसे तीव्र अनुभव शक्ति मनुष्यमें है, अतः पिण्डोंका दृश्य या अदृश्य प्रभाव उस पर अधिक तीव्रतासे और निश्चित रूपसे होता है। यह प्रभाव सूर्य-प्रकाश एवं चन्द्र-प्रकाशके माध्यमसे, पैदा होने के उपरान्त मनुष्य पर पड़ता है। किरणोंके इस प्रकारके कोगीय प्रभावों पर प्राचीन विज्ञों ने ज्योतिष विज्ञानकी रचना की। इस वैज्ञानिक युगमें भी उनकी खोज उतनी ही अकाट्य है जितना कि दिन और रातका समयावधि पर निश्चित रूपसे प्रकट होना।

पृथ्वीके समीप आकर देखा जाय तो हमारे सामने फैला आकाश एक छोटा मोटा ब्रह्माण्ड है। (पुराणोंमें ब्रह्माण्ड असंख्य हैं, यह वर्णन है) जिसमें ग्रहोंकी गतिविधि जारी है। राशि-चक्रके पार्श्वसे बृहत्तर ब्रह्माण्ड मानवके जीवनको अर्थ देता है, और हमारे निकटतम ग्रहोंका जीवनको बनाने और बिगाड़नेमें पूरा योगदान होता है।

यह सर्वविदित है कि पृथ्वी पर जो जीव-अस्तित्व निर्भर है उसे प्राथमिक रूपमें सूर्यसे

ही शक्ति प्राप्त होती है। अगर इसी साधारण तथ्यको स्वीकार करें तो जन्म-कुण्डलीमें मात्र सूर्यकी ही स्थितिके अध्ययनसे बहुत सारे परिणाम उपलब्ध होंगे। कुण्डलीके आधार पर जहां मनुष्यका पतृक बल या कमजोरीका अध्ययन किया जा सकता है—वहीं पर उसके व्यक्तित्वके सम्पूर्ण ढाँचेको भी प्रस्तुत किया जा सकता है। दशम भावमें मेषके सूर्यकी स्थितिका ही उदाहरण लें (१३ अप्रेलसे १४ मईके मध्य दोपहरके आसपास पैदा हुए जातक)। हम थोड़ी देर इस बातको भी भूल जायें कि मेष राशिमें सवा दो नक्षत्रोंके अधिपतियोंका भी प्रभाव है। परन्तु सूर्यकी स्थितिसे जो प्रभाव होगा वह अधिक होगा, बजाय कि सवा दो नक्षत्रोंसे बने मेष राशिके स्वामीके। सूर्यके दशम भावमें होनेका यह अर्थ होगा कि व्यक्तिके पास पुत्र, वाहन, अधिकार, विद्वत्ता, सम्पत्ति बल और प्रसिद्धिकी तो प्रचुरता अवश्य होगी। वह कोई शासक होगा और सर्वसाधारणकी प्रशंसाका पात्र होगा। हां, जातकको सफलता धीरे-धीरे ही प्राप्त होगी। ऐसा जातक विश्वास एवं महत्वके पदको ग्रहण करेगा। सरकार द्वारा उसे ऊंचा पद मिलेगा (विशेषतः प्रशासन सेवा आदि) और राज्यसे पुरष्कार आदि भी प्राप्त करेगा। उस मनुष्यके जीवनकी सफलतामें माता पिताकी ख्यातिका भी योगदान रहेगा।

इस उदाहरणमें कर्क लग्नके उन जातकोंका भी उल्लेख हो रहा है जिनका उच्चस्थ सूर्य (१३ अप्रेलसे २३ अप्रेलकी बीच दोपहरके आसपासका जन्म) दशम स्थानमें हो। किसी शत्रु ग्रहसे यदि पीड़ित न हो तो मेष राशिमें सूर्यकी इस स्थितिसे मनुष्य अपने क्षेत्रके अन्तर्गत नेताका पद ग्रहण करता है। इस प्रकारकी स्थितिमें वे जातक भी आते हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय हितकारी संस्थाओं, सरकारी संस्थानों या सामाजिक सेवाओंमें प्रतिनिधित्व प्राप्त करते हैं। ऐसे लोग मैनेजिंग-डायरेक्टर, स्टाफ-प्रतिनिधि या राष्ट्रीय महत्वकी परिषदों, (ट्रेड यूनियनके नहीं) ख्यातिप्राप्त राजनैनिक दलोंके महासचिव होते हैं। मेषस्थ सूर्य होनेसे वह व्यक्ति उदार चरित्र, भद्र, साहसी और सिद्धान्तवादी होगा। लग्नसे अतिरिक्त स्थित ऐसा सूर्य सभी विश्वप्रसिद्ध लेखकोंको सहायक हुआ है। श्रेष्ठ बुद्धिमत्ता, संघर्षोंके प्रति साहसपूर्णता, परोपकारकी भावना और समयका यथोचित उपयोग करना ऐसा जातक भली भाँति जानता है।

इस प्रकारकी मिलती-जुलती विशेषताएं स्वतः ही किसी भी भावमें सूर्यके होनेसे प्रमाणित होती है। सापेक्ष दृष्टिसे देखा जाए तो सूर्य निःसंदेह ही बड़ा महत्वशाली और श्रेष्ठ गुणोंसे विभूषित ग्रह है जो सौर परिवारमें स्थिथ होकर अन्य ग्रहोंका भी विकिरणीय प्रभाव पृथ्वी वासियों तक पहुंचाता है। परन्तु सूर्य अश्विनी नक्षत्रमें होगा तो धृष्टता, अहंकार, और रूढ़िवादिताका शिकार भी व्यक्ति अवश्य होगा। यदि सूर्य दशम भावमें हो और व्यक्ति कोई राजनैतिक दलका नेता हो तो उच्च पद प्राप्त कर लेनेके उपरांत भी उस व्यक्तिमें असंतोष होगा। खासकर उसके ऊपर शासन करने वालेके प्रति। अहंभाव, उद्दण्डता और एक प्रकारकी तानाशाहीकी प्रवृत्तिका भी उसकी विचारधारामें मिश्रण होगा, जो प्रभावमें आने वाले लोगोंको अत्यधिक हानि पहुँचा सकता है।

आधुनिक मनोवैज्ञानिक दो भौतिक इच्छाओं प्रेम या आकर्षण, घृणा या विरोधकी खोजका व्यर्थ ही वर्णन करते हैं। इसे वे मनोवैज्ञानिक 'फ्रायड' की अनुपम खोज या उपलब्धि मानते हैं। वास्तवमें यह श्रेय उन प्राचीन भारतीय ऋषियों एवं तत्वज्ञानियोंको जाता है जिन्होंने यह कहा था कि विश्व-नागरिक बननेके लिए राग यानि आकर्षण (स्वार्थ) और द्वेष यानि घृणा (निराशा) की भावनाको त्यागना चाहिए। ये दो इच्छाएं ही ब्रह्माण्डकी सबसे प्रमुख विशेषताएं हैं जो प्राणी जगत्‌की समस्त गतिविधियोंको निर्धारित करती हैं। ग्रहोंका अपना प्राकृतिक गुणावगुण स्वीकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करनेका माध्यम बनता है।

सूर्य यदि भरणी नक्षत्रके अन्तर्गत हो तो विलासमय जीवनकी उत्कट लालसा व्यक्तिको रहती है। यह कार्य वे अपने कर्तव्यकी कीमत चुकाकर भी करते हैं। यह स्थिति उनके चार्ट में पाई जाती है जो बहुत उच्च पदाधिकारी हों। राजा या प्रधान मंत्री जो जनताके प्रति अपने कर्तव्योंकी अवहेलना करते हैं। किसी कम्पनीका प्रबन्धक जो कर्मचारी वर्ग या कम्पनीके हितोंकी ओर अधिक ध्यान नहीं देता। एक मुख्याध्यापक या प्रधानाध्यापक जो शिष्यों या उसके नीचे कार्य करने वाले अध्यापकोंकी रुचिकी परवाह नहीं करता। ऐसे जातक अपने पदका दुरुपयोग अपने स्वार्थों की पूर्तिके लिए करते हुए—मौज बहारकी सदैव आकांक्षा रखते हैं और खुले आम इस क्षेत्रमें आगे रहते हैं।

रागकी प्रवृत्तिका निष्पादन बृहस्पतिकी स्थितिसे और भी स्पष्ट हो जायेगा—राग-(आकर्षण) की अभिवृत्ति वासनात्मक कार्योंके प्रति अधिक है अथवा अध्यात्मक, यह निश्चित करनेके किए सूर्यसे अगर बृहस्पति तीसरे, चौथे, पांचवें, सातवें और नवें तथा ग्यारहवें होगा तो सूर्यके भरणी नक्षत्रमें होने वाले प्रभावोंमें आधिक्य रहेगा। "प्रभावों" का अभिप्राय यहां पर वासनात्मक और भौतिकवादी दृष्टिकोणसे होगा। एक प्रकारसे ऐसा सूर्य नेतृत्व, साहस, स्वाभिमान, उद्दण्डता, कर्तव्योंके प्रति सजगता, दृढ़ता, स्वेच्छाचारिता और उच्चकुलमें पैदा होनेके घमण्डका प्रतीक होगा। शारीरिक दृष्टि से ऐसे जातकको हृदयरोग, आंतोंसे सम्बन्धित तथा रक्त संचार करने वाली धमनियोंसे सम्बन्धित बिमारियोंसे प्रभावित होना पड़ता है।

मानव ग्रहोंके अविरल तरंगोंकी प्रणालीमें घूमता रहता है, जब विभिन्न ग्रह विभिन्न स्थितियोंसे अपनी दृष्टियों (रेखागणीतीय स्थिति) का प्रकाश फेंकते हैं तो स्वतः ही किसी भी जातककी जीवन पद्धतिका परिचय मिल जाता है।

मिथुन लग्नमें उच्चके सूर्यका उदाहरण लें। यहां पर सूर्यकी स्थिति एकादशवें भावमें होगी। यह साधारणतः इस बातको सूचित करता है कि जातक बहादुर लड़ाकू या शारीरिक-युद्धका प्रेमी होगा, लेकिन कुछ सीमा तक आलसी भी। चारित्रिक गुणोंमें ईमानदारी, निर्भयता तो होगी, परन्तु ऐसे जातक भावना-शून्य या हृदयहीन भी पाये गये हैं। दृष्टिमें कुछ तिरछापन भी ऐसे लोगोंमें होता है। यदि लग्न मेष, कर्क, सिंह या तुला हो तो फलादेश

भिन्न होगा मेष लग्नमें एकादशस्थ सूर्य रातका अन्धापन (रतौंधी) का परिचायक है। फिर भी लग्नमें होनेस व्यक्ति दृढ़ विश्वास और स्थिर चरित्रका पक्षपाती होगा। द्रुत बोधगम्यता, रचनात्मक प्रवृत्ति, युद्धप्रियता, मजबूत काठी (शरीर) और सामान्य कार्योंमें सफलताएं जातकको प्राप्त होंगी। ऐसे मनुष्य की आकांक्षाएं उच्चकोटिकी होती हैं। लेकिन सूर्य यदि मंगल, केतु या राहुके नक्षत्रमें होता है तो—दृष्टि दोष या नेत्र सम्बन्धि रोग तथा भावुकतापूर्ण क्रियाओंसे परिवर्तन या उलटफेर होनेकी आशंका रहती है।

सूर्यकी द्वितीय भावस्थ स्थिति आर्थिक मामलोंमें सहायक होती है। परन्तु अधिकांश धन या तो जमा ही रह जाता है या फिर लम्बे विनियोजनोंमें लग जाता है। सरकारी ओहदे की प्राप्तिसे भी धनलाभ होता रहता है। इसके अतिरिक्त यह ठेकेदारीका भी प्रतीक है। ऐसे लोग सरकार द्वारा निर्देशित संस्थानों या ऊँची पूँजी वाले उद्योगों तथा रसायन या ऐलोपैथीके उद्योगोंसे सम्बन्धित रहते हैं। द्वितीय भावमें ही सूर्य यदि नीचराशिगत या शत्रुराशिगत होगा तो विकट स्थितियोंका उत्पन्न करने वाला और किसी न्यायाधिकरण द्वारा जुर्माना या राजदण्ड होनेका भी द्योतक है।

चतुर्थ और पंचम भावमें सूर्य अशुभ माना जाता है। व्यर्थकी चिन्ता, अल्पविकसित मस्तिष्क, बुद्धिहीनता, पिता एवं सन्तानको पीड़ा पहुंचाने वाला ऐसा सूर्य जातकके सम्पूर्ण जीवन को ही महत्वहीन बना देता है।

तृतीय और षष्ठ भावमें सूर्यकी स्थिति उत्तम है। तृतीयमें होनेका अर्थ - मित्रों और सम्बन्धियोंसे शुभ कामनाएं प्राप्त करना, सफल और उद्देश्य पूर्ण यात्राएँ, सृजनात्मक और विस्तृत विचारधारा तथा स्वस्थ मानसिक धरातलका प्रदाता ऐसा सूर्य भाग्यवृद्धिमें भी सहायक होता है। यदि सूर्य पीड़ित हो तो पड़ोसियों या सहकर्मियोंसे अनबन, अहंकारी और घमण्डी स्वभावका सूचक है। इस स्थिति में सांझेदारी, सन्धिपक्षों या करारोंमें विघटन हो जानेका भी भय रहता है। परिणामस्वरूप जातकको कानूनी विवादोंमें उलझना पड़ता है। ऐसे परिणाम सामान्यतः या तो सूर्यकी दशा-अन्तर्दशाके समय होते हैं या जब शनि सूर्यसे आठवें, बारहवें, पहले या दूसरे भावमें भ्रमण करता है।

सूर्यकी छठे भावकी स्थिति आदर्श है। जहां यह रिश्तेदारों और सम्बन्धियों तथा बिरादरी आदिमें शक्तिशाली शत्रुओंको पैदा करता है—वहां उन्हें बुरी तरह नीचा भी दिखा देता है। विश्व चैम्पियनों, मुक्केबाजों, और असाधारण करिश्मों वाले जातकोंकी कुण्डली में अधिकांशतः यह स्थिति पायी जाती है। यह उन प्रतिभाशाली लोगों या आविष्कारकों या अध्येताओंकी स्थितिको भी दर्शाता है जिनके बाजारमें आनेसे समवृत्तिके प्रतिद्वन्दियोंका व्यवसाय प्राय. ठप्प पड़ जाता है। छठे भावमें सूर्य उच्च श्रेणीके लोगोंसे मित्रता स्थापित करनेमें सहायक होता है और किसी प्रतिष्ठापूर्ण कार्य (वित्तीय, सांस्कृतिक या शिक्षासे सम्बन्धित) में व्यक्तिको प्रसिद्धि दिलाता है जो उसके भाग्य-निर्माणमें सहायक सिद्ध होता है। इसमें अन्य आकाशीय पिण्डोंका भी योगदान विचारणीय होगा।

एक अन्य उदाहरण लें। यदि शनि बारहवें भावका स्वामी बनकर सूर्यके साथ बैठा हो या उसे देख रहा हो तो निश्चय ही जातक मानवोपयोगी कार्योंको प्रारम्भ करता है। व्यक्ति अपनेसे ज्यादा आयुके लोगोंसे मित्रता स्थापित करनेमें सक्षम होता है। और उनके द्वारा सहायता भी प्राप्त करता है, जिससे जीवन के उत्तरार्धमें बहुत सफल होता है। यदि इसके साथ ही बृहस्पतिकी दृष्टि भी सूर्य पर हो तो वह महत् और परमार्थ सेवाओं सम्बन्धी कार्यों से ख्याति पाता है। मित्रगण उसे पूरा सहयोग देते हैं और निश्चय ही वह विशिष्ट श्रेणीके पुरष्कारोंको प्राप्त करता है।

सूर्य जो कि ऊर्जा शक्तिका प्रदाता, आत्मा का कारक और प्रधान ग्रह है, किसी मतसे छठे भावमें होनेसे स्वास्थ्यके लिए अधिक हितकर नहीं माना जाता है. यह कुछ सीमा तक कमजोर दिल, क्षीण शरीर और कमजोर पाचनशक्तिका भी सूचक है। शनिकी दृष्टिसे किसी संस्पर्शी रोगके होनेकी भी संभावना होती है। अगर सूर्य वृहस्पति या बुधके नक्षत्र अथवा राशिमें हो तो मनुष्य जीवनको अनुशासन बद्ध करके या व्यायाम अथवा यौगिक क्रियाओं द्वारा स्वास्थ्य लाभ करता है। पीड़ित सूर्य हृदय रोगोंको उत्पन्न करता है। श्वास-नलीसे सम्बन्धित रोग, अस्थमा, गठिया अथवा सन्धिवात, क्षीण पाचन शक्ति आदि पीड़ित ग्रहकी स्थिति पर निर्भर है। परन्तु बृहस्पतिकी दृष्टि मात्र संतुलन और सुधारका परिचायक है, चाहे कितनी ही कष्टदायक स्थिति हो।

सातवें और आठवें भावमें भी सूर्यकी स्थिति सहायक नहीं मानी जा सकती। सातवें भावमें सूर्य संतोषजनक काम-शक्तिसे भी जातक को वंचित रखता है। सांझेदारीसे भी उसको कोई लाभ प्राप्त नहीं होता। पति या पत्नी एक दूसरेके लिए मानसिक तनावों और विघटनके कारण बन जाते हैं। यदि बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातकको सहृदय-सहयोगी या जीवनसाथीकी प्राप्ति हो जाती है। उच्च कोटिकी काम-अनुभूतिको प्राप्त करनेकी क्षमता रहती है। परन्तु पीड़ित सूर्यका सप्तम भावमें होना वांछनीय नहीं है।

अष्टम भावमें होनेसे सूर्य नेत्र विकार तो पहले करता है। पुत्र संततिका भी ऐसे जातकको अभाव रहता है। जातकको शत्रुके षड्यंत्रोंसे हानि उठानी पड़ती है। स्वीकृत मान्यताओंके अनुसार, अगर सूर्य अष्टम भाव में पाप-ग्रहोंसे दृष्ट न हो तो मनुष्यको विवाह आदिसे धन लाभ करानेमें सहायक होता है या वह व्यक्ति वसीयत आदिका धन भी प्राप्त करता है। स्वास्थ्य कमजोर रहता है, परन्तु आत्म-शक्ति अत्यन्त दृढ़ होती है। सूर्यकी यह स्थिति अचानक मृत्युकी द्योतक है। जो अधिकांशत: हृदयकी गति रुक जानेके कारण कही जा सकती है। पीड़ित सूर्यका अष्टमभाव-गत होना पिताकी अल्पायु, पैतृक सम्पत्तिका नुकशान, रोगोंसे निरन्तर जूझते रहना तथा कमजोर स्वास्थ्य तथा धननाश और यहां तक कि पति या पत्नीकी शीघ्र मृत्युको भी सूचित करता है। किसी राजनैतिक नेताकी कुण्डलीमें आठवें भावमें यदि मंगल और सूर्यका योग हो—कोई अन्य सहायक योग न हो तो निश्चय ही वह किसी हिंसात्मक मृत्यु या हत्याका शिकार होनेकी चेतावनी देता है।

नवम, दशम तथा एकादश भावमें सूर्यकी स्थिति प्राचीन खगोलशास्त्रियोंने सराहनीय मानी है। और यह वास्तविक रूपसे सही भी है। सूर्य जब नवम भावमें होता है तो जातक को प्रसन्नता, धन, सौभाग्य, सफलता, कानूनी क्षेत्रमें सम्मान, शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा आदर, विज्ञान, दर्शन, विदेशोंमें सफलता, विदेशोंमें आवास-मकान या सम्पत्तिका प्रदाता माना गया है। ऐसे मनुष्यका कला-साहित्य आदिके प्रति रुझान, अध्यात्मके प्रति गहन आस्था आदि इस प्रकारके कई वरदान सूर्यके नवम भावगत होनेसे प्राप्त होते हैं। दृढ़ता, उच्चाभिलाषा और आत्मविश्वास भी इस प्रकार की स्थितिसे प्राप्त होता है। यदि मंगल का भी संयोग हो तो सर्वोच्च कानूनी पद या विधान सभाई पद प्राप्तिकी भी भविष्यवाणी की जा सकती है। मंगल और राहु यदि सूर्य को कुदृष्टिसे देख रहे हैं तो विदेश यात्रासे निराशा—व्ययाधिक्य और दुघटनाएं होनेकी भविष्यवाणी की जा सकती है।

यह पहले ही वर्णन किया जा चुका है कि किसी भी क्षेत्रमें उच्चपद प्राप्ति अधिकार सफलता और सम्मानका सूचक दशमभावगत सूर्य है।

सरकारी या सार्वजनिक स्रोतोंसे आय, शक्तिशाली या अधिकार प्राप्त लोगोंसे सहायता तथा सम्बन्ध, मित्रों द्वारा सहयोग, सामाजिक सफलता, संगीतमें रुचि तथा भाग्ययुक्त जीवन का भोग सूर्यके एकादश भावमें होनेसे प्राप्त होता है।

यह पाया गया है कि सूर्यका द्वादश भावगत होना उतना दोषपूर्ण नहीं है जितना कि प्राचीन उल्लेखोंमें वर्णन है। दण्डीराजाके अनुसार ऐसी स्थितिसे नेत्र रोग, अस्वस्थ शरीर, पिता द्वारा कष्ट, दिमागी परेशानी, या मस्तिष्क विकार, निम्नस्तरकी विचारधारा, और ऐसी पत्नी जो पूर्णतः प्रेम नहीं करती आदि सूर्यके बारहवें भावमें होनेके परिणाम हैं। परन्तु वास्तविक तौरसे यह देखनेमें आया है कि चाहे नेत्र रोगसे पीड़ित हो या कमजोर स्वास्थ्य वाला हो, ऐसा मनुष्य अतीन्द्रिय संवेदी या मनोचिकित्सक, वैज्ञानिक आत्मबल और परोक्ष अनुभूतियोंका ज्ञाता और जीवनमें कर्मके विभिन्न क्षेत्रोंमें रत रहता है। ऐसे जातकोंको डायरेक्टर, ज्योतिषी या जादूगर अथवा तांत्रिकके रूपमें ख्याति प्राप्त होती है।

चन्द्रमाका भी प्रभाव उतना ही महत्वपूर्ण है जितना जितना सूर्यका। हमारा निकटतम पड़ोसी होनेके कारण और मन-मस्तिष्कका अधिष्ठाता चन्द्रमा आत्माको संचालित करने वाला सौर-परिवारमें दूसरा प्रधान ग्रह है। चन्द्रमाकी स्थितिसे हमारी आन्तरिक गतिविधियों और दैनिक कार्योंका निरूपण होता है। चन्द्रमासे प्रेरित तत्वोंके अनुसार हम अपने जीवनकी परिस्थितियोंको अपने अनुसार ढालने में सक्षम होते हैं। चन्द्रमा निश्चय ही हमारे मनोभाव, रुचियों-अरुचियों तथा किसी भी समय उत्पन्न स्थिति पर हमारी प्रतिक्रियाओं और आचार-व्यवहारको इंगित करता है।

अक्सर चन्द्रमा विपरीत व्यवहार-प्रणालियोंके प्रति भाव-ग्रन्थियोंका सृजन करता है। यदि चन्द्रमा हमारी प्रवृत्तियों और भावनाओंको संचालित करता है तो शनि उन भावनाओंके ज्वारको स्थिर करता है और

व्यग्रताओं पर नियंत्रण रखता है, खास कर अवचेतन मस्तिष्ककी क्रियाओं पर। इसलिए मस्तिष्कके कार्य-संचालन और विचार पद्धति को क्रियान्वित करनेमें शनि और चन्द्रमाके बीच संतुलित स्थितिका होना आवश्यक है।

उदाहरणके लिए—सूर्य और चन्द्रमाका एक दूसरेसे द्विर्द्वादश और षडष्टक स्थिति मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणसे अन्तर्द्वन्द्व पैदा करता है। यह स्थिति अगर दशम भावसे सम्बन्धित हो तो व्यक्ति सार्वजनिक क्षेत्रमें उतरते हैं, परन्तु कठिनतासे ही सफल हो पाते हैं। न तो उनके द्वारा जनताको लाभ होता है और न ही वे जनतासे लाभ प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे जातक अपनी व्यक्तिगत कल्पनाओंको मूर्तरूप देना चाहते हैं और सफलता तथा ख्यातिके लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देते हैं।

षडष्टक या द्विर्द्वादशकी स्थिति सप्तम भावमें हो तो पति पत्नीके सम्बन्ध संतोषजनक नहीं कहे जा सकते हैं। तीसरे तथा नवम भावमें यह स्थिति हानि तथा निराशाओंकी द्योतक है। ये परिस्थितियां स्वदेश या विदेश यात्रा करते वक्त भी पैदा हो सकती है। सूर्य और चन्द्रका परस्पर केन्द्र (९० अंशकी दूरी) त्रिकोण (१२० अंशकी दूरी) में और कुछ मतान्तरसे तीसरी-ग्यारहवीं स्थिति कुण्डलीमें महत्वशाली एवं शक्ति प्रदाता कही गई है।

चन्द्रमा स्त्री जातिका, आकर्षण शक्ति-युक्त, ठंडा और आर्द्रता पूर्ण ग्रह है। यह सूर्य ऊर्जाका परावर्तक और जिन ग्रहोंसे दृष्ट या युत हो उसके विकिरणीय प्रभावोंका प्रति-बिम्बक, कल्पनाशक्ति प्रधान और जलतत्व राशि कर्कका प्रतिनिधि ग्रह है। स्त्री कुण्डली में यह जातकके स्वास्थ्यका प्रधान कारक तथा स्त्रीके जननेन्द्रियों तथा अन्य शारीरिक उप-क्रमोंका संचालक है। यह निषेक, उर्वरक और जननशक्ति वाला ग्रह है। शरीरमें रक्तप्रवाह-जलतत्व और कोशिकाओं तथा धमनियों एवं नाड़ियोंके संचालनमें चन्द्रमाका योगदान रहता है। पेट सम्बन्धी क्रियाओंमें इसका निश्चित प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त यह स्तन-प्रदेश, ग्रास नली, स्त्री जननेन्द्रिय एवं कोमल तन्तुओं तथा आंखों पर भी प्रभाव डालता है। इसके प्रभावसे उत्पन्न रोग, तीक्ष्ण उपार्जित, और मियादी किस्मके होते हैं। सर्वाधिक गति-मान होनेके कारण ज्ञानेन्द्रियों पर चन्द्रमा अधिक प्रभाव डालता है, बजाय कि आकृतिके।

शक्तिशाली एवं ग्रहोंकी शुभ दृष्टिसे वीक्षित चन्द्रमा अच्छे स्वास्थ्यका परिचायक है। निर्बल और पीड़ित चन्द्रमा सुप्त मनः-स्थिति एवं गिरे हुए स्वास्थ्यका परिचायक है। रातमें जन्म लेने वाले शिशुका आकाश मध्यमें आच्छादित और दिनके समय जन्मे जातकके, पृथ्वीके एकदम पृष्ठ भागमें स्थित चन्द्रमा सामान्यसे अधिक शक्तिशाली कहा गया है। विपरीत स्थिति वाला चन्द्रमा अपेक्षाकृत कमजोर और प्रभावहीन माना जाता है। शक्तिशाली और संतुलित चन्द्र, बलिष्ठ शरीर, अच्छे मानसिक धरातल और नियमित शारीरिक प्रक्रियाओंको प्राकृतिक रूपसे विशिष्टता प्रदान करता है।

प्रकाशकी वृद्धिको प्राप्त, उदय होता हुआ और कोण स्थित तथा शुभ ग्रहोंके साथ बैठा हुआ, समराशियोंमें स्थित चन्द्रमा बली माना जाता है। जलतत्व राशियोंमें इसकी स्थिति

सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है (कर्क और मीन) उसके बाद यह वायु तत्व राशियोंमें अधिक प्रभावशाली समझा जाता है और पृथ्वी तत्व राशि (कन्या) में निष्क्रिय और अग्नितत्व प्रधान राशियोंमें संतुलित रहता है।

चन्द्रमाका प्रकाश अमावस्या (न्यूमून) से पूर्णमासी (फुल मून) तक वृद्धिकी ओर रहता है। पूर्णमासीसे अमावस्याकी ओर लौटते वक्त प्रकाश क्षीण होता जाता है। प्रकाश वृद्धिकी ओरका समय विकिरणीय प्रभावोंमें शुभता लाता है। यह समय शक्ति, स्वास्थ्य और बिमारियोंसे आराम पाने तथा पुनर्शक्ति पानेकी दिशामें सहायक होता है। शारीरिक शक्तिमें क्षीण चन्द्रके समय जो गिरावट आती है वह प्रकाश-वृद्धिके दिनोंमें दोबारा हासिल हो जाती है। चन्द्रके ह्रास पक्षमें शरीरका द्रव तत्व नीचेकी ओर प्रवाहित होता है और वृद्धि-पक्षके दिनोंमें यह ऊपर की ओर चढ़ने लगता है। पूर्ण चन्द्रके दिन यह अधिकतम चढ़ाव पर होता है। स्त्री-शरीर पर इस प्रभावको अधिक स्पष्टतासे जाना जा सकता है।

अमावस्याका समय अपने निम्नस्तरके प्रभावों तथा मृत्युके लिए सबसे अधिक कुख्यात है। इस दिन पैदा हुए जातक साधारणत: अल्पायु, विद्रोही, मानसिक कुण्ठाओंसे ग्रस्त, झुंझलाहट और कान्ति-हीन चेहरेसे युक्त तथा अपनी अलग लीक बनाने वाले होते हैं। ऐसे चन्द्रसे शारीरिक गतिविधियोंमें क्षीणता, शक्ति में कमी और अंग-संचालनमें निष्क्रियता प्रधान होती है। इसका प्रभाव छोटी अवस्थासे ही शरीरमें लकवा और आमवातकी व्याधियोंसे पड़ जाता है। अधिकांश निरीक्षणोंमें यह पाया गया है कि पुरुष-जातक जो चन्द्रमाके पूर्ण लोप के दिन पैदा हुए जीवित रहनेकी बहुत कम संभावना पैदा करते हैं। अधिकांश अल्पमृत्यु अमावस्याके समयके आसपास होती हैं जो वास्तवमें एक कठिन समय इस दृष्टिसे होता है।

नवजात शिशु पर अमावस्याके चांदका प्रभाव उसके ढाँचेको पतला करनेमें सर्वाधिक रहता है। यदि किसी अन्य पाप ग्रहका प्रभाव उस वक्त उसके शरीर पर पड़ रहा हो तो चन्द्रमा और भी अधिक घातक होनेमें नहीं चूकता है। इसके अतिरिक्त किसी भी घटना या दुर्घटनासे पहले तथा बिमारीकी शुरुआत से पहलेकी हड़बड़ी व्यग्रता या आशंका पर किसी अन्य प्रकारके भयका माध्यम लेकर मन में स्वत: ही उठने वाले विचारों या पूर्व-कल्पनाओं पर अमावस्याका अधिकतम सहयोग रहता है। बहुत बार तो ये पूर्वकल्पित विचार आकस्मिक रूपसे घटित भी हो जाते हैं। अमावस्याका चन्द्र जिस ग्रहको भी देखेगा वृद्धिके दिनोंमें उसका प्रतिबिम्ब स्पष्ट होता जायेगा और चन्द्र प्रभाव गुप्त शक्तियोंसे प्रेरित होकर किसी घटनाको जन्म दे देगा।

पूर्ण चन्द्रका प्रभाव पूर्णता अथवा शरीर में द्रवताकी बहुतायतसे भी सम्बन्धित है। यह शरीरको अधिकतम ज्वारकी जैसी अवस्था प्रदान करता है। प्रधानत: इसके प्रभावसे मनुष्यमें उतावलापन, शीघ्रता और दक्षता तथा गर्मजोशीका समावेश हो जाता है। पूर्ण-चन्द्रमें मस्तिष्क विशाल और अमावस्याको संकीर्ण रहता है। मिर्गी या घबराहटके दौरे

अक्सर इन दोनों समयोमें अत्यधिक रूपमें प्रकट होते हैं और चन्द्र-प्रधान व्यक्तियोंका स्वभाव इन दोनों समयमें ज्यादा विरोधी, चिड़चिड़ा और प्रतिघाती हो जाता है। विशेषकर (भ्रान्त चित्त (पागल), हिस्टिरियाके मरीज, कंपन अथवा अपस्मारके रोगियोंकी तो पूर्णचन्द्रके समय दशा अत्यन्त विकट हो जाती है। एक नर शिशु जो पूर्ण चन्द्रके समय पैदा होता है अगली अमावस्या तक मुश्किलसे ही बच पाता है। पूर्ण चन्द्रका समय किसी भी प्रकारकी शल्य चिकित्साके लिए उपयुक्त नहीं है। ऐसे आपरेशनोंमें आमतौरसे सफलता प्राप्त नहीं होती, क्योंकि शरीरका रक्त प्रवाह और तरल तत्व इस समय अधिकतम गतिमान रहता है।

तीक्ष्ण और मियादी पीड़ाओं (दांत, कान या हृदय सम्बन्धी रोग) में भी गोचर चन्द्रका प्रभाव रहता है। समयका प्रतीक बिन्दु सूर्यकी स्थितिसे निर्धारित होता है। अपने गोचर पथ पर विचरण करते समय चन्द्रमा सूर्यसे सातवें दिन पहले केन्द्रमें होता है। चौदहवें दिन एक दम सामने। उसके तीसरे केन्द्रकी स्थिति २१वें दिन आती है। और उसके मूल विन्दु जहांसे वह चला था पूरे २८वें दिनमें पहुंचता है। चन्द्रमाके पहले, दूसरे तथा तीसरे केन्द्रकी स्थितिमें जब बिमारियां उत्पन्न होती हैं ज्वर तथा तीक्ष्ण रोगके रोगियोंके लिए कष्टप्रद होती हैं। अगर रोगी किसी प्रकार इस संघर्ष-मय समयको झेलता रहा तो चन्द्रमाके पुनः उसी स्थान पर आने तक, जबसे रोग प्रारम्भ हुआ, रोग या तो समाप्त हो जायेगा या फिर चिरकालिक (क्रानिक) रूप ग्रहण कर लेगा। तीक्ष्ण बीमारियों और ज्वर ग्रस्त रोगियोंके लिए उपरोक्त संघर्षमय दिन बहुत हानिकर साबित होते हैं। भयंकर संघर्षमय दिन तीक्ष्ण बिमारियोंके लिए चौदहवां होता है। उस दिन चन्द्रमा उस स्थितिसे बिलकुल सामने (विरोधी स्थान पर) होता है जिस दिनसे बिमारी आरंभ हुई थी। किसी अन्य दिनके अपेक्षा गंभीर ज्वर-ग्रस्त लोग अक्सर चौदहवें दिन ही मृत्यु पाते हैं। अगर कदाचित् वे इस दिन बच गये तो उनकी हालतमें सुधार हो जानेकी आशा बंधती है। साधारणतः मरीजके लिए सातवाँ और २१वां दिन भी घातक होता है। लेकिन चौदहवें दिनको अपेक्षा ये दिन उतने मारक नहीं हैं। ज्वर तथा अन्य तीक्ष्ण संघातोंसे नवें दसवें और उन्नीसवें दिन आराम मिलनेक आशा रहती है। इन दिनों चन्द्रमा बिमारीकी शुरूआतके दिनसे त्रिकोण स्थितिमें होता है। इसके अतिरिक्त बहुत कुछ उस नक्षत्र पर भी निर्भर है जब रोग आरंभ हुआ हो।

चन्द्रमासे पुरुषोंके बायें नेत्र और स्त्रियों के दाहिने नेत्रका अध्ययन किया जाता है। बर्थ चार्टमें कुछ अन्य अस्पष्ट क्षेत्र भी होते हैं जहांसे भ्रमण करते हुये चन्द्रमा तत्कालिक संकेत देता है। ये क्षेत्र राशि-चक्रमें चन्द्रमाके निकृष्ट विकिरणीय प्रभावको जातक पर फेंकते हैं। प्रधानतः इन स्थितियोंमें अगर मंगल ग्रह का भी योग प्रतियोग या दृष्टि हो तो अंधापन, वक्रदृष्टि या अन्य नेत्र बिकार पैदा होते हैं। ये क्रूर क्षेत्र वृष राशिके २९ अंश, सिंह ६ अंश, धनु ९ अंश, मिथुन ५ अंश, मकर १८ अंश कर्क २० अंशसे २२ अंश तक, मियुन २१ से २४ अंश तक हैं। इसके अतिरिक्त सूर्य या चन्द्र उपरोक्त स्थलोंसे योग करता हो तो भी आंखों के लिए कष्टप्रद होता है।

वृष राशिका पीड़ित या निर्बल चन्द्र गलेसे सम्बन्धित पीड़ाओंका कारक है और इसके विरुद्ध राशि वृश्चिक पर दृष्टि होनेसे स्वप्नदोष, स्राव, जननेन्द्रिय सम्बन्धी और गुप्तांगसे सम्बन्धित रोग होनेकी संभावना होती है।

मिथुन राशि स्थित पीड़ित और निर्बल चन्द्र अस्थमा, निमोनिया, श्वास नलिकासे सम्बन्धित रोग, नजला, फेफड़ेसे सम्बन्धित रोग, हाथ तथा कन्धों पर सन्धिवात या गठिया आदि रोगोंको उत्पन्न करता है।

कर्क राशिका निर्बल और पीड़ित चन्द्र उदर-विकार, जलन्धर, मोटापा और पाचन क्रियासे सम्बन्धित रोग लक्षण पैदा करता है।

सिंहका चन्द्रमा पीठ दर्द, हृदय रोग, रक्त संचारसे सम्बन्धित रोग, मरोड़, अगर ठीक ५ अंशमें हो या उसके गोलमें हो तो निश्चय ही नेत्र-विकार होता है।

कन्या राशिका निर्बल चन्द्र पेचिस, पर्यु-दर्या-शोथ, अंतड़ियों और पाचन क्रियासे सम्बन्धित रोगोंके लक्षण पैदा करता है।

तुला राशिमें इसका प्रभाव यूरेमिया, सफेद दाग वाली बिमारी, कई प्रकारकी अन्य बिमारियां जो किडनीसे सम्बन्धित हों, विपरीत योनिसे ग्रहण हो जाने वाली बिमारियां सिर दर्द तथा अनिद्रा आदि लक्षणोंका प्रतीक है।

चन्द्रमाका निर्बल प्रभाव वृश्चिक राशिमें शय, जननेन्द्रिय तथा मलाशयकी पीड़ा, अनियमित मासिक धर्म, विपरीत राशि वृष पर दृष्टि होनेसे गलेसे सम्बन्धित बीमारी आदि प्रकारसे होता है।

धनु राशिगत निर्बल और पीड़ित चन्द्र कूल्हों और जघाओं पर अपना प्रभाव डालता है। रक्त दोष और किसी भी दुर्घटनासे उनकी हिप-बोन प्रभावित हो सकती है। विरुद्ध राशि मिथुन पर प्रतिबिम्ब होनेसे फेफड़े और श्वास नलिकासे सम्बन्धित रोगोंकी संभावना होती है।

मकर राशिका पीड़ित चन्द्रमा सन्धिवात, साइनोवियल द्रवकी कमीसे सख्त घुटने, चर्म विकार (खाल उड़ना या सफेदी छा जानेका रोग) विरुद्ध राशि कर्कसे सम्पर्क होनेसे पेटकी गड़बड़ी और पाचन क्रियासे सम्बन्धित रोग प्रकट करता है।

कुंभ राशिका निर्बल चन्द्र नसों और शिराओंको उभारता है। पैरके अलसर, जलंधर, और सिंह राशि पर प्रतिबिम्ब पड़नेसे, हिस्टि-रिया, बेहोशी और तीव्र धड़कनोंके पैदा होनेके लक्षण प्रगट होते हैं।

मीन राशिका निर्बल चन्द्रमा संवेदी और कोमल पैरोंका सूचक है। प्यास, अथवा विषा-क्त एवं नशीली चीजें खानेकी आवश्यकतासे सम्बन्धित रोग, तथा विरुद्ध राशि कन्यामें प्रतिबिम्ब पड़नेसे आंतें खराब होने और तोंद बढ़नेकी संभावना होती है।

खगोलीय परिमापमें सूर्यसे ९० अंश आगे और ९० अंश पीछेका चन्द्रमा निर्बल स्वीकार किया गया है।

मनचाही संतान

[लेखक :— श्री पं० जगन्नाथ शर्मा भारद्वाज]

वेद भारतीय संस्कृतिकी अनुपम मणि-मंजूषा है, किन्तु जो उसके अधिकारी होते हैं वे ही उस मंजूषासे उन रत्नोंका आहरण कर सकते हैं जिनकी दीप्तिसे भारत अतीत-काल में समुन्नत रहा है और भविष्यमें भी समुन्नत होकर रहेगा। भारतीय शास्त्रोंमें पत्नीको वामाङ्गी शब्दसे सम्बोधित किया जाता है। आइये इस शब्दका थोड़ा आलोचनात्मक विश्लेषण करें।

वेदमें इस दृश्यमान् जगत्को प्रकृति बताया गया है तथा इस जगत्के रचयिता परम पिता परमात्माको पुरुष कहा गया है। वास्तवमें यह सब कुछ पुरुष-प्रकृतिका ही खेल है, परन्तु प्रकृतिका अपना कोई अस्तित्व नहीं है, उसका आधार केवल वह एक पुरुष ही है।

वैदिक गणितके मतसे भी पुरुषको एक (१) से प्रकृतिको शून्य (०) से उपमा दी गई है। आधुनिक कम्प्यूटरोंका कौशल भी एक तथा शून्य दो अंकों पर ही आधारित है। आदिमें वह परम पुरुष (निराकार ब्रह्म) एक ही था, जब वह त्रिगुणात्मक हुआ तो त्रिकोण बना और जब गुण बढ़े तो चतुष्कोण, पञ्च-कोण, षट्कोण और यहां तक कि जब अनेक गुण बढ़ गये तब उसने एक वृत्त अर्थात् प्रकृति का रूप धारण कर लिया। इस प्रकार उस एक पुरुषसे ही प्रकृतिका प्रादुर्भाव हुआ और अन्तमें इस प्रकृतिने उस पुरुषमें ही जाकर विलीन हो जाना है। एक अंकके आगे एक शून्य लगा देनेसे दस (१०) बन जाते हैं, दो शून्य लगा देनेसे सौ (१००), तीनसे हजार (१०००) और इसी प्रकार क्रमशः लाखों करोड़ों बनते चले जाते हैं, परन्तु उन संख्याओं मेंसे एक अंकके हटा देने पर शेष शून्योंका कोई महत्व नहीं रह जाता। यदि शून्यको मूल्यान्वित करना है तो एकको बांई ओर स्थान देना ही होगा। इससे यह सिद्ध हुआ कि भारतीय ग्रन्थोंमें जो ऐसा लिखा है कि 'पत्नी (प्रकृति) पति (पुरुष) के बांये अंग आकर ही शोभा को प्राप्त होती है।" वह केवल मनघड़न्त न होकर वस्तुतः प्राकृतिक ही है, परन्तु जब दान, यज्ञादि शुभ कर्म किये जाते हैं तो पत्नीको पुरुषके दांई ओर स्थान ग्रहण करना होता है। वह इस विचारसे कि विवाहके बाद स्त्रीके पास अपना कुछ भी नहीं रहता। ऐसी अवस्था में वह अगले जन्मको सफल करनेके लिए शुभ कर्म कहांसे कमाए ? अतएव पति द्वारा किये जाने वाले शुभकर्मोंमें भाग बंटानेके लिए उस समय पत्नी पतिके दांई ओर आ जाती है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार शून्य एक अंक के दांई ओर आने पर (०१) एकका $\frac{9}{10}$ भाग खो लेती है।

अब प्रश्न यह उठता है कि इस परम्परा का क्या हमें कई वैज्ञानिक लाभ भी है ? वैसे तो वैदिक विधानके अन्तर्गत सभी परम्पराएं प्राकृतिक हैं और इसके साथ-साथ वह हमें भौतिक लाभ भी प्रदान करती हैं, जिनकी चर्चा फिर कभी करेंगे। परन्तु स्त्रीको बांये अंग रखनेका फल तो अत्यन्त लाभदायक है।

एक प्रकारसे आप इसे वरदान ही कह सकते हैं। इस नियमके अनुसार प्रयोग कर गृहस्थके भोगोंका अधिक आनन्द लिया जा सकता है, मनचाही सन्तान प्राप्त की जा सकती है, इत्यादि-इत्यादि।

परम्परागत प्रथाके अनुसार जब कोई ज्योतिषी किसी जातककी जन्मपत्री बनाता हैं तो उसे बालकके पिताके नामके साथ ऐसा भी लिखना होता है "अमुक गृहे भार्यायां दक्षिण कुक्षौ पुत्र रत्नमजीजनत्" यदि बालिका की पत्री बनानी होती है तो वह लिखता है कि "अमुक गृहि भार्यायां वाम कुक्षौ कन्या रत्नमजीनत्" अर्थात् पुत्र माताकी दक्षिण कोखसे तथा पुत्री वाम कुक्षसे जन्म लेती है।

सम्भवत: आपके सुननेमें भी आई हो, यह एक लोकोक्ति है कि यदि कोई गर्भवती स्त्री चलते समय पहले बाँया पाँव उठाती हो तो समझें कि उसके गर्भमें बालक है। यदि दांया पैर उठाती हो तो समझें कि गर्भमें बालिका है। ऐसा इसलिए होता है कि जब हम कहते हैं कि "दक्षिण कुक्षौ पुत्र:" तो दांया पैर भारी पड़ जानेके कारण बांया पैर स्वत: ही उठ जाता है और जब हम कहते हैं कि "वाम कुक्षौ कन्या" तो बांया पैर भारी हो जानेसे दांया पैर स्वत: उठ जाता है।

ऊपर लिखे यह दोनों मत बड़े सुन्दर ढंग से एक दूसरेका समर्थन करते हैं। भारतीय संस्कृतिके मतानुसार संसारकी प्रत्येक वस्तु पुरुष-प्रकृतिके नाते दो भागोंमें विभक्त हैं। यथा प्रत्येक वर्षके भी दो भाग हैं, उत्तरायण-दक्षिणायन। प्रत्येक मासके दो भाग हैं कृष्ण पक्ष-शुक्ल पक्ष। प्रत्येक दिनके दो भाग, हैं दिन और रात। इसी प्रकार मानव शरीरके भी दो भाग माने गये हैं दांया भाग, बांया भाग। दांये भागको पुरुष भाग कहते हैं और बांएको स्त्री भाग कहते हैं। वास्तवमें शरीरके दांये अंग बांए अंगोंकी अपेक्षा दृढ़ होते हैं।

हमारे श्वास के भी मुख्यत: दो प्रकार हैं। जब श्वास नाकके दाहिने नथनेसे चल रहा हो तो उसे दांया सुर कहते हैं—और जब श्वास बांये नथनेसे चल रहा हो तो उसे बांया स्वर कहते हैं, सरोधा स्वरोदय शास्त्रका ऐसा कथन है कि जब दांया स्वर चल रहा हो तो मनुष्यमें उत्तेजनात्मक भावनाएं प्रबल रहती हैं, अत: उस समय उसे पुरुष कार्य करने ही उचित होते हैं, यथा खेलना, व्यायाम करना, झगड़ा करना, भोग करना, इत्यादि। और जब बांया स्वर चल रहा हो तो शान्त भावनाएं प्रबल रहती हैं, अत: उस समय शान्त कार्य करने ही उचित हैं, यथा-पढ़ना, लिखना, पूजा पाठ करना इत्यादि। आपने यदि कोई दांया स्वर सम्बन्धी कार्य करना हो और उस समय आपका बांया स्वर चल रहा हो तो दांया स्वर चलानेके लिए आपको बांई करवटसे लेटना होगा, थोड़े ही समय बाद आपका दांया स्वर चलने लग जाएगा, इसी प्रकार बांया स्वर चलानेके लिए आपको दांई करवटसे लेटना होगा।

गर्भाशयमें बालकके पिण्डका निर्माण माता पिताके रजवीर्यसे मिलकर होता है, गर्भाशयके ऊपर एक रजकोष रहता है, जिस का सम्बन्ध (दांई-बांई) दो नाड़ियोंसे गर्भाशय के साथ बना होता है, रजको यदि दांई नाड़ी द्वारा गर्भमें आनेको मिलता है तो केवल नर अणु ही प्रवेश कर पाते हैं। यदि बांई नाड़ी

द्वारा आ पाता है तो रजके मादा अणु ही प्रवेश कर पाते है।

स्त्री शय्या पर भी पुरुषके बांई ओर होगी। जब वे सम्मुख होनेकी इच्छासे करवटें बदलेंगे तो पुरुष बांई करवटसे होगा और स्त्री दांई करवटसे होगी, पुरुषके बांई करवट से लेटे रहनेके कारण थोड़े समय बाद उसका दांया स्वर चलना आरम्भ हो जाएगा। जिसमें भोग करना उचित बताया गया है, भोगके पश्चात् वह पुनः पूर्वास्थितिमें लेटे हुए होंगे। स्त्रीके दांई करवटसे लेटे होनेके कारण रजकोष से रज दांई नाड़ीसे ही गर्भमें प्रवेश कर पायेगा। जिससे पुत्रके गर्भकी सम्भावना हो जाती है।

पुरुषके अण्डकोष भी दो होते हैं, उनका कार्य केवल वीर्य प्रदान करना है। दांया स्वर चलते रहने पर दांया कोष कार्यशील रहता है। जो कि नर अणु प्रदान करता है।

यहां इस सिद्धान्तका वर्णन अधिक विस्तारसे करना उचित न समझते हुए संक्षेपमें ही किया गया है, हमारा पूर्वकालीन युग विश्वास एवं आस्थाका था। महर्षियोंके कथन को जन साधारण ब्रह्मवाक्य ही मानते थे, किन्तु आज विज्ञानका युग है, जहां प्रत्येक विषय पर तर्क किया जाता है, तर्कके द्वारा जिस विषयका प्रतिपादन हो जाय वही सत्य है, शेष सब मिथ्या माना जाता है, आधुनिक युगमें ज्योतिष-विज्ञान पर भी आक्षेप होते रहते हैं, यद्यपि वे सभी निर्मूल हैं, किन्तु जन-साधारणको इसकी जानकारी न होनेसे भ्रम हो जाता है।

शास्त्रोंमें काल-मृत्युका प्रतीकार भी है

[लेखक :— श्री पं० कालीचरण शर्मा]

शास्त्रोंमें काल मृत्यु अकाल मृत्युका वर्णन है। सप्तशती पाठके आरंभमें 'देवीकवच' का पाठ होता है, उसमें आता है "जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः" देवी कवचका श्रद्धा भक्तियुक्त पाठ करने वाला अपमृत्यु अग्नि जल बिजली आदिसे रहित होकर शताधिक वर्ष तक जीवित रहता है, इससे स्पष्ट है अपमृत्युका प्रतीकार किया जा सकता है। कालज्ञानियोंने लिखा है—

तीर्थस्नानेन दानेन तपसा सुकृतेन च।
जपैर्ध्यानै योगेन जायते कालवंचना ॥

देवनिर्मित तीर्थों पर स्नान दान करनेसे, तप और सुकृत कर्म करनेसे, जप-ध्यान करने, योग साधन करनेसे काल वंचना की जा सकती है। चरकाचार्य कहते हैं—

"मरणं चापि तन्नास्ति यन्न रिष्ट पुरस्सरम्" रिष्ट योग आये बिना मृत्यु हो नहीं सकती। रिष्ट दो प्रकारका नियत और दूसरा अनियत। कालमृत्युसूचक नियत और गणितागत आयुकी समाप्ति आमरणकाल मृत्यु है वहां पर प्रतीकार निष्फल सिद्ध होता है। कितनेक आचार्योंने तो कालमृत्युकी भी वञ्चना लिखी है "रसायनं तथा द्रव्य योगयुक्तैर्महात्मभिः। कालमृत्युरपि प्राज्ञैर्जीयते नालसैर्नरैः ॥" रसायन द्रव्योंके सेवन से मंत्र सिद्ध विद्वान् और योगसाधन सम्पन्न महात्मा लोग कालमृत्यु पर विजयी होते हैं। केवल आलसी पुरुष ही कालके मुखमें जाते हैं, सुश्रुताचार्य कहते हैं।

ध्रुवं त्वरिष्टमरणं ब्राह्मणैर्किलामलम्।
रसायनं तपोजप्य तत्परैर्वा निवार्यते ॥

अकालमृत्यु सूचक रिष्ट अनियत है। क्रूर ग्रह दशान्तर्दशादि मरण कालमृत्यु है—वह मृत्यु जप तपमें तत्पर सिद्ध मंत्रज्ञ महापुरुष ब्राह्मण ही ऐसी मृत्युसे बचानेमें सफल हो सकते हैं, सामान्य श्रेणीके जप करने वाले जापू (जपके व्यापारी) बन्धुओंके सामर्थ्यके बाहरकी बात है। गत वर्ष दीपमालिकोत्सवके दिनोंमें सनावदके धनी मानी स्व० सेठ चांदमलजीके पुत्र रामनिवासजी माहेश्वरी अचानक बिमार हो गये। बिमारी भयंकर थी, स्वास्थ्य लाभकी दृष्टिकोणसे प्रश्न पूछने उनका बालक आया। प्रश्नकुण्डलीमें मृत्युयोग बना जिनका वर्णन वराह मिहिराचार्यने किया है। हमको आचार्य के सभी योगोंके प्रबल और मिलनेका अनेक बार का अनुभव है। हमने स्पष्ट कह दिया, यद्यपि आयु छोटी है, परन्तु रोग जटिल है, इससे मुक्ति पाना सर्वथा असंभव है। यहांके स्थानीय पौराणिक पंडितजी आये (नाम लिखना ठीक नहीं। और सायंकाल शुभ चौघड़िया देखकर सवा लक्ष जपका संकल्प कराकर घर गये। सूर्योदय भी न होने पाया रोगी व्यक्ति संसारसे सदाके लिए चल बसा। भगवान्से प्रार्थना है ऐसे जापूजनोंको सद्बुद्धि दे। ऐसे अन्धश्रद्धालुओंको भी सद्बुद्धि दे। इति शुभम्।



उपासना और भक्ति

[लेखक :—श्री वसन्ती लाल पालीवाल बी.ए. भुवनेश्वरी—सेवक]

प्राचीनकालसे ही भक्तिको उपासनाका पर्याय समझा गया है। किन्तु वस्तुतः इन दोनों में भूमि व आकाशका अन्तर है। एक साधन है तो दूसरा साध्य।

दोनोंका अन्तर समझनेसे पूर्व इनकी परिभाषाएं जानना आवश्यक होगा।

उपासना :—उपासकके द्वारा उपास्यकी प्रसन्नताके लिये जो क्रियाएँ की जाती हैं वह उपासना कहलाती हैं।

भक्ति :—यहां हम 'भगति' शब्दकी परिभाषा करेंगे, क्योंकि पुरातन समयसे ही संत कवियों द्वारा 'भगति' शब्दका प्रयोग भक्तिके लिये किया गया है। भ=भव, गति=मुक्ति या छुटकारा।

अर्थात् भवसे गति (मुक्ति) को भगति या भक्ति कहते हैं।

इस अर्थके प्रमाणस्वरूप यहाँ एक सुन्दर दृष्टांत दिया जाता है।

एक उपासक, उपास्यको प्राप्त करने पर कहता है, "मेरे उपास्य! मुझे आपकी अनन्त भक्ति प्राप्त हो, इसके अतिरिक्त मुझे और कुछ भी नहीं चाहिये।"

यहाँ "आपकी अनन्त भक्ति प्राप्त हो।" का अर्थ समझना है।

आपकी=भवसे गति अर्थात् भगति उपास्य के द्वारा ही दी जाती है, अतः यह उपास्यकी निजी सम्पत्ति हुई, जिसे वे चाहे जिसे प्रदान करनेमें स्वतंत्र हैं। इसलिये भक्तिको 'आपकी' (उपास्यकी) कहा गया है। अब पूरा अर्थ स्पष्ट हो गया :—

"हे उपास्य! मुझे आपके द्वारा प्रदान की जाने वाली, कभी अन्त न होने वाली भगति (संसारसे मुक्ति) प्राप्त हो।"

जब तक भगति प्राप्त नहीं होती तब तक उपासक, 'उपासक' ही कहलाता है, भक्त नहीं। उसके भक्त बनते ही देव-दुर्लभ भक्ति प्राप्त हो जाती है।

अब उपासक और भक्तकी परिभाषाएं समझना बहुत आवश्यक है।

उपासक :—उपासना करने वाला।

भक्त :—यहां 'भक्त' का अर्थ 'भगत' से किया जायगा, क्योंकि प्राचीन समयसे संत कवियोंने 'भगत' शब्दका प्रयोग 'भक्त' के लिये किया है। अतः उसीका अर्थ अधिक तर्क-संगत होगा।

भ=भव

गत=पीछे छोड़ा हुआ।

भ+गत=जिसने भवको पीछे छोड़ दिया है, अर्थात् जिसके मनको संसारसे वैराग्य हो गया है, वह भगत है।

उपासकका मन जब तक संसारसे वैराग्य लेकर उपास्यमें स्थित नहीं हो जाता, तब तक वह 'उपासक' ही कहलावेगा 'भक्त' नहीं।

उपास्यमें मनके स्थिर हो जाने पर उपासक 'भक्त' भी कहलाता है।

इस प्रकार उपासक भक्त बनकर उपासना करता हुआ भक्तिको प्राप्त करता है। उपासना भक्ति नहीं है।

उपासना साधन है तो भक्ति साध्य।

न तो भक्ति उपासना है और न उपासना ही भक्ति, जैसा लोग समझते आये हैं।

एक आत्मकथ्य: (उतरार्द्ध)

आत्मा ऐश्वर्य प्रभावका प्रतीक ग्रह सूर्य (२)

[लेखक :—श्री बालकृष्ण इन्दोरिया]

इन पंक्तियोंका लेखक महर्षि कल्याणेश्वरकी 'सारावली' के अनुशीलन अध्ययनमें व्यस्त था। गायत्री महामंत्रके अनेकों पुरश्चरण पूरे करने पर भी सूर्यके विभिन्न फलित तथ्योंकी उलझनोंमें मैं उलझा हुआ था। परस्पर विरोधी तथ्य मुझे किंकर्तव्य विमूढ़की स्थितिमें उद्विग्न कर रहे थे। न जाने कब मैं निद्रादेवीके अंकमें समाहित हो गया। मैंने एकाएक देखा कि प्रकाशपुञ्जमें देवाकृति सुस्पष्ट होतीं जा रही है। कुछ ही क्षणोंके बाद सूर्यदेव स्वयं उपस्थित होकर प्रसन्न मुद्रामें आशीर्वाद दे रहे हैं। सूर्यदेव बोले—'बालक! तू क्यों ऐसे अथक श्रममें लगा है? कल्याणेश्वरसे क्या चाहता है?' मैंने विनीत होकर निवेदन किया—'देव! मैं आपका दास हूं। आपकी स्थिति अनुसार फलाफलोंकी जानकारी हेतु लगा हूँ। महर्षि कल्याणेश्वरके माध्यमसे आपकी आत्मकथासे अवगत होकर आपके दिव्यस्वरूपकी जानकारीसे अभिज्ञ हो चुका हूँ। इस दास पर वैसी ही अनुकम्पा करें तो उपकृत रहूंगा।' सूर्यदेव बोले—'भद्र! मैं तुम पर प्रसन्न हूँ अत: तुम्हारी कामनानुसार मैं अपनी आत्मकथाका फलाचार अध्याय संक्षिप्त रूपमें सुनाता हूं·········

'ध्यान रखें कि मैं अपने फलोंका जो विवरण दूंगा वे मेरे स्वतंत्र फल हैं। मैं अन्य ग्रहोंके सम्पर्क, दृष्टि, संगतिसे इन्हीं फल तथ्योंको न्यूनाधिक रूपमें परिवर्तित भी किया करता हूँ। निरन्तर प्रायोगिक अध्ययन मननसे तुम्हें सत्य-द्रष्टाका गुण प्राप्त होगा, इस पर सदैव दृढ़ विश्वास रखते हुए पूर्ण आश्वस्त रहना है।'

प्रथम भावमें स्थिति

'मैं इस केन्द्रभावमें स्थित होकर स्वभावमें उग्रता देता हूँ। लग्नमें स्थित होकर मैं सुखी, निर्दय, शीलवान्, नट, चक्षुरोगी, बहु-स्त्री-प्रिय, ज्ञानके आचरणमें मग्न, रातमें कम दीखने वाला, अल्प संततिवान् बनाता हूं। पुरुष राशिमें मेरी स्थिति रोगकी प्रतीक होती है और ऐसे जातक स्थायित्व नहीं पाते। स्त्रीराशिमें मैं शुभफल देता हूं और पुरुष राशिमें अल्प-सुखका दाता होता हूँ। मैं तनु भावमें धनु: का होने पर जातकको विद्वान्, कानून प्रवीण बेरिस्टर आदि बनाता हूं। मेरी स्थिति कर्कमें होनेसे धनी, स्त्री सुखी और प्रभावशाली होनेमें सहायक होती है। मैं बालगंगाधर तिलकके कर्क लग्नमें बादशाह नीरोके धनु:लग्नमें, महारानी विक्टोरियाके वृष लग्नमें, स्वामी विवेकानन्दके मकर लग्नमें, रामकृष्ण परमहंसके कुंभ लग्नमें मेरी स्थिति थी।'

द्वितीय भावमें स्थिति

'मैं धनभावमें स्थित होकर त्यागी, वाग्मी, इष्टशत्रु, कंजूस, कुरूप, रोगी, बुद्धिहीन बनाकर सम्पत्तिका क्षय कराता हूं। मैं दैव-योगसे धन देता हूं और कर्कशवाणीयुक्त बनाकर पैतृक सम्पत्तिहीन बनाता हूं। मेरे ऐसे सभी

जातक ज्योतिषी के रूपमें प्रसिद्धि पाते हैं, जो साधारण बुद्धि वाले अल्पज्ञ होकर भी विज्ञान प्रेमी व कलाकार होते हैं। इस भावमें मैं स्त्री राशि, जलराशिमें होने पर शुभफल देता हूँ। किन्तु वृद्धावस्था तकमें उष्णताका रोगी बनाये रखता हूं। अशुभ होने पर मैं अति दरिद्री बना कर स्थिरतासे वंचित करता हूं। अन्तक लिये तड़पन देकर सर्वदा पराश्रयी बनाना मेरा क्रूर काम है। मैं अरविंद घोषके कर्क लग्नकी सिंह में, रवीन्द्रनाथ टैगोरके मीन लग्नकी मेषमें, महारानी झांसी श्रीलक्ष्मीबाई, सम्राट अकबर, हैदरअलीके तुला लग्नकी वृश्चिक राशिमें स्थित था।'

तृतीय भावमें स्थिति :

'मैं पराक्रम भावमें स्थित होकर दुर्बल विचारों वाला, आलसी, बातूनी, उपद्रवकारी, भ्रातृहन्ता बनाता हूं। मिथुन तथा धनु की स्थितिमें लेखक, वकील, प्रकाशक, प्रोफेसर बनाता हूं। मेरे प्रभावसे जातक धनी होकर मुक्तहस्तदानी बनता है। पराक्रम पर प्रभावी होकर मैं क्या फल नहीं देता ? मैं महाराणा प्रतापके मकर लग्नकी मीनमें, कार्लमार्क्सके कुंभ लग्नकी मेषमें, राष्ट्रपति नासिरके वृश्चिक लग्नकी मकरमें, ईशामसीह, स्टालिनके तुला लग्नकी धनुमें स्थित था।'

चतुर्थ भावमें स्थिति :

'मेरी केन्द्र भावमें स्थिति साधारणतः शुभकारक फल नहीं देती है, क्योंकि मैं सुखक्षय करता हूं। मैं ऐसे जातकको चौदहवें वर्ष कलह पैदा कराके क्लेश फल देता हूँ। इस भावमें मेरी स्थिति मातापिताके सुखमें बाधक होती है और मैं पागल, मंदबुद्धि, संशयी बना देता हूं। मैं एक बार घर उजाड़ देता हूँ, किन्तु मध्यायुमें सुखी बनाता हूं और उत्तरायुमें पुनः दुःखी बनाता हूँ। मेरे ऐसे जातक अल्पसंततिवान् होते हैं, जो नौकरी करके सुखी हो सकता है। मैं भगवान् महावीरके मकर लग्नकी मेषमें, पोपपायसके वृश्चिक लग्नकी कुंभमें, सरदार पटेलके कर्क लग्नकी तुलामें, गुरु नानकदेवके सिंह लग्नकी वृश्चिकमें, दीनदयाल उपाध्यायके मिथुन लग्न की कन्यामें स्थित था।'

पंचम भावमें स्थिति :

'मैं त्रिकोणमें होकर प्रभाव वृद्धि कारक फल देता हूं और चंचल, अधिकारियोंको प्रिय, प्रवासी, विलासी, नास्तिक बनाता हूं। पुरुष राशिमें होने पर अल्पसंतति, किन्तु स्त्रीराशिमें होने पर बहुसंतति देता हूँ। पंचम भावमें मेष सिंह धनुमें मेरी स्थिति शिक्षामें कारक फल दाता होती है अतः शिक्षण पूरा कराता हूँ। यदि मैं मेषमें होता हूं तो संतति भय, सिंहमें अत्यल्प संततिका फल देता हूं। कठोर साधनसे संतति सुख देकर विद्याप्रेमी बनाता हूं। मैं जवाहरलाल नेहरू, इन्दिरा गांधीके कर्क लग्न की वृश्चिकमें, सिकन्दर महान्के मेष लग्नकी सिंहमें, मार्शल बुलगानिनके मकर लग्नकी वृष में, लतामंगेशकरके वृष लग्नकी कन्या राशिमें स्थित था, अतः त्रिकोणभाव फलदाता था।'

षष्ठ भावमें स्थिति :

'मैं अरिभावमें स्थित होकर योगाभ्यासी बनाकर कल्याणदाता होता हूँ। मेरे ऐसे जातक बलवान्, श्रीमान्, शत्रुजयी, सुखी और सम्पन्न होते हैं। मैं हृदयरोग, यकृतरोग देकर कष्ट-दाता बनाता हूं। इस भावमें भी मैं पुरुष राशि में कठोरफल, किन्तु स्त्रीराशिमें शुभफलदाता

होता हूं। मैं नवाब हैदराबादके तुला लग्नकी मीनमें, जार्जपंचमके पुत्रके मकर लग्नकी मिथुन में, वीर सावरकरके धनुर्लग्नकी वृषभमें, रूज-वेल्टके सिंह लग्नकी मकरमें, लेनिनके वृश्चिक लग्नकी मेषमें स्थित था।'

सप्तम भावमें स्थिति :

'मैं केन्द्रभावमें सदैव अशुभ फलदाता होता हूँ और क्रोधी, दुष्ट, स्त्रीद्वेषी, कामासक्त, दुर्बल और चिन्ताग्रस्त बनानेका कारण होता हूं। यदि मैं मेष सिंह धनु:में होता हूं तो एका-धिक विवाह कराता हूँ। मिथुल तुला कुंभमें होकर मैं शिक्षक, पोस्टमैन, कानून विशेषज्ञ बनाता हूँ। मैं पुरुषराशिमें होकर अल्प संतति किन्तु स्त्रीराशिमें होनेपर शुभफलदाता होता हूँ। मैं जगदीशचन्द्र बसुके वृष लग्नकी वृश्चिक में, शिवाजी, विल्सनके सिंह लग्नकी कुंभमें, हिटलर, ख्रुश्चेवके तुला लग्नकी मेषमें स्थित था।'

अष्टम भावमें स्थिति :

'मैं अष्टम भावमें स्थित होकर पति-पत्नी को अपव्ययी बनाता हूँ और आकस्मिक मृत्यु का कारक होता हूँ। मेरे कारणसे जातक परदेशमें भटक कर दुःखी होता है। मिथुन कर्क धनुः मीन (जलराशि) में होकर सावधान मृत्यु देता हूँ। मेष सिंहमें होने पर झटकेसे आकस्मिक मृत्यु देता हूँ। अन्य राशिकी स्थिति में बीमारीके बाद ही मृत्युको संभव बनाता हूं। यदि मैं अष्टमभावमें पुरुष राशिमें होता हूँ तो स्त्रीके माध्यमसे पदोन्नति दिलाता हूं। किन्तु स्त्री राशिमें होकर पुत्रोंके माध्यमसे सुखी बनाता हूँ। मेरी अष्टमभावकी स्थिति अशुभ फल कारक होती है। मैं मदनमोहन मालवीय के कर्क लग्नकी कुंभमें, राष्ट्रपति आइजनहोवर के मीन लग्नकी तुलामें, डा० जाकिरहुसैनके मिथुन लग्नकी कर्कमें स्थित था।'

नवम भावमें स्थिति :

'मैं त्रिकोणभावमें होकर शुभफलकारक होता हूँ अतः भाग्य भावमें स्थित होकर मैं देवभक्त, सुखी, प्रसिद्ध, न्यायप्रेमी, ईश्वरभक्त, स्थिर सम्माननीय बनाता हूँ। मैं इस भावमें मिथुन तुला कुंभमें होने पर छोटा भाई नहीं रहने देता, यदि छोटे भाई हों तो मैं उनमें पारस्परिक स्थाई विरोध कराता हूँ। धर्मके प्रति उदासीन बनाकर सामान्य जीवनका भोगी बनाता हूं। मिथुन तुला कुंभका होने पर मैं प्रोफेसर, लेखक, प्रकाशक बना देता हूँ। कर्क मीन वृश्चिकमें होकर रसायनशास्त्री, संशोधक, कवि, नाटककार, राज्यसेवी बनाता हूँ। वृष कन्या मकरमें होने पर कृषि व व्यापारके क्षेत्र में, मेष सिंह कुंभमें सेनामें सेवक, इंजिनियर बनाकर प्रसिद्धि देता हूं। मैं डा० सम्पूर्णानन्द के मेष लग्नके धनुमें, औरंगजेब, च्यांगकाईशेक के कुम्भ लग्नकी तुलामें, मुसोलिनीके वृश्चिक लग्नकी कर्कमें, जार्ज वेलसके मकर लग्नकी कन्यामें स्थित था।'

दशम भावमें स्थिति :

'मैं केन्द्रभावमें अशुभफलोंका दाता होता हूँ, किन्तु दशम भावमें मेरी स्थिति कारकत्व रखती है, अतः मैं जातकको विद्यासम्पन्न, कीर्तिमान्, ऐश्वर्यशील एवं पितृधनका उप-भोक्ता बनाता हूँ। मैं मेष कर्क सिंह वृश्चिक राशियोंमें दशमभावमें होकर पुलिस, सेना,

रेवेन्यू अधिकारी, गुप्तचर और संवादवाहक बनाता हूं। वृष कन्या मकर मीन मिथुनमें होकर मैं राष्ट्रपति, राज्यपाल, संसदपति, मंत्री, व्यापारी, उद्योगपति बनाता हूँ। मैं तुलामें होकर बेरिस्टर, कानूनज्ञ, जज आदि बनाया करता हूँ। वृश्चिकमें होकर डाक्टर, वैद्य, कम्पाउंडर, चिकित्सा अधिकारी बनाता हूं। ऐसे जातकोंको मैं आयुके उत्तरार्द्ध भागमें पत्नीसुखका क्षय करता हूं। मैं सुभाषचन्द्रबोस के मेष लग्नकी मकरमें, रामकृष्ण डालमियाके मिथुन लग्नकी मीनमें, रामानुजाचार्य, शंकराचार्य, गौत्तम बुद्धके कर्क लग्नकी मेषमें स्थित था।

ग्यारहवें भावमें स्थिति :

'मैं लाभ भावमें स्थित होकर स्थिर, विश्वास योग्य, धनवान्, सुन्दर स्त्रीका पति, सुखी, नौकरयुक्त, अच्छी इमारतका स्वामी बनाकर जीवनमें प्रतिष्ठा और सफलता देता हूं। मेरी लाभ स्थितिसे जातकको सम्पत्तिसुख व सन्ततिसुख दोनोंमें एकको सरल प्राप्ति होती है। यदि अन्य ग्रह अनुकूल न हो तो एक सुख देकर दूसरेकी चिंता देता हूं। पिता को अपव्ययी बनाकर खर्चीला बना देता हूं। मैं इस भाव पर होनेसे चौथी सन्तानको अनिष्टकारी फल देता हूं। मेष सिहमें होने पर संतति का अभाव, किन्तु सम्पत्तिकी प्रचुरता देता हूँ। मिथुनमें लाभभावी होकर तीन पुत्रोंकी मृत्यु कराता हूँ। तुलामें होकर धनसुख देते हुए कानूनज्ञ नेता बनाकर सुखी करता हूँ। किन्तु कुंभमें होकर दरिद्रता और कष्टप्रद फलोंका दाता हो जाता हूँ। मैं गोस्वामी तुलसीदासके तुला लग्नकी सिहमें, लालबहादुर शास्त्रीके वृश्चिक लग्नकी कन्यामें, मोरारजी देसाईकी मिथुन लग्नकी मेषमें, मिस्टर जिन्नाहके कुंभ लग्नके धनुःमें, टीपू सुल्तानके धनुर्लग्नकी वृश्चिक राशिमें लाभ भावमें स्थित था।'

बारहवें भावमें स्थिति :

'मैं व्ययभावमें स्थित होकर सफलता देता हूं, किन्तु दूषित होने पर मैं कारावास दिलाता हूं। साधारण रूपमें व्यय भावमें मेरे फल अशुभ होते हैं। मैं कर्क मीन वृश्चिकमें होकर खर्चीला, युद्धमें पराक्रमी, राजनैतिक कारावासी बनाता हूं। वृष कन्या मकरमें होकर ध्येयवादी, शांत, स्वतंत्र, धनी बनाता हूँ। मैं मेष सिह धनुःमें कंजूस, दंभी बनाता हूँ। मिथुन तुलामें अपव्ययी, कीर्तिवान् बना देता हूं। मैं महात्मा गांधीके तुला लग्नकी कन्यामें, डा० राजेन्द्रप्रसादके धनुर्लग्नकी वृश्चिकमें, पृथ्वीराज चौहानके मेष लग्नकी मीनमें, माओत्सेतुंगके मकर लग्नकी धनुःमें, नाथूराम गोडसेके मिथुन लग्नकी वृष राशिमें व्यय भावमें स्थित था।'

इतना कहते हुए सूर्यदेव अन्तर्धान हो गये। मैं अपनी चकाचौंध दृष्टिसे पूर्वदृष्टिपथ पर अपलक देखता रह गया। मैंने पाया कि सूर्यदेव लगभग दो हाथ ऊपर चढ़ चुके हैं और मैं धूपकी उष्णतामें उष्माप्लावित हूँ। मेरे लिये अब महर्षि कल्याणेश्वरका 'सारावली' ग्रंथ कठिन न था।

पता—किलेके पीछे, चूरू (राजस्थान)

ज्योतिषका समाज पर प्रभाव

[लेखक :—डा० नारायण दत्त श्रीमाली]

ज्योतिष अपने आप में पूर्ण एवं पुरातन विषय है, पर अपने आपमें तिरष्कृत भी। पुरातन इसलिये कि इसके चिह्न ईसाके पच्चीस हजार वर्ष पूर्व सुमेर सभ्यताके अन्तर्गत प्राप्त हड्डियों पर मिले हैं, सुमेर सभ्यताकी खोजमें जो हड्डियां मिली हैं, उन पर सूर्य चन्द्र, नक्षत्र-पथ आदिके चिन्ह स्पष्ट हैं।

ज्योतिषकी सर्वाधिक मान्यता भारतवर्षमें है और ज्योतिषके कारण ही 'गणित' का जन्म हुआ। ज्योतिष गणनाके लिये ही गणितकी आवश्यकता हुई और उसका प्रादुर्भाव हुआ। एकसे नौ तथा शून्यका अंक भारतवासियोंके मस्तिष्ककी ही उपज है और यहींसे यह ज्ञान पूरे विश्वमें फैला। अंग्रेजीका 'नाइन' संस्कृत के नौ का ही रूपान्तर है. इसी प्रकार अंग्रेजी के 'एट' का मूल संस्कृतका अष्ट है।

ईसासे हजार वर्ष पहले सुमेर सभ्यता में यह धारणा थी कि पृथ्वी पर फैलने वाले रोग और महामारियोंका सीधा संबंध नक्षत्रों से है। सूर्य केवल आगका गोला ही नहीं है, निरन्तर इसमें घर्षण विकर्षणसे ही पृथ्वी पर उत्थान पतन होते हैं। १६२०-२१ में रूसके प्रसिद्ध वैज्ञानिक 'चीजैवस्की' ने पुष्ट प्रमाणों के आधार पर सिद्ध किया कि हर ग्यारह वर्षोंमें एक निश्चित समय पर सूर्य पर विस्फोट होता है। इस विस्फोटके फलस्वरूप पृथ्वी पर महामारियां, रोग, क्रांतियां युद्ध आदि होते हैं। उसने इसके प्रमाणमें पिछले पांच हजार वर्षोंका इतिहास दिया और सिद्ध किया कि हर ग्यारहवें वर्ष विस्फोटके समय पृथ्वी पर क्रान्तियां या युद्ध आदि होते रहे हैं, और होते रहेंगे। उसकी यह अद्‌भुत खोज मार्क्सकी धारणासे विपरीत पड़ती थी, फलस्वरूप स्टालिनने उसे सायबेरियाकी जेलमें डाल दिया, उसके कीमती पचपन वर्ष साइबेरियाकी जेलमें बीते। स्टैलिन की मृत्युके बाद ही ख्रुश्चैवके प्रयत्नोंसे वह स्वतत्र हो सका, पर स्वतंत्र होनेके बाद भी वह इस शोधमें रत रहा। और अपनी धारणा पुष्ट प्रमाणोंकी भित्ती पर दृढ़ कर रूसको मानने के लिये बाध्य कर गया।

इस पृथ्वीका सीधा संबन्ध सूर्यसे है. प्रति-पल सूरजकी तरंगोंमें रूपान्तर होते रहते हैं, और हल्केसे हल्का रूपान्तर भी पृथ्वीको कम्पित करनेकी शक्ति रखता है, और जब यह रूपान्तर पृथ्वीको कम्पित कर सकता है, तो फिर उस पर रहने वाला व्यक्ति कैसे अछूता रह सकता है। सूर्य-ग्रहणके समय पैड़ों की पत्तियोंका मुरझा जाना, जंगली जानवरों का भयभीत होकर इधर-उधर भागना, पक्षियों का शान्त हो जाना क्या इसका प्रमाण नहीं है?

यद्यपि ज्योतिष सर्वाधिक तिरष्कृत है तो सर्वाधिक मान्य भी। पिछली गणनाके अनुसार फ्रान्समें ४७ प्रतिशत लोग ज्योतिषमें आस्था रखते हैं, अमेरिकामें ६२ प्रतिशत, इंग्लैंडमें ५३ प्रतिशत, तथा भारतमें ७६ प्रतिशत लोग ज्योतिषमें आस्था और विश्वास

रखते हैं। विश्वास है कि पूरे विश्वमें ८० प्रतिशत लोग ज्योतिषमें पूर्ण विश्वास रखते हैं। अमेरिकामें १२ हजार ऐसे ज्योतिषी हैं, जो दिन रात काममें लगे रहते हैं, फिर भी वे अपने ग्राहकोंको पूरा नहीं निपटा सकते हैं। इस ज्योतिषमें विश्वास रखने वालोंमें प्रसिद्ध दर्शनिक विचारक विद्वान् एवं बुद्धी जीवी वर्ग है। प्रसिद्ध विद्वान् सी० जे० जुग. ने स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि पिछले तीन सौ साढ़े तीन सौ वर्षोंसे ज्योतिषके लिये विश्व-विद्यालयोंके द्वार बन्द हैं, पर आने वाले तीस वर्षोंमें ज्योतिष बल पूर्वक विश्वविद्यालयोंमें प्रवेश कर अपना महत्वपूर्ण स्थान बना सकेगा।

मुझे विदेशी विद्वानों, विचारकों एवं बुद्धी जीवियोंसे निरन्तर मिलते रहनेका मौका मिला है, उनमें ज्योतिषके प्रति ललक है, उसे सीखनेके प्रति रुझान है, उनकी नजर ज्योतिषके आदि स्थान भारत पर ही टिकती है और उन्हें विश्वास है, कि ज्योतिषमें जो कुछ नवीन मौलिक और महत्वपूर्ण प्राप्त हो सकेगा, वह भारतसे ही प्राप्त हो सकेगा, पर हम (और हमारी सरकार) अपने हृदय टटोल कर देखें, कि क्या इस संबंधमें कुछ कर रहे हैं ? कुछ समय पहले एक प्रसिद्ध देशके शीर्षस्थ नेतासे मिलनेके दौरान ज्योतिष चर्चामें उन्होंने जिज्ञासा पूर्ण दृष्टिसे पूछा था "क्या भारतमें सरकारी या गैर सरकारी स्तर पर कोई ऐसा संस्थान है, जहां मौलिक कार्य हो रहा हो, और जहां मेरे देशके नवयुवक वहीं रहकर कुछ सीख सकें।" तो प्रत्युत्तरमें मुझे दुखी मनसे चुप ही रह जाना पड़ा, अस्तु।

मानव समाजकी ईकाई है, बिना मानवके समाजका अस्तित्व संभव नहीं है, अतः समाज को समझनेसे पूर्व मानवको समझ लेना जरूरी है। समाज पर ज्योतिषके प्रभावको आंकनेके पूर्व मानव पर ज्योतिषके प्रभावको आंकना जरूरी है।

आजसे कई हजार वर्ष पहले यूनानके विचारक पाइथागोरसने ग्रहीय अन्तः संगीतके सिद्धान्तको जन्म दिया था, जिसकी मान्यता ज्योतिष जगत्में आज भी अकाट्य है। 'पाइथोगौरस' ने अपने बहुमूल्य सिद्धान्तमें बताया था, कि प्रत्येक ग्रह और नक्षत्र गतिशील है, और जब वे अंतरिक्षमें यात्रा करते हैं, तब एक विशेष प्रकारकी ध्वनी पैदा होती है. प्रत्येक नक्षत्रकी अपनी एक मौलिक एवं विशिष्ट ध्वनी है, इन सारे नक्षत्रसे निसृत ध्वनियोंका तालबद्ध संगीत है, जिसे 'पाइथौगोरस' ने ग्रहीय अन्तःसंगीतका नाम दिया था।

जिस समय मानव जन्म लेता है, उस क्षण-विशेषमें नक्षत्रोंकी जो विशिष्ट ध्वनी होती है, उसका अमिट प्रभाव बालकके संवेदनाशील हृदय पर अमिट हो जाता है, इसके फलस्वरूप बालक स्वस्थ एवं प्रसन्न रहता है। जब जब भी वह व्यक्ति उस मौलिक संगीतसे तालमेल बनाये रखता है, वह स्वस्थ रहता है, पर जब भी उसका तालमेल उसके विशिष्टि मूल संगीत से टूट जाता है तब वह अस्वस्थ हो जाता है। परेशान और दुखी रहता है, तथा पूर्णतः टूट जाने पर मृत्यु हो जाती है।

इस क्षेत्रमें 'पाइथोगोरस' ने महत्वपूर्ण कार्य किया है, वह तब तक मरीजको दवा नहीं देता था, जब तक कि उसकी जन्मकुण्डली नहीं देख लेता था। उसने जन्मकुण्डली देखकर

जो भी निदान किया, वह अचूक रहा। असाध्य से असाध्य रोगोंसे पीड़ित रोगियोंको भी उसने इसी संगीत सिद्धान्तके आधार पर पूर्णतः स्वस्थ कर दिया।

जहां तक मैं समझ पाया हूँ ज्योतिष पूर्व कालमें किसी अति विकसित सभ्यताका अति विकसित विज्ञान है, पर उस सभ्यताके नष्ट हो जाने पर इसके थोड़े बहुत सूत्र और अधूरे सूत्र ही हमारे हाथ लग सके, बाकी यह अति विकसित विज्ञान उस सभ्यताके साथ ही नष्ट हो गया। ज्योतिष कोई नया विज्ञान नहीं है, यह उन सभी विषयोंसे प्राचीन महत्वपूर्ण एवं मौलिक विज्ञान है, जो आज दिखाई देते हैं, यह अपने आपमें पूर्ण विज्ञान था, पर जिस सभ्यतामें यह पूर्णताको पहुँचा था, उसके समाप्त हो जाने पर यह विज्ञान भी खो गया और आज जो भी ज्योतिष दिखाई दे रहा है, यह उस खोये हुए ज्योतिष विज्ञानके कुछ मौलिक महत्वपूर्ण सूत्र मात्र है।

ज्योतिषका आधार मानव है, ज्योतिषकी अध्ययन सामग्री मानव है, और जन्मसे लेकर मृत्यु तक वह नक्षत्रों ग्रहों द्वारा संचालित है। पर ध्यानमें रखनेकी बात यह है कि मानवका मूल उसका जन्म है, पर जन्म कौन सा? जन्मका वास्तविक अर्थ तो है गर्भ धारणा। ठीक जन्म तो वही माना जाता है, जिस क्षण मांके पेटमें गर्भ आरोपित होता है। माँके उदर से बाहिर निकलना तो उसका दूसरा जन्म है। अगर ज्योतिषके माध्यमसे मानवकी सही खोज करनी है, उसके एक-एक भावी क्षणको समझना है, तो उसके उस क्षणको पहिचानना होगा, जिस क्षण वह गर्भमें आरोपित हुआ था। उस क्षण-विशेषमें जब कि गर्भमें उसका आरोप हुआ था, ग्रहों और नक्षत्रोंका पारस्परिक क्या आकर्षण विकर्षण था, तथा उनका बालक पर क्या प्रभाव पड़ रहा था। स्पष्टतः खोये हुए सूत्रोंमेंसे जो महत्वपूर्ण सूत्र हाथ लगा है वह यह है कि जन्मकुण्डली स्थूल है। प्रमुख है गर्भ कुण्डली, गर्भ धारण करनेके समयके ग्रहों की स्थिति, उनका प्रभाव आदि।

निरन्तर प्रतिपल, समस्त ग्रहों और नक्षत्रोंकी रश्मियां पृथ्वीसे टकराती रहती है। और पृथ्वी पर कोई ऐसा पदार्थ नहीं है, जो उनसे अछूता रह जाय।

पृथ्वीसे सर्वाधिक निकट गह है चन्द्रमा, आजके अन्तरिक्ष विज्ञान वेत्ताओंने इसे सिद्ध कर दिया है। समुद्र पर इस चन्द्रमाका सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है, पर यह बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि समुद्रमें पानी और लवणका जो अनुपात है, वही अनुपात मानव रक्त है, ऐसी दशामें जब चन्द्रमाके आकर्षणसे समुद्र उद्वेलित आन्दोलित होता है, तो मानव क्यों नहीं हो सकता?

प्रोफेसर 'ब्राउन' ने पिछले बीस वर्षोंके आंकड़े प्रस्तुत करते हुए बतलाया कि पूर्णिमाके आसपास पूरे विश्वमें पागलपनकी संख्या बढ़ जाती है, पूर्णिमाके दिन सबसे अधिक पागलखानेमें प्रवेश करते हैं, और अमावस्याके दिन सबसे अधिक पागलखानेसे बाहिर निकलते हैं। अमेरिकाके अपराध शाखाके पुलिस अधिकारी ने तथ्यों द्वारा यह बतानेका प्रयास किया है कि पूर्णिमाके आस पास पूरे अमेरिकामें सबसे ज्यादा हत्याएं होती हैं, बैंक लूटे जाते हैं तथा निराश व्यक्ति आत्महत्याएं करते हैं। इसके

विपरीत अमावस्याके आसपास अपराधोंके अत्यन्त कम केस रजिस्टरमें दर्ज होते हैं।

रूसके विख्यात न्यायमूर्ति स्तीजेवेस्कीने अभी हाल ही में एक जगह बोलते हुए कहा था कि मनुष्य दो कारणोंसे अपराध करता है, एक तो परिस्थितियोंके वशीभूत होकर तथा दूसरे ग्रहों-नक्षत्रोंसे प्रभावित होकर। उन्होंने लम्बे अनुभव, निरीक्षण एवं शोधके पश्चात् स्पष्ट कहा था, कि जो व्यक्ति ग्रहों नक्षत्रोंसे प्रभावित होकर हत्या या अपराध कर बैठता है उसे सजा देना न्यायोचित नहीं। उनका यह कथन आजके घोर हठधर्मियोंके मुँह पर तमाचा है।

प्रोफेसर 'श्रैंग' ने काफी खोज बीनके बाद यह सिद्ध किया कि प्रत्येक व्यक्ति वही कार्य चुनता है—जो ग्रह उसे संकेत करते हैं। उसने विश्वके कई सेनाओंके जनरलसकी कुण्डलियां इकठ्ठी की और पाया कि उनमें एक बात समान है, और वह है मंगलका बलवान् होना। उनके जन्मके समय या तो मंगल उदय हो रहा होता है या उसके नक्षत्रसे स्पर्श करता सा होता है। इसी प्रकार उसने डाक्टरों वकीलों, तथा गणितज्ञोंकी कई हजार कुण्डलियां इकठ्ठी की और यह पाया कि एक व्यवसायके लोग एक विशेष ग्रहसे प्रभावित होते हैं, और यह देखकर ज्योतिषकी खिल्ली उड़ाने वाला प्रोफेसर श्रैंग उसका परम भक्त बन गया।

ज्योतिष मात्र ग्रहों नक्षत्रोंका अध्ययन ही नहीं है, उनका मानव पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका अध्ययन करना है। पर, यहां ठहरकर जरा सोचें कि क्या ग्रह नक्षत्रोंका प्रभाव ही मनुष्य पर पड़ता है, मनुष्यका प्रभाव ग्रह नक्षत्रों पर नहीं पड़ता ? पड़ता है, और अवश्य पड़ता है। आकर्षण एक पक्षीय नहीं, वह दोनों ही पक्षोंको छूता है, जब पृथ्वी पर बुद्ध, महावीर, गांधी जैसे देवदूत पैदा होते हैं, तो इनसे निसृत शान्तिकी किरणोंसे चांद भी प्रभावित होता है। सूर्य पर दिखाई देने वाले धब्बे फैलते हैं, ये धब्बे होते हैं शांतिके, विश्वास के, प्रेमके, आनंदके और आत्मीयताके, क्योंकि ग्रह नक्षत्रोंसे लेकर चींटी तक सब एक है, सब एक दूसरेसे प्रभावित होकर धड़कते हैं, समुद्रमें फेंकी जाने वाली कंकरीसे जो छोटी सी लहर निकलती है, वह हजारों मील दूर उसके दूसरे किनारेके जल कणको भी हिलोरें देती है। घासका एक तिनका भी सूर्यसे बिना प्रभावित हुए नहीं रहता। अतः यह स्पष्ट है कि हम सब एक जागतिक यूनिटोंमें बधे है, ग्रहों नक्षत्रोंसे समाज प्रभावित है, ज्योतिष इस प्रभावका सांगोपांग अध्ययन कर हमारे सामने भूत वर्तमान और भविष्यको उजागर कर देता है और यही इसकी श्रेष्ठता, अलौकिकता और अद्वितीयता है।

पता—सी./एफ. १४ हाईकोर्ट कालोनी
जोधपुर (राजस्थान)

ज्योतिष और स्वरज्ञान द्वारा मृत्युकालका ज्ञान

[लेखक :—श्री पं० बालीचरण शर्मा, शास्त्री]

पाठक वृन्द ! बहुत वर्ष पूर्व 'श्रीस्वाध्याय' में "मृत्युलांगूल स्तोत्र मंत्र" प्रकाशित हुआ था। यह वैदिक मंत्र है और वह यथार्थ सत्य सिद्ध है। अब हम ज्योतिष द्वारा एवं स्वर ज्ञानसे भी मृत्युकालका ज्ञान होता है उसका दिग्दर्शन करते हैं।

(१) मेष राशि वालोंको पूर्वा फा० में ज्वर चढ़े तो जीवै नहीं। इसी प्रकार (२) वृषभ राशि वालेको हस्त (३) मिथुन राशि वालेको स्वाती (४) कर्क राशि वालेको अनुराधा (५) सिंह राशि वालेको पूषा (६) कन्या राशि वालेको श्रवण (७) तुला राशि वालेको शततारका (८) वृश्चिक राशि वाले को रेवती (९) धनुः राशि वालेको भरणी (१०) मकर राशि वालेको रोहिणी (११) कुम्भ राशि वालेको आर्द्रा एवं (१२) मीन राशि वालेको आश्लेषा नक्षत्रमें ज्वर चढ़े तो मृत्यु होवे।

मृत्युकाल कहते समय देशकाल एवं तात्कालिक परिस्थिति पर भी विचार करना चाहिए। मृत्यु शब्दके अर्थके सम्बन्धमें कहा है—

भ्रमं दुःखं भयं लज्जा शोकमोहस्तथैव च ॥
मरणं चापमानं च मृत्युरष्टविधः स्मृतः ॥

भ्रम, दुःख, भय, लज्जा, शोक, मोह, मरण एवं अपमान मृत्यु तुल्य माने गये हैं। बलवत्तर मारकेशकी दशान्तर्दशा न हो तो उक्त घटनाओं मेंसे एक घटना घटकर संभव है बच जाएं।

एकादि षोडशाहान्तं यावद्भानु निरन्तरम्।
वहेद्यस्य मृतिस्तस्य शेषा ह्मिति मासके ॥१॥

एवं चन्द्र प्रवाहे तु सुखं लाभो जयो मतिः।
सूर्यचन्द्रप्रणाशे तु सद्यो मृत्युर्न संशयः ॥२॥

यदि १६ दिन तक निरन्तर सूर्य स्वर (दाहिना स्वर) चले तो १ मासमें मृत्यु होवे। इसी प्रकार १६ दिन तक चन्द्र (बायां) स्वर अहर्निश चले तो सुख-लाभ-जय और बुद्धिमें प्रकाश होवे।

कदाचित् सूर्य चन्द्र दोनों स्वर बंद रहें तो सद्यः मृत्यु हो जावे।

सूर्यश्चन्द्रायते यस्य, चन्द्रो वा भास्करायते।
द्वित्रिकं वाहिना तुल्यं षण्मासैस्तस्य मृत्युभीः ॥३॥

सूर्यके स्थान पर चन्द्र और चन्द्रके स्थान पर सूर्य २।३ दिन निरन्तर चलें तो ६ महीनों में मृत्यु भय हो।

इस सम्बन्धमें सन्त चरणदासजीका निर्णय इस प्रकार है—

तीन रात अरु तीन दिन, चले दाहिनी श्वास।
सम्वत भर काया रहे पीछे होय विनाश ॥

परन्तु मृत्यु निश्चित है।

राति चले स्वर चन्द्रमें दिनको सूरज बाल।
एक महीना यों चले छठे महीना काल ॥

"वर्षेण म्रियते स तु जीवितो स्वप्नदर्शनात् ॥"

सज्ञानावस्थामें स्वप्नदर्शन १ वर्षमें मृत्यु बतलाता है।

नासाग्रे भ्रूयुगं जिव्हां वाममुष्कं न पश्यति।
कर्णघोषं न विन्देद्यः षण्मासैः म्रियते तु सः ॥

नासिकाका अग्रभाग, भ्रूकुटी, जिव्हाका अग्रभाग, वाम भाग वाला अण्डकोष जिसको

न दीखे तथा कर्णघोष जिसको सुननेमें न आवे वह ६ मासमें मरता है।

जिह्वामूले भवेच्छूली रोमराजी न वृद्धिमान्।
मणिबन्ध वीक्षते स्थूलं स म्रियते वर्षार्द्धतः॥

जिह्वाके मूल भागमें शूल चुभना, रोमराजीका न बढ़ना, अपने हाथको माथे पर रख कर देखनेसे मणिबन्धका स्थूल दीखना ये लक्षण ६ मासमें मरण बतलाते हैं।

शिर पर हाथ रखकर देखनेसे मुट्ठि और हाथ पृथक्-पृथक् दीखें तो समझना चाहिए अबके बाद ६ मासकी आयु रह गई है।

लक्ष्यं लक्षित लक्षणेन सलिले भानुर्यदाहस्पते
क्षीणो दक्षिण पश्चिमोत्तरपुरः षट्त्रिद्विमासैकतः।
मध्यं छिद्रमिदं भवेद्दशदिनं धूमाकुलं तद्दिने
सर्वज्ञैरभिभाषितं मुनिवरैरायुः प्रमाणं स्फुटम्॥

किसी भी पात्रमें जल भरकर उसमें दिन में सूर्य रात्रिमें चन्द्र बिम्ब देखें। उस समय पूर्वमें छिद्र दीखे तो ६ मासमें, दक्षिणमें छिद्र दीखें तो ३ मासमें, पश्चिममें छिद्र दीखे तो २ मासमें, उत्तरमें छिद्र दीखे तो एक मासमें मृत्यु कालज्ञानियोंने कही है।

मध्यमें छिद्र दीखे तो १० दिनमें, धूमसे धुंधलापन दीखे तो उसी दिन मृत्यु होती है।

अरुन्धतीं ध्रुवं चैव विष्णोस्त्रीणिपदानि च।
आयुर्हीना न पश्यन्ति चतुर्थं मातृमण्डलम्॥
अरुन्धती भवेज्जिह्वा ध्रुवो नासाग्रमेव च।
भ्रुवौ विष्णुपदं ज्ञेयं तारकं मातृमण्डलम्॥

अरुन्धती (जिह्वाग्रभाग) ध्रुव (नासिका का अग्रभाग) विष्णुपद (भ्रुकुटी) मातृमण्डल (तारका पुञ्ज) जिसको न दीखें तो आयु समाप्त हो चुकी समझें।

पता—सनावद (मध्य प्रदेश)

नकली संतान : वर्णसंकर : योग

[लेखक :— कैलाश नारायण दवे 'ज्योतिष प्रेमी']

[जारजयोग पर बृहज्जातकादि ग्रन्थोंमें सूत्र रूपमें सामग्री दी है—उसीका लेखकने विस्तार किया है। ५वें योगसे आगे जितने योग नीचे लिखे हैं वे पूर्ण जारज योग नहीं हैं। गर्भाधानके बाद महिलाके मनमें किसी पर-पुरुषका प्रेम जागृत हो जावे तो वह मानसिक मैथुन माना जावेगा, उसका प्रभाव भी गर्भपिण्ड पर पड़ता है, उक्त ग्रहयोग उसीको प्रकट करते हैं। परपुरुषके वीर्यसे उत्पन्न बालक ही जारज कहलाते हैं। —सम्पादक]

ज्योतिषके दो मुख्य भेद हैं :—(१) सिद्धान्त और (२) फलित। वर्तमान युगमें जनताकी रुचि फलित ज्योतिषकी ओर बढ़ती जा रही है और क्यों न बढ़े नक्षत्रों और ग्रहोंकी गतिका गणित कर मर्मज्ञ ऋषियोंने व्यक्तिके वर्तमान भूत एवं भविष्यका पता लगानेका पूरा-पूरा लेखा जोखा तैयार कर संसारकी सेवा जो की है। ज्यों-ज्यों ज्योतिषका अध्ययन करनेकी ओर प्रगतिशील हो रहा हूं त्यों-त्यों विषयकी महानताकी ओर आकर्षित होता जा रहा हूं। नागरिकोंके साथ रचनात्मक ढंगसे सम्पर्क स्थापित करने पर प्रश्नकर्ता अनेकों प्रश्न पूछते हैं। इस बार सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आया वह यह है कि क्या जन्मकुण्डली द्वारा पता लगाया जा सकता

है कि अमुक जातक अपने पितासे उत्पन्न है या नहीं ? यह प्रश्न बड़ा जटिल है। ज्योतिषी कितना भी भूत भविष्यका ज्ञाता क्यों न हो जन्मकुंडलीकी टिप्पणीके साथ यह कभी कथन नहीं करेगा कि जातक अपने पितासे उत्पन्न नहीं है। कारण की इसकी सत्यताकी पुष्टि किसके द्वारा होगी। क्योंकि "माता जाने सो पिता" और जातककी माता कितनी भी सत्य-वक्ता क्यों न हो, अपने पतिको इस रहस्यका पता नहीं बतायेगी। परन्तु फिर भी यह कथन गलत होगा कि ज्योतिष विद्यासे इस रहस्यका पता नहीं लग सकता। ज्योतिष जातक ग्रन्थोंमें नकली संतान या जारज योगोंका वर्णन इस प्रकार मिलता है जिन्हें ज्योतिष जिज्ञासु पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहा हूं।

(१) लग्न (१) में सूर्य और मातु भवन (४) में राहु हो।

(२) लग्नमें चन्द्रमा, सुत स्थान (५) में शुक्र और बन्धु भवन (३) में मंगल हो।

(३) सप्तमेश धन स्थान (२) में पाप ग्रह (सू०मं०रा० के०श०) से युक्त हो और मंगल उसे वेखता हो।

(४) लग्नमें राहु मंगल और स्त्री भवन (७) में सूर्य चन्द्रमा हो।

(५) जातकका जन्म तिथिके अंतमें, दिन के अंतमें, लग्नके अन्तमें अथवा चर नवांशके अंतमें हो।

(६) लग्नको चन्द्रमा नहीं देखता हो।

(७) बुध और शुक्रके बीच चन्द्रमा हो।

(८) स्त्री भवन (७) में मंगल हो और उसे चन्द्रमा न देखता हो।

(९) तनु भवनमें शनि हो और चन्द्रमा उसे न देखता हो।

(१०) लग्नका तृतीयेशके साथ योग हो।

(११) रिपु स्थान (६) व धर्म स्थान (९) के स्वामी चन्द्र-मंगलसे युक्त होकर मातु स्थान (४) में हों।

(१२) रिपु स्थान व धर्म स्थानके मालिक पाप ग्रहसे युक्त हों।

(१३) द्वितीयेश, तृतीयेश, पंचमेश, षष्ठेश सब लग्नमें हों।

(१४) लग्न और चन्द्रमाको बृहस्पति न देखता हो।

(१५) रवि चन्द्र एक साथ हों और बृहस्पति उसे न देखता हो।

(१६) लग्नमें पाप ग्रह, सातवेंमें शुभ ग्रह (चं०गु०शु०) और दसवें भवनमें शनि हो।

(१७) समस्त ग्रह चर राशियों (मेष, कर्क, तुला, मकर) में स्थित हों।

(१८) समस्त ग्रह स्थिर राशियों (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ) में स्थित हों।

(१९) शनि अथवा मंगलकी दृष्टि सुत स्थान पर हो और चन्द्रमा उसे न देखता हो।

विशेष :—शुभ व अशुभ सारे ग्रह स्थिर राशियोंमें ही हों। ऐसी दशामें संतान मिश्रित होती है।



ज्योतिषशास्त्रमें दिव्य-विज्ञान (३)

[लेखक :—श्री पं० हंसराजजी कपिल ज्योतिषाचार्य]

'**धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायाम्**" धर्मका तत्व (धर्म-अर्थ-काम-मोक्षकी स्थिति) गुफामें छिपा हुआ है। 'गुहा आवरणे गुह्यते आव्रियते अनेनेति गुहा।' वह आत्मा है। महत्तत्व-अहंकारादि २४ तत्वात्मक प्रकृतिमें छिपा रहता है, इसी संबंधसे वह जीवात्मा कहा जाता है "**दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया**" यही प्रकृति है "**मायां तु प्रकृतिं विद्धि मायिनं परमेश्वरम्**" माया ही प्रकृति है। प्रकृतिमें विकृतिवाद है, और माया में विवर्त्त-वाद है। केवल अन्तर इतना ही है। प्रकृतिकी विकृतियें ७ शब्द स्पर्श, रूप, रस, गंध, महतत्व, अहंकार है और आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी यह ५ महाभूत, ५ ज्ञानेन्द्रिय, ५ कर्मेन्द्रिय और मन १६ हैं। तथा मूल प्रकृतिसे २४ तत्व हैं। तथा मायामें ५ महाभूत, ५ ज्ञानेन्द्रिय, ५ कर्मेंद्रिय एवं मन बुद्धि चित्त अहंकार ४ से १६ तत्व हैं। शब्द स्पर्शादि तन्मात्राएं तो आकाशादि ५ महाभूतों के गुणमात्र होनेसे पृथक् तत्व माने जाते हैं। "अजामेकां लोहित शुक्लकृष्णां वह्वीप्रजाः सृजमानां नमामः" जिसका जन्म नहीं पाया जाता इसलिये अजा है। एक ही सर्वत्र सृष्टिमें वर्तमान है, इसलिये एका ही अज्ञेया अलक्ष्या अचलानैका कही जाती है। वह रजोगुण सत्व गुण तमोगुणमयी सृष्टिको उत्पन्न करती है। जन्मान्तरके राजस सात्विक तामस गुणोंके अनुसार किये गये कर्मोंके संचित प्राकृत संस्कारोंसे संबद्ध आत्मा मातृ गर्भमें पंचम मासमें प्राकृत पिण्डमें निवास करता है। राजस तामस गुणोंके कारण पशु पक्षी कीट पतंगादि वृक्ष पर्वतादि सृष्टि होती है। केवल कथंचित् इनके साथ सात्विक अंश होनेके कारण मानव कलेवरमें आत्मा आत्मा है। सात्विक गुणसे ही धर्म अर्थ काम मोक्षकी प्राप्ति होती है, अन्यथा नहीं। सृष्टि रचनामें ईश्वरका नाम 'अज' है। "**अजस्य गृह्णतोजन्म निरोहस्य हतंद्विषः स्वपतो जागरूकस्य याथार्थ्यं वेद कस्तव**" जो अजन्मा होने पर भी जन्म ग्रहण करता है। इच्छा न होने पर भी शत्रुओंका संहारक है। सोया होने पर भी जागरूक रहता है '**अकारो वासुदेवस्यात्**" अ-एक मात्रात्मक अजका १ एक अक्षर ब्रह्मवाचक है। इसमें १ एक और स्वर (मात्रा) मिलाने पर "अजा" दो स्वरों के होनेसे प्रकृति (माया) कही जाती है। जिस में विवर्तवाद है, जिसका लक्षण है "**पूर्वरूप मपरित्यज्यान्यनानारूप प्रतिभासो नामविवर्त**" पहिले रूपको न त्यागकर और अनेकों रूपोंकी प्रतीति होनेका नाम विवर्त है। जैसे विरूपिया पुरुष, अनेकों रूपोंको दिखाता हुआ भी असली पहिले रूपमें ही रहता है।

यहां १६ तत्वोंमें प्रथम एक १ अंक तो ईश्वरांश बोधक है, द्वितीय ६का अंक प्रकृति वाचक है। वह द्विमातृक होनेसे द्विगुणित, त्रिगुणित, चतुर्गुणित आदि रूपोंके बदलनेका प्रतिभास होने पर भी पूर्वरूप उन्नीस १६ अंक पर ही स्थिर हो जाती है! जैसे १६ अंकको द्विगुणित ३८ को द्विमातृक अजा होनेसे अन्त्यांक आठको द्विगुण किया तो १६ हुआ इसके प्रथमांक ३को सम्मिलित करनेसे १६ पूर्व रूप ही

रहा। एवं त्रिगुण १९ का ५७ अंक हुआ, अन्त्यांक ७ को द्विगुण किया तो १४—इसमें प्रथमांक ५ मिलाने पर १९ रहा पूर्व रूप। एवं चतुर्गुण करनेसे ७६ हुए, अन्त्यांक ६ का द्विगुण १२ कर प्रथमांक ७ मिलानेसे १९ ही रहें। एवं पांच, छै-सात, आठ आदिसे सहस्रों बार गुणा करने पर भी अन्त्यांकको द्विगुणित कर प्रथमांक मिलानेसे पूर्व रूपके १९ उन्नीस ही अंक रहेंगे। इससे सिद्ध होता है कि माया-प्रकृतिका ९ अंक, विवर्तवाद होने पर भी रहता है। वेदमें ईश्वरका तेजोमय रूप "**दशांगुलम्**" कहा है। जो परमेश्वरको शतांगुलसे अनन्तांगुल **सहस्रशीर्ष सहस्राक्षसहस्रपाद**" आदि कहा जाता है। यहां अनेकधा गुणित मायांक १९ को पूर्वाङ्क १०० मेंसे न्यून करने पर अन्त्यांकको द्विगुणित कर प्रथमांक मिलानेसे १० दशांगुल पुरुष सिद्ध होता है। जैसा कि १९ को १०० शतमें घटाने पर ८१ रहे—अन्त्यांक १ को द्विगुणित २ कर प्रथमांक ८ मिलानेसे १० अङ्कसे ईश्वर सिद्ध है। द्विगुणित १९ के ३८ को १०० शतमें हीन करनेसे ६२ हुए। अंत्यांक २ को द्विगुण ४ कर प्रथमांक ६ मिलानेसे १० सिद्ध हुआ। फिर १९ को त्रिगुण ७ शत १०० में घटानेसे ४३ रहे। अन्त्यांक ३ को द्विगुण ६ कर प्रथमांक ४ के मिलानेसे १० अंक सिद्ध होता है। एवं सहस्रों बार गुणन करने पर १० ही अंक रहेंगे : एवं जन्मान्तर सात्विक संचित कर्मोंसे संबन्धित प्राकृतिक आत्मीयभाव अर्थात् आध्यात्मिक स्वभावका नाम है धर्म। प्रकृतिका नव ९ अंक होनेसे प्राकृतिक धर्मका भी स्थान ज्योतिष शास्त्रानुसार नवम भाव है। ईश्वर अजके अंकका स्वरूप १ है तो इसके विलोम प्रकृति का रूप ९ अंक है। प्राकृतिक अंकके प्रथमांकमें लीन होनेसे ० शेष १० अंक ९ धर्मस्थानके बाद दशमांक आता है। सर्वत्र प्रकृतिको प्रबल माना है। '**मिथ्यैवाऽव्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति**" अर्जुन! मिथ्या ही तेरा अध्यवसाय है, तुम्हे प्रकृति ही युद्धमें लगा देगी। (गीता)

सतीव योषित् प्रकृतिस्तु निश्चला।
प्रमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।।

भगवान् श्रीकृष्णके न जाने जन्मान्तरके हिरण्यकशिपु-रावण और अत्र शिशुपाल शत्रु बना आता है। जन्म जन्मान्तरोंका स्वभाव ही आत्माके साथ चला आता है। वह धर्म ९ नवम स्थान, जातककी जातिको भी सिद्ध करता है। जोकि ब्राह्मण ४—८—१२ जाति की हैं। क्षत्रिय १-५-९ राशियें हैं। वैश्य २-६१० जातिकी राशियें हैं। शूद्र ३-७-११ जातिकी राशियें हैं। नवम भावका स्वामी, जिस राशिमें स्थित है वा नवमेश ग्रहसे अधिष्ठित ग्रहकी सप्तम राशि जातिको बताती है, इनमें प्रबल राशिमें जातिका अनुसंधान करें।

प्रस्तुत प्रकरण—नवमभाव, प्रथम जन्मान्तरीय अध्यात्मिक धर्मस्थान है, इस भावका धर्म, गुरु द्वारा विकसित होता है। जैसे शंकराचार्य, रामकृष्ण, विवेकानंद, स्वामी दयानंद, स्वामी रामतीर्थ, रामबादशाह, श्री गुरुनानकदेव आदिसे आविर्भाव हुआ है। इसके अनन्तर द्वितीय १० अंकसे दशम भाव राज्य स्थान है, जो धनके बिना असंभव है। अतः दशम भावमें अर्थका विचार किया जाता है, वहां अर्थ प्राप्ति राजसेवासे होती है। धर्मसे तृतीय भाव

एकादश ११वां भाव है, इससे कामका विचार होता है, इस स्थानका नाम भव भी है। जो [सत्ता] होनेका सूचक है। कामनाएं सफल हों वा न हों, कामनाएं रहती हैं। **धर्म नवम भावसे चतुर्थ बारहवां घर है**। इसमें मोक्षका विचार किया जाता है। व्ययभावमें बन्धन कारागारसे छूटनेका नाम मोक्ष है। प्रथम भावके अन्त होने से मोक्ष कहा जाता है **"केतौ कैवल्यम्"** जैमिनि सूत्रानुसार व्यय भावमें केतुसे मोक्ष होना कहा गया है। फिर **उदय प्रथम भावमें-सनातन कुल धर्मका स्थान** है जिसके लिए श्री कृष्णने अर्जुन को कहा था "मिथ्येवाध्यवसायस्ते प्रकृति स्त्वां नियोक्ष्यति" (गीता) 'क्षत्रिय क्षतात्त्रायते' कुल धर्मकेअनुसार जाति स्वभाव ही तुझे युद्धमें लगा देगा। उदय लग्न धर्मस्थानसे **द्वितीय भावमें** अर्थका विचार होगा। पहिले अर्थ, राज्य स्थान में था तो यहां द्वितीय अर्थ, वाक् [वाणी] के स्थानमें है। यहां वाणी द्वारा अर्थ [धन] सिद्धि होगी। जैसे दैवज्ञ, उपाध्याय संगीतकार, व्याख्याता, उपदेशक, कथावाचक, वकील, भट्ट, कवि, आदि। **एवम् अर्थके अनंतर तृतीय भावमें कामका विचार किया जाता है, अर्थके** होनेपर साहस बढ़ता है, कामनाओंके बढ़नेसे इतस्ततः उद्योग करना पड़ता है, इधर-उधरसे धन लगाकर विशेष अर्थ [धन] संग्रह किया जाता है। महर्षि जैमिनिने भी तृतीय भावका नाम ही काम कहा है **"दारभाग्यशूलस्थार्गला निध्यातु"** चतुर्थ, द्वितीय, एकादशम भावमें अर्गला होती है, जबकि कोई भी ग्रह द्वितीयादि भावोंमें बैठे हों। 'शुभार्गले धनसमृद्धिः' शुभ ग्रहोंके होने पर धनकी विशेष वृद्धि होती है। क्रमसे "रिःफ. नीच, कामस्था विरोधिनः" चतुर्थ भावकी अर्गलाको [रिःफ] दशम भावस्थ, द्वितीय भावकी अर्गलाके [नीच] बारहवें भावमें स्थित [काम ३] तृतीय भावमें स्थित—एकादशम भावकी अर्गलाको ग्रह रोक देते हैं। **"कामइस्था तु भूयसा पापानाम्"** तृतीय भावमें पाप ग्रहोंके बाहुल्यसे धन समृद्धि होती है। यहां दो बार काम पदको तृतीय भावके स्थानके लिये जैमिनिने प्रयुक्त किया है। निष्कर्ष यह हुआ कि ग्यारहवें कामनायें शुभ कर्मों द्वारा शुभ स्थानों पर प्रयुक्त होनेसे बढ़ती और बढ़ाती हैं। तृतीयकी [काम] कामनाएं पाप कर्मों द्वारा पाप कर्मो पर प्रयुक्त होकर धन समृद्धि बढ़ती और बढ़ाती है। एकादश भावमें सत्व गुण प्रधान [काम] सुहृदों और सहायकोंमें सौहार्द चाहता है। तृतीयभावमें पापार्गलाके कारण [काम] सहोदरोंमें विद्वेष चाहता है। चतुर्थ भावमें मोक्षका विचार किया जाता है—जिसका द्वितीय नाम है—[अपवर्ग] प्रत्येक व्यक्ति, अपने स्थानसे [अस्त] सप्तम जाकर निर्बल हो जाता है। जन्मान्तरीय धर्म ९ अपने स्थानसे [अस्त] तृतीय भावमें दुर्बल हो चुका है। जहां तामसिक इच्छाएं नृत्य कर रही हैं। चतुर्थ भाव तो धर्मसे अष्टम स्थान है, जहां महा मोहमयी माया छल कपट द्रोह आदि कौटिल्य नीतिसे धन संचय कर सुख समृद्ध अपनेको जानकर प्रसन्न होता है और **"अहंकार विमूढ़ात्मा कर्ताहमिति मन्यते"** **"सम द्विघात कृतिरुच्यते** समानको समानसे गुणने पर वर्ग होता है, जैसे ३ से ३ को, चारको चारसे ९—१६ हो जाते हैं। एवं माया भी विवर्तवादसे स्वर्ग बना देती है। नव भवान्तरके संचित धर्म का गुण प्रकट होकर मायावी नारको स्वर्गसे

निकलकर पूर्ण सुखके लिये सच्चिदानन्द ब्रह्मकी ओर लगा देता है। तब "अपमृज्यते परिहीयते कर्मकलापोऽनेनेति अपवर्गः ॥" अथवा "अपगतो वर्गो यस्मात्-इत्यपवर्गः। एवम् सृज्यते संसारोऽनेनेति मोक्षः।" अपवर्ग ही मोक्षका नाम है।

तदनन्तर पंचमभाव सामाजिक धर्मका है। जहां बुद्धि प्रतिभाका स्थान है जो सनातन-धर्म, आर्यसमाज, राधास्वामी, आदि संप्रदायक जनताकी संगतिसे स्वार्थ सिद्धिके लिये सामयिक प्रतिभा द्वारा विचार कर स्वीकार किया जाता है। इस धर्मके बाद छठे भावमें अथका स्थान है—जहां कृषिकर्म वैश्य कर्म वृत्ति, भवन, बांध, बढ़यी आदि कला कलाप निर्माण, इंजनीयर आदि और श्रमिक वर्ग आदि द्वारा अर्थकी प्राप्ति होती है।

सप्तम भावमें काम,कामिनी द्वारा कामनाओंके प्रपंचसे कुटुम्ब विनोद और मंत्री आदि अन्तर-राष्ट्रीय इच्छाओंके कारण लोभ मोह अहंकार का अन्तिम केन्द्र बना देता है।

जन्मान्तरमें किये गए संचित कर्मोंका फल भाग्यमें दैवने लिखा था उसे यथा कथंचित् मुक्त कर ऐहिक कर्मोंका परित्याग करने पर निरंजन आत्मा प्राकृत पंजरसे मुक्त हो जाता है। इस प्रकार प्राक्तन सात्विक संकल्पोंका नाम है धर्म। वह प्राकृत पिण्डमें जीवात्मा दैवयोगसे धार्मिक होकर अर्थ, काम, मोक्ष स्थानों पर तीन बार चक्कर खाकर गुरु कृपासे मायावी जीवत्व भ्रमजालसे निकल कर वह दशांगुल रूपमें लय हो जाता है, अथवा सादृश्य सामीप्य सालोक्य नाम मोक्षस्थान पा लेता है।

आठ सौ वर्ष पुरानी भविष्यवाणी

[लेखक :—श्री जयसिंह शर्मा भारद्वाज ज्योतिषी]

(गताङ्क से आगे)

संत वली साहिबके कसीदेके कुछ अशार (कविता) नीचे उद्धृत करता हूं। इन्हें अवलोकन कर मनन कर पाठक स्वयं ही भविष्यके बारेमें विचार कर लें। उर्दू शब्दोंके हिन्दी रूपान्तरमें कुछ अशुद्धि हो तो क्षमा करें।

१. मुसलिम सूदे किस्ता, अफ़गान सून्द हैरो,
अज दस्ते नेजा बन्दान यक कौम हिन्दवाना।

अर्थ—मुसलमानोंका कत्ल होगा, अफ़-गानी परेशान होंगे, हिन्दुओंकी एक हथियार बन्द कौमके हाथों।

टिप्पणी – १९४७ से तथा उससे पूर्व जो हिन्दु-मुसलिम दगे हुए शायद उनकी ओर संकेत है।

२. रह बरज मुसलमां दरे पर्दा, पर्दा यारयाना।
इमदाद बादा बाशिदाज अहदे फजराना॥

अर्थ—मुसलमान रहबरोंमेंसे बजदर परदा मुसलमानोंको गुमराह करेंगे। तफ़रका पैदा करायेंगे और अपने बुरे अहदब मकासदकी बजहसे वह नुकसान पहुंचायेंगे।

टिप्पणी—इससे यह मुराद ली जा सकती है कि बहुतसे मुसलमान लीडर (खासकर मुसलिमलीगी) अपने स्वार्थों और हकूमतकी हविशके कारण मुसलमानोंको बरगलायेंगे। गुमराह करेंगे। और मुसलिम कौमको हानि

पहुंचायेंगे।

३. जाँ पस सूद चौशेरस मुल्के हिन्द पैदा।
रोशमां नमायद पेकार अज आजम गाज़ियाना

अर्थ—इसके बाद हिन्दुस्तान मुल्कमें शोरस होगी और मुसलमान इनफसादातमें ग़ाजयाना अज़्मके साथ मुक़ाबला करेंगे, लड़ेंगे।

टिप्पणी—मुसलमान फसादात (लड़ाई झगड़ा) में संलग्न रहेंगे (बददिल न होंगे) परन्तु हिन्दुस्तानी फिरकापरस्तोंका विरोध करेंगे सहनशीलता व धैर्यके मुल्कका वक्तार रखनेके लिये।

४. अज कलद पंज आबी खारिज शून्द ग़ाजी।
कब्जा कुनन्दे मुसलिम बर मुल्क गाजियाना।

अर्थ—पंजाबके दिलमें ग़ाज़ी पैदा होंगे और ग़ाज़ियोंकी बहादुरीके मिस्ल कब्जा कर लेंगें।

टिप्पणी—इसमें संकेत पठानोंकी बग़ावत से है। जो पाकिस्तानके एक भूतपूर्व राष्ट्रपति अय्यूबखांके कालमें हुई। पठानोंने सरहद पर कव्जा कर लिया, पाकिस्तानकी फौज पठानों का कुछ न बिगाड़ सकी। फौजने निहत्थे शहरियों पर बमवारी कर मौतके मुंहमें धकेला।

५. माह मुहर्रम आयद बातेग बा मुसलमां।
साजिन्द मुसलमानां अकदाम रुस्तमाना॥

अर्थ—मुहर्रमका मास मुसलमानों पर तलवारके साथ आवेगा। और ख़तरनाक लड़ाई होगी।

टिप्पणी—आजकल सूबा सरहदके उत्तर पच्छिम इलाकेमें पाकिस्तानमें पख्तूनिस्तानका आन्दोलन ज़ोर पकड़ा गया है। दोनों ओर मुसलमान ही है। पाकिस्तान इस्लामी राज्य है, पख्तूनिस्तानी भी मुसलमान है। अतः किसी मुहर्रममें यह जंग भड़क उठे और ख़तरनाक युद्ध हो।

६ गरद जाल सुलेमां वाशिद चोफजल रहमां।
यानि के कौम अफ़ग़ान वाशिद अलाना॥

अर्थ—जब ख़ुदाका फज़ल शामिल हाल होगा तो आले सुलेमां आयेंगी। और कौम अफ़ग़ान एलानियां तरीकासे सामने आयेगी।

टिप्पणी—इसमें यह संकेत हो सकता है कि अफ़ग़ान लोग पख्तूनिस्तानके प्रश्नको कौमी सवाल बनायेंगे। पख्तूनोंका रहनुमा सुलेमान खेल कबीलासे होगा।

७ आख़िर हबीब उल्ला साहिब क़रान मनउल्ला
गरन्द नसरत उल्ला शमशीर अजन्यामा।

अर्थ—आख़िर ख़ुदाका दोस्त साहिबे कुरान अल्लाकी तरफ़से आवेगा। और नयामसे तलवार निकालेगा।

टिप्पणी—इस शेरसे समझा जा सकता है कि पख्तूनिस्तानके मामले पर भारी लड़ाई होगी और एक नेक बन्दा मुक्तिदाता मैदानमें कूदेगा और वह लड़ाईमें भाग लेगा।

८. रोदे अटक सावार अज ख़ूने अहल कफ़ार।
परमी शोदबा यकबार जरयां जारयाना॥

अर्थ—अटकका दरिया विरोधीके ख़ूनसे तीन बार भरेगा और एक बार लबरेज़ होकर बहेगा।

टिप्पणी—संकेत है कि पाकिस्तानमें गृहयुद्ध होगा। खूनसे तीन बार भरेगा, मतलब बहुत आदमी मर जायेंगे।

९. पजाबज शहर लाहौर कशमीर मुल्क मन्सूर।
दोआबा शहर बन्नू सागीर नद गाजियाना ॥

अर्थ—पंजाब और लाहौरका शहर और फ़तह किया हुआ मकबूजा काश्मीर शहर बन्नूका दोआबा गाजियोंकी तरह फ़तह कर लेंगे।

टिप्पणी संकेत साफ़ है कि विरोधी पक्ष इस युद्धमें लाहौर आदि पर कब्जा कर लेंगे।

१०. गलबा कुनदे हमचो मूर व मलूख शबाब।
हत्ता कि क़ौम अफ़गान बाशिन्द फ़ातहाना।

अर्थ—मानिन्द चींटियों और टिड्डियोंके रातों रात चढ़ाई होगी और यहाँ तक कि अफ़ग़ान कौमकी जीत होगी।

टिप्पणी—अफ़गानोंकी विजय और पख्तूनिस्तानकी ओर संकेत मालूम देता है।

११. अज़ गाज़ियाना सरहद सर जमीने मरकद,
बहरे हसूले मकसद आयन्द वालिहाना।

अर्थ—सरहद के गाजी हसूले मकसद के लिये मरकद की जमीन से वाल्हाना तौर पर निकल आयेंगे।

टिप्पणी—गोया पख्तूनिस्तान के हामी सरहदी लोग चपासू से निकल आयेंगे। मरकद-सूबा सरहद में एक इलम का नाम है।

१२. यक जां सून्दे अफगान हम किनिया बीरां,
फत्तह कुनन्दा हां कुल शहर गाजियाना।

अर्थ—अफगानी, किनयानी और ईरानी एक जां होकर लड़ेंगे और इन तमाम शहरों को गाजियाना तरीकेसे फतह कर लेंगे।

टिप्पणी—पख्तूनिस्तान की हिमायत में यह सब लोग विरोधियों से एक होकर लड़ेंगे।

१३. चो मर्द मां अतरा कई शर दाह वसूतंद,
यक बार जमा आयन्द बर बाब आलियाना।

अर्थ—जब तुर्क कौम यह खुशखबरी सुनेगी तो यक दम बावे आलीमें जमा हो जायेगी।

टि०—इस शेरमें तुर्कोंकी तरफ इशारा है कि उन्हें पख्तूनिस्तानकी स्थापनासे खुशी होगी। तसलीम करेंगे, उसके कयाका खैर मकदम करेंगे।

नोट—शाह साहबकी भविष्यवाणीके अनुसार पख्तूनिस्तानका बनना निश्चित है।

१४. ऐराब तेज आयन्द अज कोह बदस्त हामूं,
बहरे हिमायत इस्लाम अजमो सनान आल्मा

अर्थ—अरब लोग पहाड़ों और जङ्गलोंसे निकल आयेंगे, इस्लामकी और मोमिनोंकी हिमायतके लिये।

टि०—इस शेरका संकेत अरब-इजराइल युद्धसे है जो निर्णयात्मक युद्ध होगा। इस युद्धमें सारा जगत् शामिल हो जायेगा।

१५. कुश्ता सून्द जुमला बदे ख्वाह दीन व इमां,
खालिक नमायन्द इकराम अज़ लुत्फ खाल्काना।

अर्थ—दीन व ईमानके तमाम शत्रु मारे जायेंगे और अल्ला ताला अपने पैदा किये हुए इकराम दिखायेंगे।

टि०—यह भी अरब-इजरायल युद्धकी ओर ही संकेत है।

१६. जीम सकिस्त खूरदा बार आर बराबर आयद
आलात नाज आरद सहलक जहनमाना।

अर्थ—सिकस्त खाया (हारा) हुआ जीम

(जर्मनी या जापान) दोबारा ताजा हो जायेगा और आग बरसाने वाले भयङ्कर जहन्नुमी हथियार ले आयेगा।

टि०—जीम (जर्मनी या जापान) दोनों उन्नतिके शिखर पर पहुंच रहे हैं। दोनों पुनः सशस्त्र हो रहे हैं।

१७. **दो अलिफके किश्त यक अलिफ अलिफ गरदद**
अज जुमला साजयायद बर अलिफ मगरबाना,

अर्थ—फिर दो अलिफ आपसमें लड़ेंगे इसमें एक अलिफ लड़ाईके लिये खड़ा हो जायेगा और मगरबी अलिफ पर हमला करेगा।

टिप्पणी—यहां अलिफसे अमरीका, इङ्गलैंड, इटली, आयरलैंड, आस्ट्रेलिया, ईरान, इजिप्ट, इजरायल आदि कई देश आते हैं। अफगानिस्तान भी आता है। अब भविष्यमें ही इसका अनुमान लगाया जा सकेगा।

१८. **काहिद (काहद) अलिफ जहां चीक नुक्ता से नमायद,**
अल्ला के इस्म यादश बाशद मुआलनफा।

अर्थ—अलिफ नुक्ताकी तरह हो जायेगा और इस तरह गुमनाम होगा कि उसका नाम और याद तवारीखके पन्नोंके अलावा कहीं न मिलेगा।

टिप्पणी—कदाचित संकेत इङ्गलैंडकी ओर है।

१६. **तकरूर तरगीब या बद मुजरिम खराब गिर्द,**
दीगर न सर फराज द बरंतरज राहेबाना।

अर्थ—किसी छुपे हुए तरीके पर भी बरसरे इकदार नहीं आ सकेगा और मुजरिमका खिताब पायेगा और फिर अपने ओहदे पर राहबराना तरीके पर सरफराज न हो सकेगा।

टि०—हारे हुए अलिफकी ओर संकेत है।

२०. **दुनिया खराब गरदो बाशिन्द बेइमाना,**
गेरन्द मंजिल आखिर फो अलना खालाखाना

अर्थ दुनिया बरबाद हो जावेगी, लोग बेइमान हो जावेंगे और उनकी आखरी मंजिल जहन्नुम होगी और इसका धुआं होगा।

टि०—दुनियामें बदचलनी, बेइमानी, भ्रष्टाचार, चोरी, गुनाहोंका जोर होगा। मतलब यह है दुनिया तबाह (नाश) होगी।

२१. **राजे के मुफ्ता अम मत दर साले के लिफता अम सन,**
बाशिद बराये नसरत असना दगाये बाना।

अर्थ—मैंने जो राज एक सालमें लिखे हैं ये गायबाना सन्दे हैं सत्यता और नसीहत की।

टि०—शाह न्यामत उल्ला वली साहबने मुहम्मद गौरीकी प्रार्थना पर साल भरमें यह कसीदेके रूपमें पेशीनगोई की। खुदाका हुक्म जैसा देखा, लिखा। मुगलिया सल्तनतका खातमा, अंग्रेज व्यापारियोंके हुक्मरां बन जाने, हिन्दुस्तानकी तकसीम, पाकिस्तानका टूटना, बङ्गला देशका बन जाना, अमरीकी मदद बन्द हो जाने तकके बारेमें इशारा किया।

२२. **चोसाल बेहतर आयद अज कान होका आयद**
मेंहदी खरदज दर अहदे महदयाना।

अर्थ—जब बेहतर (अच्छा) साल आवेगा महदियाना जमानेमें हजरत इमाम मेंहदी जाहिर होंगे और उरूज पायेंगे।

२३. **गेरन्द हर मुसलमां गालिब बफजले यजदान,**
यनि कि कौम अफगान बाशिन्द सद एलाना।

त्रैमासिक राशिफल विमर्श

[लेखक :—श्री पं० कैलानाथ उपाध्याय, ज्योतिषी]

माघ मासका राशिफल

६ जनवरी से ६ फरवरी १९७४ तक

मेष—आपकी जन्मराशिमें स्वगृही मंगल आकस्मिक दुर्घटनासे सतर्क रहनेकी राय देता है। कर्मस्थानमें वक्री शुक्र ता० १४ को सू०बु० से युत होकर राज्य-कर्म और नौकरी व्यापार में विपरीत प्रभाव देगा। दैनिक कार्यक्रमोंमें बाधक तत्वोंका सामना करेंगे। स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देना आवश्यक है। आपकी आर्थिक परिस्थिति दयनीय रहेगी, दैनिक व्यय के लिए संचित द्रव्यका सहारा ले सकते हैं। निम्न श्रेणीके व्यक्ति ऋणका सहारा लेंगे। मंगल-यन्त्र का नित्य पूजार्चन कीजिए।

वृष—व्यवस्थ मंगल अशुभ चल रहा है, साथ ही १४ से २६ ता० तक भाग्यस्थानमें सू०बु०गु०शु० का चतुर्ग्रही योग भाग्यावरोधक एवं विशेष उलझनोंका प्रतीक है। शारीरिक कष्ट बना रहेगा। द्रव्यभावसे परेशानी होगी। प्रेम-सम्बन्धमें असफलता पारिवारिक शोक, मानहानि तथा यात्रामें कष्टकरयोग हैं। अनावश्यक जोश, क्रोध, खिझलाहट और हर कामों में जल्दबाजीसे कार्य कार्य बिगड़नेकी आशंका रहेगी। महिलाएँ रक्त-दोषसे पीड़ित होंगी। ता० १३-२३-१५-२६ जनवरी विशेष कष्टप्रद है।

मिथुन—मासफल उत्तम है। बल-पराक्रम का विकास होगा। आपकी दिनचर्या सुगमता पूर्वक व्यवस्थित रहेगी। स्वास्थ्यमें सुधार होगा। व्यापारमें न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होगी। नौकरी वाले उदासीन रहेंगे। राजनीति से सम्बन्धित व्यक्ति श्रेष्ठ मान-पद प्राप्त कर सकेंगे। व्यक्तित्व नया आकर्षण, नवीन चमत्कृतिका अनुभव होगा। सहयोगी जनोंसे हर्ष रहेगा। विद्यार्थी एवं महिलाएँ अपने कठिन प्रयत्नोंमें सफल रहेंगी। मध्यमा ऊँगलीमें कृष्णाश्वलौह-मुद्रिका धारण कीजिए।

कर्क—पूरे मास भर भली भाँति दैनिक कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। शरीरके रोग दूर होंगे। घरेलू कलह बने रहना स्वाभाविक है। व्यापारमें सफल रहेंगे। मासफल प्रगति एवं

अर्थ—अल्ला तालाके हुक्मसे हर मुसलमान ग़ालिब होगा यानी कि अफगान कौम एलानिया तौर पर कामयाब और हावी होगी।

टि०—अफगानोंकी सफलता, विजयकी ओर संकेत है।

२४. **खामोश बाश न्यामत असरारे हक मकन फाश**
दर साल कनत व कनज आबाशिद खफी बयाना।

अर्थ—वली साहेब फर्माते हैं ऐ न्यामत! खामोश रह, खुदाके छिपे भेद प्रकट न कर जो सन व साल तू बयान कर रहा है इसमें फर्क हो सकता है।

टि०—शाह न्यामत वली साहबने अहंकार का त्याग और नम्रता दर्शा कर अपनेको सिद्ध योगी पुरुष सिद्ध कर दिया।

अर्थलाभमें सहायक है। अपनी पुरुषार्थ शक्ति के अनुसार अपने उद्योगोंमें कुछ प्रयत्न करके श्रेष्ठ लाभ प्राप्त कर सकेंगे। शुक्लपक्षमें भाग्य को चमकाने वाले ग्रहयोग प्राप्त होते हैं। नौकरी वालोंको उच्चाधिकारियोंका समादर प्राप्त होगा। ता० ११-१६-२४ और २७ जनवरी छोड़कर शेष दिन श्रेष्ठतर रहेंगे।

सिंह—मासफल साधारण है। नित्य कर्मों में सुधार करेंगे। स्वास्थ्यका सुख नहीं मिल सकेगा। आप अपने कार्योंमें सफलता प्राप्त करेंगे, पर कुछ कठिनाइयोंके बाद ही। शत्रु विनष्ट होंगे और शत्रुबाधासे राहत मिलेगी। कुछ श्रेष्टजन लोग स्वतः पुरुषार्थ एवं प्रयत्नसे प्रत्येक वांछित कार्यमें सिद्धि प्राप्त करेंगे। चौथे सप्ताहमें नौकरी वालोंकी पदोन्नति, बैंक कर्मचारियोंका स्थानान्तरण, व्यापारियोंको यात्राएं और विद्यार्थियोंको मनोरंजक कार्यक्रमोंका अवसर मिलेगा।

कन्या—अष्टम मंगल अशुभ है। दुर्घटनाओं से हानिकी आशंका है। आपकी दिनचर्या दुर्व्यवस्थित रहेगी। आपका मस्तिष्क बहुत सी उलझनोंमें उलझा रहेगा। दुःस्वप्न दर्शन होंगे। रोजी-धंधेमें विभिन्न परेशानियोंके रहते हुए भी ता० २३ से ३१ जनवरी तक विशेष लाभकारी योग रहेगा, किन्तु स्वास्थ्यमें पीड़ाकारी योग रहेंगे। अध्ययनमें सफलता मिलेगी। व्यर्थ खर्च और छिपे शत्रुओंसे सतर्कता आवश्यक है। महिलाओंको कमर और पेटमें दर्दकी संभावना रहेगी, इलाज करना पड़ेगा।

तुला—स्वास्थ्य प्रायः ठीक रहेगा, पर अकारण ही मनोबलमें गिरावटका अनुभव करेंगे। व्यवसायमें परिवर्तनकारी अनुकूलता का श्रेष्ठ लाभ मिलेगा। उच्चवर्गीय व्यक्तियों तथा देशान्तरके व्यापारसे उन्नतिकारी प्रभाव मिलेगा, विद्यार्थियोंका मन अनिद्रासे परेशान रहेगा। ता० १४ से २७ तक चौथे स्थानमें चतुर्ग्रही योग विविध चिन्ताओंका सूचक है। प्रयत्न करने पर भी आप दिनचर्या व्यवस्थित नहीं रख सकेंगे। चौथे सप्ताहमें पत्र-व्यवहार से कोई हर्षप्रद समाचार मिलेगा।

वृश्चिक—मासफल उत्तम है। आपका स्वास्थ्य, आत्मविश्वास, मानसिक गंभीरता और आपकी दिनचर्यामें नवीन चमत्कृति उत्पन्न होगी। यद्यपि घर-परिवारकी अनेक समस्याएँ पैदा होंगी, फिर भी कोई चिन्ता की बात नहीं है। अपने बल-पराक्रम व पुरुषार्थ के बल पर प्रत्येक बिगड़ते कार्यमें आप सफलता प्राप्त कर सकोगे। अनियमित व्यय भारसे मन में कुछ खिझलाहट पदा होगी। श्री हनुमानजी की आराधना लाभदायक होगी।

धनुः—स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, अनियंत्रित व्यय होगा, नित्य कर्मोंमें कुछ उलझनें उत्पन्न होंगी। धनु राशि वाले लोकसभाके जो सदस्य (एम०पी०) होंगे, उनकी मानहानि हो सकती है। कृष्णपक्षकी दशमीसे त्रयोदशी तक लाटरी के टिकट खरीदकर भाग्यकी आजमाइश कर सकते हैं। अभीष्ट कार्य सिद्धि, मामले-मुकदमों में सफलता और पारिवारिक सुख मिलेगा। आपकी वाक्शक्तिका विकास होगा। ता० १२, १३, १६, २०, २५ जनवरी नेष्ट है।

मकर—चतुर्थ भौम कष्टदायक है और जन्मराशि पर चतुर्ग्रही योग स्वास्थ्य-विद्या-

और व्यापार और राजनीति क्षेत्रमें विपरीत फल देगा, यह योग ता० १४ से २९ तक सचेष्ट रहनेका परामर्श देता है। शरीरमें पुराने सजड़ रोगोंसे विविध परेशानी होगी। बन्धु-बान्धवों एवं मित्रोंसे वैमनस्य बढ़ सकता है। सामान्य तया आमदनी कर रोजी-रोटी चला सकते हैं। शुक्लपक्षमें स्थिति कुछ सुधर जायेगी। दिलो दिमागमें कुछ राहत मिलेगी, भूना चना-गुड़ गायको नित्य खिलाया करो।

कुम्भ—मासफल साधारण है। स्वास्थ्य, मनोबल और नित्य क्रियाका आनन्द मिलेगा। विशेष खर्च और अकारण हानिसे दिमाग परेशान रहेगा अपने हिम्मतके बल पर आप श्रेष्ठ लाभ प्राप्त कर सकेंगे। पारिवारिक सुख के लिए उत्तम प्रभाव मिलेंगे। लोग आपसे खुश रहेंगे। पुरुषोंको वीर्य दोष एवं महिलाओं के मासिक धर्ममें रक्तदोष उत्पन्न होगा। राजनीतिक व्यक्ति वरिष्ठ नेताओंसे सम्मान प्राप्त करेंगे, गुरु-सूर्यकी शान्ति अवश्य करावें।

मीन—दैनिक कार्यक्रमोंमें आप सफल रहेंगे। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है है। सामान्यत: यह मास मीन राशि वाले कानूनी व्यवसायी, विधानसभाके सदस्य एवं इण्डस्ट्रीजके मालिकोंके लिए अपयश-अपमान एवं अनर्गल उपद्रवोंको बढ़ाने वाला सिद्ध होगा। चौथे सप्ताहमें कुछ राहत मिलेगी, जिससे व्यापारी वर्ग, विदेशी फर्मोंके एजेन्ट, सामाजिक सेवाओंमें संलग्न लोक-सेवक शान्ति प्राप्त करेंगे। श्रीमहामृतसंजीवनी महामंत्रका जपानुष्ठान करा दें। तथा भगवद्भजमें गहरी निष्ठा रखें।

फाल्गुन मासका राशिफल

(ता० ७ फरवरीसे ८ मार्च १९७४) तक

मेष—मासारम्भसे ही एकादश बृहस्पति का पदार्पण लाभदायी सिद्ध होगा। दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी। उत्तम स्वास्थ्यका आनन्द मिलेगा, मनोबल ऊंचा उठेगा, आत्मविश्वास की गहरी निष्ठा होगी। अपने-अपने भाग्य व कर्मानुसार शुभ फल प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक विस्तार एवं साज सजावटका यथेष्ट अवसर मिलेगा। राजनीतिक व्यक्ति भारी सफलता प्राप्त कर धन-संचय करेंगे, विधानसभाके सदस्य विशेष सम्मानित होंगे। श्री बगलामुखी देवीका जपानुष्ठान करना, कराना श्रेष्ठतर रहेगा।

वृष—राज्य-संबंधित व्यक्ति गुरुके प्रभावसे उन्नति करेंगे। दैनिक कार्य-क्रम भली भाँति सम्पन्न होते रहेंगे। स्वास्थ्य तो ठीक रहेगा, पर आत्म विश्वासकी कमी रहेगी—परिणाम-स्वरूप आप आलस्य और अति निद्राके शिकार बनेंगे। विद्यार्थीवर्ग कुछ अस्वस्थ रहेंगे। मित्रों से विनोद वार्ताएं होंगी। व्यवसायमें साधारण लाभ होगा। और शुक्लपक्षमें स्त्री पक्षसे अनुकूल फलकी प्राप्ति व सामाजिक प्रतिष्ठाकी उपलब्धि होगी, किन्तु आपको लौह-मुद्रिका धारण करना कल्याणकारी होगा।

मिथुन—भाग्यस्थ गुरुका आगमन आपके लिए पूजनीय होगा और १५ ता० से बारहवें मंगल रोग-ऋण एवं शत्रुकी वृद्धि करेंगे। श्रीमानोंको अपने स्वास्थ्यकी विशेष रक्षा करनी चाहिये और अपने नित्यकर्मोंमें ईश्वरोपासनाको प्रमुख स्थान देना चाहिए। महिलाओं को रक्तदोषकी आशंका रहेगी। तीसरे सप्ताह

के आस पास किसी प्रिय वस्तुके नष्ट होने या खो जानेका भय रहेगा। आमदनी के लिए यह समय बाधक है व्यर्थकी कलहपूर्ण परेशानियां उत्पन्न होंगी, कुसंगतिसे बचना चाहिये।

कर्क—अष्टमस्थ गुरु-सूर्य एवं वक्री बुध सतर्क रहनेकी राय देता है। दैनिक कार्यक्रम बड़े विचित्र ढंगसे अव्यवस्थित रहेगा। हृदय रोगसे परेशानी और शारीरिक दुर्बलता उत्पन्न होगी। अनावश्यक जोश, क्रोध, दिमागी चंचलता और उतावलापन बढ़ेगा। रोजी-रोटी का प्रश्न बना रहेगा। रिश्ते-नातेदारोंकी भलाई करनेमें कहींसे अपयश भी प्राप्त हो सकता है। वैसे तो शत्रुपक्षसे परेशानी न होगी, फिर भी यदि कानूनी विवाद चल रहें हों तो आदित्य-हृदयस्तोत्रका दैनिक पाठ चालू रखें।

सिंह—मासफल उत्तम है। दिनचर्या अस्त-व्यस्त रहेगी। स्वास्थ्य विशेष सुन्दर और व्यक्तित्वमें आकर्षण शक्ति पैदा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं महत्वपूर्ण सिद्धि देने वाली होंगी। व्यापारमें आशातीत सफलता मिलेगी। समाज में मान-प्रतिष्ठा, जन-प्रियता, अदालती कामों में विजय और नवीन वस्त्र-सम्पदाओंकी प्राप्ति हो सकती है। खर्च पर नियंत्रण रक्खें, दुष्ट संगतिसे बचें, श्रेष्ठ जनों पर आस्था रक्खें, यही गुरु-बृहस्पतिका परामर्श है।

कन्या—गुरु महाराज रोग-ऋण व शत्रुकी वृद्धि करेंगे। नित्यकर्ममें बाधा पहुंचेगी। जलाशयके स्थानोंमें, या शीतल प्रान्तोंके भ्रमण से स्वास्थ्यकी खराबी उत्पन्न होगी। बाल-बच्चोंका सुख साधारण रहेगा। किसी मित्रकी विनोदी खुराफातसे कष्ट होगा। महिलाओंका पारिवारिक जीवन परेशानियोंसे परिपूर्ण रहेगा। प्रेम सम्बन्धमें असफलता, घरेलू प्रपंच तथा व्यर्थकी अदालती उलझनें यदि विशेष कष्ट दे रही हों तो आप सुन्दरकांड रामायणका नित्य पाठ चालू रखिये।

तुला—ता० १५ से अष्टमस्थ मंगल, परा-क्रमस्थ राहुको अपनी पूर्ण दृष्टिसे देखते हुए हानिकारी प्रभाव उपस्थित करेगा। धन और गृहस्थीके मामलोंमें कठिनाई उत्पन्न होगी। भाग्य कमजोर और मन उदास रहेगा। एक न एक चिन्ता घेरे रहेंगी। कुटुम्बमें क्लेश, स्वजनों से विरोध एवं भागीदारोंसे धनहानिकी आशंका है। राज्यपक्षसे अपयशके भागी बनेगा, तीसरा सप्ताह विशेष अनिष्टप्रद है। आप गोपनीय ढगसे ताम्रपत्रांकित विष्णु-यंत्रका पूजार्चन करें।

वृश्चिक—मंगल-राहु एवं गुरुका अशुभ प्रभाव मिलेगा। वायु विकार, खांसी, शीत ज्वरादिसे कष्ट होगा। परदेश यात्रा, विरोधियोंसे झगड़ा, राजभय-सर्पभय, उद्योग-धंधोंमें हानि होगी। परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। आमदनीमें कमी, परिवारसे अत्यधिक चिन्ता एवं अनपेक्षित दिशाओंसे परेशानियोंका सामना करेंगे। महिलाएं सामाजिक-रुचि हीनताका अनुभव करेंगी। विद्यार्थियोंका अध्ययन कार्य सामान्य रहेगा। सट्टे-लाटरीकी योजनाओंसे आकस्मिक लाभकी आशा छोड़ दें, उत्तरार्द्ध कुछ शुभफलप्रद है।

धनुः—गुरुके प्रभावसे पारिवारिक सुख और भाग्योदय होगा, छठें मंगल रोग-रिपुसे उद्धार करगे, पारिवारिक अभ्युदय होगा। धन लाभ होगा, मान-सम्मान मिलेगा। यात्रा

मेंलाभदायी योग रहेगा। आरोग्य, विजय, धन-वस्त्रादिका लाभ होगा। अधूरे कार्य सम्यक् आनन्दके साथ पूर्ण होंगे। रुका हुआ व्यापार चल निकलेगा। नौकरी वालोंकी पदोन्नतिका योग है। मित्रों एवं सहयोगियोंसे प्रत्येक कार्यमें अप्रत्याशित मददकी प्राप्ति होगी, किन्तु प्रातः सूर्यको जल दें, तथा रात्रिमें नवार्ण-मन्त्रका सहस्र-जप नित्य करना चाहिये।

मकर—धनस्थ गुरुका पदार्पण व्यापारोन्नति एवं द्रव्यार्जनमें सहायक है। यशस्वी कार्यमें रुचि बढ़ेगी। स्त्री-सन्तान-परिवार एवं मित्रोंसे सुखका अनुभव होगा। बिगड़े हुए स्वास्थ्यमें सुधार कुछ न कुछ तो अवश्य होगा, फिर भी वाहन-दुर्घटनासे सावधान रहना चाहिये। अतिथियोंका आगमन होगा, खर्च ज्यादा करेंगे, अनियन्त्रित खर्चसे विशेष परेशानीको भी देखना पड़ेगा। किसी किसी घरमें मंगलोत्सव अथवा नवीन सन्तानकी प्राप्ति भी हो सकती है। मनोरंजन-भ्रमणमें रुचि बढ़ेगी। महिलाओंको स्वास्थ्यका आनन्द न मिल सकेगा, तीसरे सप्ताहमें धोखेबाजोंसे सतर्क रहें।

कुम्भ—बृहस्पति महाराज आपकी राशि पर पधारकर भाग्योन्नतिकारक योग बनायेंगे, परन्तु ता० १५ से चतुर्थ मंगल कुछ उलझनें भी उपस्थित करेंगे, जिन पर थोड़ी कठिनाईके बाद आप विजयश्री प्राप्त कर सकेंगे। साधारणतः यात्राका अवसर मिलेगा और व्यापारमें विपरीत दिशासे लाभ होगा। नवीन पद अथवा महापुरुषोंका अनुग्रह प्राप्त होगा। आमदनी-खर्चका लेखा जोखा बराबर रहेगा। नौकरी वालोंकी स्थानान्तरके साथ पदोन्नति हो सकती है। पत्नी-संतान एवं अपने स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देना अच्छा रहेगा। विद्यार्थियोंका बौद्धिक विकास होगा। उत्तरार्द्ध में शत्रु परास्त होंगे।

मीन—गुरुका विपरीत प्रभाव प्राप्त होगा। ताम्र पत्रांकित श्री यन्त्रके नित्य पूजार्चनसे सफलता और अभीष्ट सिद्धि निश्चित है। अन्यथा मानसिक एवं शारीरिक व्यथा, सिर व नेत्रमें रोग, मित्रोंसे असुविधा कृषि व वाणिज्यकी हानि होगी। सुख एवं द्रव्यका अभाव रहेगा। उत्तरार्द्धमें बिगड़ी हुई स्थिति कुछ सुधरेगी। घरेलू प्रपंचोंमें खर्च-कर्ज और क्रोधकी अधिकता रहेगी। राजीनीतिक पुरुषों का शक्ति क्षय होगा, महिलाएं कुछ सुखी रहेंगी, अधिकसे अधिक देवोपासनामें तत्पर रहें।

चैत्र मासका राशिफल

(९ मार्च से ६ अप्रैल १९७४ तक)

मेष—व्यापार सामान्य चलेगा। नौकरी वाले सुखी रहेंगे। उच्चाधिकारियोंसे कुछ कार्य बनेगा। परिश्रम पूर्वक जीविका निर्वाह होगा। मनमें भावी उन्नतिके लिए अपचयकी भावना बनी रहेगी, परन्तु इसी बीच ता० २५ से अष्टमस्थ राहुका आगमन अशुभ प्रभाव देगा। इन्हीं समयोंमें शीत ज्वर, पेट-पैर और आंखोंमें कष्टकी संभावना रहेगी। मान-प्रतिष्ठा प्रारब्ध की हानि होगी। पुराने मित्रोंसे कलह और वैर-भाव बनेगा। घर-परिवारके सुखोंका अभाव रहेगा, विष्णुकवचका पूजन और नारायण कवचका पाठ करें।

वृष—पूरे मास तक दिनचर्या अस्त-व्यस्त

रहेगी। नौकरी वालोंको अनावश्यक अवकाश लेना पड़ेगा। व्ययकी रूपरेखा अनियंत्रित रहेगी। जहां तक आर्थिक लाभका प्रश्न है, वहां तो पूरी सफलता मिलेगी, परन्तु शनिके प्रभाव स्वरूप छिपे शत्रुओंके षडयंत्रसे बच पाना मुश्किल है। स्वास्थ्यके लिए सावधानी रक्खें, अन्यथा शीत प्रकोप, कमर व घुटनोंमें पीड़ा तथा उदर रोगोंसे आपका स्वास्थ्य कष्ट-युक्त रहेगा, अतः श्री हनुमानजीकी अराधना और शनि स्तोत्रका नित्य पाठ करें।

मिथुन—पूरे मास तक स्वास्थ्य एवं आत्म-विश्वासकी पुष्टताका आनन्द मिलेगा। अनावश्यक खर्चकी अधिकता रहते हुए भी अनपेक्षित दिशाओंसे पर्याप्त आमदनी होगी। नौकरी पेशे वाले तरक्की या स्थानान्तरणके योग प्राप्त कर सकेंगे। अभीष्ट सिद्धि, बौद्धिक विकास, दुश्मन पराजित होंगे। आतिथ्य सत्कार, ऋणभारसे आमूल-मुक्ति, तथा हृदयमें प्रसन्नताकारी प्रभाव उत्पन्न होगा। सम्पादक-प्रकाशक या अन्य लिखने पढ़ने वाले व्यक्ति भारी सफलता एव मान-सम्मान प्राप्त करेंगे।

कर्क—अष्टमस्थ सूर्य-गुरु खराब चल रहे हैं, ता० २५ से पंचम राहु भी भाग्यावरोधक होंगे। दिनचर्या व्यवस्थित नहीं रख सकेंगे। वाहन दुर्घटना, नेत्र व उदर रोगोंसे सावधानी आवश्यक है। सट्टा, जूआ एवं घोड़ेके रेसमें रुचि लेना हानिकर सिद्ध होगा। धर्म पर श्रद्धा की हीनता तथा अशुभ कार्योंमें प्रवृत्ति जगेगी। राजनीतिक महापुरुषोंकी कुर्सी खतरेमें पड़ सकती है, शनिकी शान्ति और सूर्य-गुरुका विशिष्ट (तांत्रिक) उपाय कराना आवश्यक है, खासतौरसे शुक्लपक्ष विपरीत प्रभाव देगा।

सिंह—ता० १४ से अष्टम सूर्य ता० २५ से चौथा राहु विशेष कष्टदायी रहेगा। मातृ-पक्ष, भूमि-मकान एवं स्वास्थ्य सन्बन्धी कठिनाइयोंका सामना करेंगे। आर्थिक लाभकी न्यूनाधिक आशा बनी रहेगी। अपने कठोर परिश्रमके बल पर उद्योग-व्यवसायमें लाभान्वित हो सकते हैं। विद्यार्थियोंको बुद्धि जड़ता का सामना करना पड़ेगा। आपका मस्तिष्क विविध दृष्टियोंसे स्वार्थपरायणतामें आकृष्ट रहेगा। ता० १७ मार्चसे २९ मार्च तक पाकिट मारोंसे धोखेबाजोंसे और प्रपंचियोंसे सतर्क रहिये।

कन्या—मासफल उत्तम है। भाग्यवृद्धि और आर्थिक सफलता मिलेगी। खर्चकी स्थिति ज्यादा रहते हुए भी मान-प्रभाव अच्छा रहेगा। पुरुषार्थ बल व पराक्रम बढ़कर अभीष्ट कार्यो में सिद्धि प्राप्त होगी। रोजी-धन्धोंमें उत्तम प्रभाव दृष्टिगोचर होगा। स्वाभिमानकी सुरक्षा में सफलता मिलेगी। विद्यार्थियोंका बौद्धिक-विकास होगा, महिलायें स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगी। आकस्मिक यात्राके चांस सफलीभूत होंगे। शासनसे सम्बन्धित नेता वर्ग विशेष मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। चौथा सप्ताह स्वास्थ्यमें बाधक है।

तुला—रोजमर्राके कामोंमें आप सफल रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, शरीरमें स्फूर्तिपन का संचार होगा। अनिच्छित द्रव्यकी प्राप्ति होगी। आतिथ्य-सत्कार पर व्ययकी अधिकता रहेगी। स्त्री-पक्षसे सुखकी प्राप्ति होगी। व्यापारिक प्रगतिसे कुछ भाग्यशाली लोग लाखों रुपयेका उलट-फेर कर डालेंगे, परन्तु तृतीयेश-षष्ठेष पंचमस्थ गुरुका होना शुभ नहीं

माना जाता. रोग-ऋण व रिपुसे परेशानी हो सकती है। इसलिए आप गुरुवारका व्रत, गुरुका दान, गुरुमंत्रका जप और पीले-वस्त्र-पदार्थोंका उपयोग करें।

वृश्चिक—ता० १४ से पंचम सूर्य और ता० २५ से जन्मस्थ-राहु. सप्तमस्थ केतु विपताओंके घेरेमें डालेंगे । नित्यकर्म अव्यवस्थित रहेगा। उदर-शीत-वायु-ज्वरजन्य पीड़ा की संभावना रहेगी । बने-बनाये कामोंमें विघ्न उत्पन्न होगा । मनमें दीनता और नैराश्यकी भावनाएं जगेंगी । सट्टे-लाटरीसे दूर रहें तो अच्छा है। लाख कोशिश करने पर भी घरमें सुख-शान्ति नहीं बना सकेंगे । यात्रा न करे, कष्ट होगा। श्रीमंत्रका नित्य पूजार्चन व ध्यान करें, तथा 'दुर्गाकवच' का नित्य पाठ करें तो कल्याण होगा।

धनुः—इस मासमें अनियंत्रित व्यय होंगे, स्वास्थ्य मामान्य रहेगा। सहयोगियोंसे झगड़े-झंझट तथा मानसिक रोगोंसे परेशानी होगी। आपका मनोबल छिन्न-भिन्न रहेगा । शत्रु परास्त होंगे। यदि जन्मपत्रीमें कोई अनिष्टप्रद दशा चल रही हो तो गुप्त शत्रुओंसे निश्चित सावधानी रक्खें, क्योंकि ता० २५ के बाद राहुका विपरीत प्रभाव प्राप्त होगा । घरमें मेहमानोंका आगमन होगा । विश्वासपात्रोंसे धोखा, भोजन-शयनमें अबेर-सबेर व मिथ्यापवादकी आशंका है। शुक्रवारका नियमित व्रत रखना चाहिये।

मकर—अपने व्यवस्थित दिनचर्यासे संतुष्ट रहेंगे। खर्चकी अधिकता रहेगी, शरीरमें बल और मनमें उत्साहका संचार होगा। व्यापार लाभदायी रहेगा, फिर भी नवीन उद्योगकी स्थापना या चालू व्यवसायमें पूंजी बढ़ानेकी चेष्टा हानिकारक सिद्ध होगी। अपनी पत्नीके गंभीर स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना अ वश्यक है। साधारण श्रेणी वाले अपने कठोर परिश्रम से भी दो वक्तकी रोटीका इन्तजाम नहीं कर सकेंगे और धनी व्यक्ति लाभका अवसर गवाँ बैठेंगे।

कुम्भ—आपके रोजमर्राका काम बहुत सुन्दर ढंगसे चलता रहेगा। स्वास्थ्य सुधरेगा, मनोबल ऊंचा होगा, साहस-उत्साह और आत्म-विश्वासके बल पर अभीष्ट कार्योंमें सफलता प्राप्त करेंगे । कदाचित् धर्मपत्नी जी से सैद्धान्तिक मतभेदकी संभावना रहेगी । कृष्ण-पक्षकी अष्टमीके बाद मनोरंजन व आमोद-प्रमोदके अच्छे अवसर मिलेंगे । पूजा-पाठमें भक्ति बढ़ेगी। विद्यार्थियोंका बौद्धिक विकास एवं महिलाओंको गृहस्थीका सम्यक् आनन्द मिलेगा । विशेष कामनाओंकी सिद्धिके लिए श्रीकाशी-प्रयाग-गया आदि तीर्थ स्थानोंमें नव-रात्रिमें नौचंडी प्रयोग करना श्रेष्ठतर होगा।

मीन सूर्य, गुरु एवं केतुकी स्थिति ठीक नहीं है। व्ययाधिक्यके कारण मानसिक अशान्ति दिमागी कार्योंमें बाधा पहुंचेगी। स्वाभिमानकी रक्षा नहीं हो सकेगी। धन और गृहस्थी-सुखके मामलेमें कमजोरी रहेगी । भाग्योन्नतिमें विविध उपद्रवोंका सामना करना पड़ेगा। अव्यवस्थित जीवन, रोग-भय, रोजी-रोजगार में गड़बड़ी, नौकरीमें उच्चाधिकारियोंसे मतभेद होगा । मंगल-यंत्रका नित्य पूजार्चन करना चाहिये और अपने राशीश गुरुदेवकी खूब उपासना करनी चाहिये, तब जाकर परि-स्थितियों पर काबू प्राप्त कर सकेंगे।

त्रैमासिक व्यापारिक भविष्यफल

[लेखक :— श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त साहित्य विशारद]

माघ मास

बदी १ बुधवारी है। अतः तीन मास तक अन्न तेज हो तथा आगामी वर्ष भी अशुभ हो। साधारणतया "प्रतियत्सर्व मासेषु बुधे दुर्भिक्ष कारिणी" हर एक मासकी बुधवारी एकम् दुर्भिक्ष करती है। परन्तु माघकी तीन मास तक तेजी रखती है। इस पक्षमें अनाज, घी, तेल गुड़ खाण्ड आलू प्याज गोभी, बैंगन अदरक आदि शाक सब्जी दालें और हल्दी सोंठ जीरा आदि मसाले सभी खाद्य पदार्थ तेज रहेंगे। योग और नक्षत्रका क्षय तेजीको स्पोर्ट देंगे।

बदी ४ का क्षय—तीन दिनके अन्दर एक मन्दीका झटका लाएगा। विशेषकर उर्द मूंग अरहर घी मन्दा होगा। आज ही भरण्यां भौम: सोना, चांदी धातुएं तेज, रुई मन्दी करेगा बदी ६ रविवारी गल्ला तथा रस पदार्थोंको तेज करेगी। आज रात्रिमें मकर संक्रांति है। गल्ला मन्दा और घी तेलमें तेजी होगी। परन्तु रविवार होनेसे अन्न मंदा नहीं होगा। घीके व्यापारियोंको संक्रांतिके आस पास मन्दीके झटकोंमें घीका स्टाक कर लेना चाहिये। आगे लाभ होगा।

यहां पर सूर्य बुध गुरु शुक्रका योग घात योग बन गया है। इसमें चारों ओर धूल उड़ती है परन्तु बुध अस्त और शुक्र वक्री होनेसे योग कमजोर हो गया है।

ता० १८ जनवरी, श्रवणे बुध: गुड़, अलसी, धान्य, चनेकी खेतीमें सरदीसे हानि हो सकती है। २० जन० को ज्येष्ठा वृद्धि, चन्द्रमा पर भौम दृष्टि होनेसे गल्ला तेज होगा अमावस्या बुधवारी तेजीकारक है श्रवणे रवि, भी गल्ला तेज करेगा। गेहूंमें विशेष तेजी होगी।

ता० २२ को वक्री शुक्र पश्चिममें अस्त होगा। मकरमें पांच ग्रहोंका योग घोर वर्षा अथवा युद्धकारक होता है। (बुध-शुक्र अस्त होनेसे योग कमजोर हो गया है)।

सुदी १ गुरुवारी सुभिक्षकारी है। मन्दी का रियक्शन लाएगी। अतः सोना चांदीतिलहन रुई मन्दी। २५ जनवरी चन्द्र दर्शन, सोना, चांदी, रुई घटबढ़से तेज। २६ को पूर्वमें शुक्र उदय होगा। युद्धकारक है। राक्षसगणमें उदय होनेसे गुजरातमें भय, धनका नाश, रेशमी कपड़े नारियल तेज, किसी श्रेष्ठ व्यक्तिकी मृत्युसे तीन दिन हड़ताल, सिन्ध देशमें उत्पात। परन्तु शुक्र वक्रदशामें उदय होनेसे फल भी वक्र (विपरीत) हो सकता है। आज ही इसलामी सन १३६४ आरंभ होगा। गुर्राका मालिक शनि होनेसे मुसलमानी देशोंमें प्रजाको पीड़ा राजाओं पर संकट, चोरी, डाके, हत्याकाण्ड, रोग युद्ध दुर्भिक्ष आदि अनिष्ट फलकारक है। सुदी ३ शनिवारी भी युद्धकी सूचना देती है। सोमवारी ५ (वसन्तपंचमी) सुभिक्षकारी है। आज ही बुधका + उदय अनाबृष्टि दुर्भिक्ष और गायोंमें रोगकी सूचना देता है। २९ को कुम्भे बुध: गुड़ खाण्ड तिलहन घी तेल मन्दा। माघ सुदी ८ को कृत्तिका नहीं फागुनमें जौ गेहूंकी

फसलको रोली (एक लाल रंगका कीट) लगेगी । सुदी १० तिलहन, लोहा जस्ता मशीनरी बारदाना तेज । सुदी ११ को गुरु अस्त होगा । उर्द तथा तिलका भाव मन्दा होगा । रुई कपास मन्दीका योग है। वैधृति योग क्षय, घी तेज होगा । ता० ५, धनिष्ठाका सूरज, धातुएं, तिलहन रुई नमक तेज । पूर्णिमा का क्षय, तेजीकारक है । मघा नक्षत्रका अभाव आगामी मासमें अन्न तेज करेगा ।

फाल्गुन मास

बदी १ गुरुवारी सुभिक्षकारी है। दूजको कृत्तिकाका भौम देशमें हलचल और तपस्वियों को पीड़ा हो । चाँदी, चावल, कपड़ा सरसों, तेल, घी, गेहूँ, मूंग-मोठ आदिमें तेजी होगी । कुंभे गुरु—वर्षा कम, दुर्भिक्ष तथा पूर्वीय देशोंमें तेजी । यह फल २० जुलाईसे २० सितम्बर सन १९७४ तक होगा । नोट करलें । बदी ३ शनिवारी तेजी करेगी । बदी पंचमीको चित्रा तथा ६ को स्वाती होनेसे घटबढ़में बाजार चलेगा । आज ही कुंभ संक्रांति है घोर तेजीकारक खपर योग बनता है । मंगलवारी संक्राति युद्धकारक भी है। ता० १४ शुक्र मार्गी, गुड़ नारियल, अलसी, सरसों तेज होकर मन्दी । १५ को वृषे भौम—अन्न, चन्दन, केशर कपड़ा रुई कपास तेज । सोना चांदीमें अच्छी तेजी होगी । १७ को वक्री बुध पश्चिममें अस्त होगा सोना, चाँदी, रुईमें तेजी होगी । १९ को शत० रवि तेजीको स्पोट देगा । अमावस्या शुक्रवारी मन्दी कारक है ।

सुदी १ भोग्यानुसार जितनी घड़ी शतभिषा नक्षत्र हो उतना ही संवत् हो । ५० घड़ी के लगभग शतभिषा मन्दीकारक है । परन्तु पक्षके आदिमें शतभिषा गल्ला तेज करता है । इस कारण घटबढ़ जोरदार होगी । आज ही चन्द्रदर्शन होगा । एक मासमें किसी राज्यमें मंत्रीमण्डल भंग होगा । और गल्ला तेज होगा सुदी ३ सोना, चांदी, कांसी, पीतल, रुई, कपास सूत सन मन्दा । २८ को शनि मार्गी बाजारकी लाइन पलटेगी । रुई मन्दी होगी रुईके व्यापारियोंको रुई बेचनी चाहिये । दो मास पीछे तिलहनमें तेजी आएगी । सुदी ७ को कृत्तिका नक्षत्र मन्दीकी सूचना देता है । सुदी ८ को रोहिणी नक्षत्र है—

यह योग आते ही अनाज मन्दा होता है और बादमें घोर तेजी आती है । परीक्षित योग है । शनिवार होनेसे और भी तेजीकी आशंका है । नौमीको पूर्वमें बुध उदय होगा । बुध १४ दिनमें उदय हुआ है । अस्तकालमें रुई, सोना, चाँदी, पाट, बारदाना गुड़ और अनाजमें जो तेजी थी वह समाप्त हो जायेगी । १० को गुरु उदय होगा । अतः अगर जो तेजी का रियक्शन आएगा । फिर भाव गिर जायेंगे । सुदी ११ का क्षय तीन दिनके अन्तर्गत सभी वस्तुओंमें तेजीका झटका आएगा नक्षत्र तथा योगका क्षय घटबढ़ करेगा । पूभायां रवि, रुई रेशम सोना, चांदी, ताम्बा तेज करेगा । ५ मार्च रोहिणींका भौम रुई कपास सूत गुड़ खाण्ड, रेशम हींग लालमिर्च तिलहन तेज करेगा । शुक्रवारी पूर्णिमा मन्दीकारक है । पू०फा० नक्षत्र आगे मन्दी करेगा ।

चैत्र मास

बदी १ शनिवारी तेजीकारक है । तीजको बुध मार्गी होने पर लाइन पलट जायेगी ।

सोना, सूत, सन, सोंठ चांदी लाख चपड़ा तेज होगा। बदी मंगल तथा बुधवारी है। घी तथा गेहूंका भाव तेज होगा। किसी आचार्यके मतसे घी मंदा होगा। मीन संक्रांति गुरुवारी मन्दी कारक होती है, परन्तु तीसरे वारमें होनेसे अनाज कपास, तिलहन सोना चांदी कांसी ताम्बा नमक मिर्च हल्दी धनिया तेज होगा। १: मार्च लोहा जस्ता तिलहन, मशीनरी बारदाना तेज, रुई मन्दी। १९ को ऊ.षा० की वृद्धि अनाज तथा रसपदार्थ गुड़ खाण्ड तेल घी मन्दे। शत० बुधः सोना चांदीमें अच्छी मन्दी तथा वर्षा हो। २१ को अन्न गुड़ खाण्ड आदि रसपदार्थ मन्दे होंगे। अमावस्या शनिवारी तेजी करेगी। आज आठ दिनकी तेजी लगादें। धनिष्ठाका शुक्र गेहूं मन्दा तथा सोना, चांदी रुई कपास चावल, मूंग मोठ जुवार बाजरा तेज करेगा।

सुदी १ नवीन संवत् २०३१ आरंभ, वर्ष का राजा सूर्य है।

सुदी २, रुई मन्दी, अन्य वस्तुओंमें, घट बढ़ रहेगी। आज ही चंद्रदर्शन होगा—"जो शशि ऊगे सोम शनि ए अचम्भो।" जिय जोय। छत्र पड़ै दिन तीसमें अन्न जु मंहगो होय।" गत मासमें शनिवारको चंद्रोदय हुआ था। २६ मार्चको बाजार मन्दीमें खुलेगा, बादमें चांदी रुई, कपास कपड़ा आदि तेज। २८ मार्च चांदी, रुई सूत, सन, अनाज मन्दा, रात्रिको मृग० भौमः रुई और चांदीमें अचानक तेजीका झटका लायेगा। अच्छी तेजीकी आशा है। पहिले मन्दीमें खरीद कर रखें। ३० मार्चको कुंभे शुक्र होने पर 'गुरु-शुक्र' राशियोग होगा।

गुरु शुक्रो यदै कत्र चैत्रमासे व्यवस्थितौ।
तैलाज्य तिल सूत्राणां संग्रहे च कृते शनि॥

चैत्रमें गुरु शुक्रका संयोग हो तो तिल तैल तिलहन घी सूत्र आदिका संग्रह करनेसे दो मास में लाभ होता है। वर्षायोग भी है। अन्न मन्दा। घी तिल तेल सूत कपासका भाव मन्दा रहेगा। ३१ मार्च, रेवतीका सूर्य, चावल, चांदी चपड़ा रुई नमक, मोती, लाख, सज्जी गल्ला तेज। आज ही पूभायां बुधः सोना, चांदी, ताम्बा लोहा आदि धातुएं धान्य मन्दा। प्रजामें सुख शांति। ता० २ अप्रेलको रुईमें अच्छी तेजीकी आशा है। सुदी त्रयोदशीका क्षय तेजीका झटका लाएगा। शनिवारी पूर्णिमा तेजी करेगी। चैत्रमें प्रतिवर्ष सभी वस्तुओंके भावोंमें घटाबढ़ी होती है। अतः बाजारका रुख देखते हुए काम करना चाहिए। गुरु शुक्रका योग वर्षा अथवा युद्धका कारण भी बन जाती है।

शकुन विचार

माघ

माघ बदी दोयज तथा, तीज बृहस्पतिवार।
उत्तम वर्षा शांति सुख बढ़ै मंगलाचार॥
माघवदी छटको अगर निर्मल दिशि आकास।
लाभेच्छुक व्यापारियों संग्रह करो कपास॥
माघी पूनमको कभी बादल छवै अकास।
संग्रह करो अनाजका लाभ सातवें मास॥

फाल्गुन

कृष्णपक्षमें तिथि बढ़ै शुक्लपक्ष घट जाय।
सभी वस्तुएं तेज हो सस्तापन हट जाय॥
होली जलनेके समय यदि बादल हो जाय।
जो गेहूं रोली लगै मंहगे भाव बिकाय।
फागुन शुक्ला सप्तमीको कृत्तिका नक्षत्र।
भादव मावसके दिवस वर्षा हो सर्वत्र॥

सच्ची कहानी —

ग वा ह

[लेखक :—श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त साहित्य विशारद]

[यह कहानी नहीं, सत्य घटना है जो सन् १९२२ ईस्वीके आषाढ़ मासमें घटी थी। उस समय कई पत्रोंमें इसकी चर्चा हुई थी। कहानीको रोचक बनानेके लिये कुछ कल्पनासे भी काम लिया गया है। 'बिहारीजी' के अतिरिक्त सब नाम भी कल्पित है।

—लेखक

(१)

सैठ सम्पतराय, ने बैठकके आगे एक अजनबीको बैठे देखा।

अजनबीने जय राधेश्याम कहते हुए सेठ जी का अभिवादन किया।

लापरवाहीसे राधेश्याम कहते हुये सेठजी बोले—क्यों बैठे हो तुम यहाँ ?

सेठजी मुझे रुपयोंकी जरूरत है। मैं आप से ऋण लेनेके लिये आया हूँ।

मैं श्रीद्वारिकाधीशके दर्शन करने जा रहा हूं, आकर जवाब दूंगा। कहते हुए सेठजी आगे बढ़ गये।

अजनबी भी उनके पीछे पीछे हो लिया। सेठजी ठाकुरजीके दर्शन करके वापिस चल पड़े। परन्तु वह अजनबी कीर्तनमें बैठ गया। उसका मन कीर्तनमें लग गया। मंदिरके पट बन्द होने पर वह सेठजीके मकान पर गया तो पता लगा सेठजी भोजन करके शयन कर रहे हैं। बिचारा अजनबी अपनी भूल पर पछताता हुआ बैठा रहा। जागने पर सेठजीने बैठकमें बुलाकर पूछा। भाई ! तुम्हें रुपयोंकी जरूरत है और मैं तुमको जानता भी नहीं। इसलिए तुम जेवर गिरवी रखकर रुपये ले जा सकते हो। अच्छा तुम्हें कितने रुपये लेने हैं ?

"मुझे ५००) रुपयोंकी जरूरत है सेठजी !"

"एक अनजानको इतनी मोटी रकम कैसे दी जा सकती है ?"

"मैं धर्मसे कहता हूं आपकी रकम ब्याज समेत अदा कर दूंगा।"

अरे बावरे ! इस जमानेमें धर्म-कर्मको कौन पूछता है ? हंसते हुए सेठ जी कहने लगे।

सेठ जी मेरा काम चलाओ कहते हुए उसने हाथ जोड़ लिये। "तुम्हें ज्यादा ही जरूरत है तो जेवर गिरवी रख जाओ और रुपये ले जाओ, तुम्हारे काम चलानेका एक यही मार्ग है।" मुंह लटकाता हुआ वह बोला —"मेरे पास जेवर होता तो मैं उसे बेचकर ही काम चला लेता।"

'फिर हवा खाओ रुपये नहीं मिलेंगे' हां ! जमीन जायदाद हो तो भी काम चल सकता

चैत्र

एकम लागत चैतको वर्षा बादल गाज।
सावन भादवमें नहीं फिर वर्षाका काज।
चैत बदी पांचै दिना मंगल या बुधवार।
गेहूँ अरु घीमें चलै तेजी बारम्बार॥
चैत सुदी सातैं दिना यदि वर्षा हो जाय।
तो फिर वर्षाकालमें वर्षा होगी नांव॥

है। सेठजीने कहा।

जमीन तो नहीं है। बुजुर्गोंकी बनवाई हुई एक दुमंजली पक्की हवेली है।

तो फिर उसे देखे बिना कुछ नहीं कह सकता, कल मुझे अपनी हवेली दिखाना।

दूसरे दिन सेठजीको लाकर हवेली दिखाई गई। हवेलीको ऊपर नीचे, बाहिर भीतर सब तर्फ देखकर सेठजीने ५००) रुपये देनेकी स्वीकृति दे दी।

परन्तु एक बात है भाई ! सेठजी कहने लगे यह हवेली तुम बेच क्यों नहीं देते ?

मैं इसीमें रहता हूं। रहनेके लिये दूसरा मकान भी नहीं है। और फिर पूर्व पुरुषावों द्वारा विरासतमें मिला हुआ मकान बेचना भी मैं ठीक नहीं समझता।

अच्छा तो कल आ जाना और तहसीलमें चलकर हवेली आड़ रहन कर देना।

दूसरे दिन उसने तहसीलमें जाकर हवेली आड़ रहन कर दी। और अर्जीनवीससे एक तमस्सुक लिखाकर सेठजीको दे दिया। ५००) लेकर अपने घर आ गया। मुहल्ले वालों पर यह भेद खुला तो भाँति-भाँतिकी चर्चा करने लगे।

(२)

"यमुनामें ऐसी भयंकर बाढ़ हमने तो कभी नहीं देखी ?"

"सुना है आसपासके कई गांव पानीमें बह गये।"

"पुलके पास जाकर देखो, पानी खतरेके निशानसे कितना ऊपर चढ़ गया है।"

और मनचले दिलेर आदमी, जानकी बाजी लगाकर प्राणियोंको बचा भी रहे हैं।

"फसले भी नष्ट हो गई हैं।"

जहां तहां यह चर्चा चल रहा था। इधर वृन्दावनके बाजारोंमें पानी बढ़ता जा रहा था। लोग अपना सामान बचानेके लिये दौड़ धूप कर रहे थे।

भक्तरामने भी अपना सामान, ऊपरकी मंजिल में पहुँचाया, और भागता हुआ पन्नी पनसारी की दुकान पर पहुंचा। उसकी दुकानका बुरा हाल है। हल्दी, मिर्च, धनिया, जीरा, खोपरा, छुहारा, सुपारी कत्था आदि किराणाकी अध-खुली बोरियां पानीसे तर हो गई हैं। पन्नी लाल उन्हें शीघ्रतासे उठा रहा है।

भक्तरामको देखते ही त्योरी चढ़ाकर बोला, आज इतनी देरमें तू आया है। क्या तुझे बाढ़की खबर नहीं ? सारा माल खराब हुआ जा रहा है। चल, इन बोरियोंको पीठ पर लादकर ऊपरकी गैलरीमें पहुँचा।

भक्तराम चुप चाप अपने काममें लग गया। आज भक्तरामको दुपहरमें भोजन करने का अवकाश भी नहीं मिला। रातको भक्त राम घर आया, भोजन किया, तब तक उसका चाचा हर सहाय, जो एक दुकान पर मुनीम था, आ गया। वह बोला मैंने तो, दुकानमें पानी आनेका ढंग देखते ही, सारी बहियां और कागजात बाँध कर अलमारीके ऊपर रख दिये, काम कुछ नहीं किया। दिनभर खाली बैठा रहा।

ताऊ देवीसहाय कह रहा था "बाढ़के कारण आज बाजारमें किसानोंका माल आया

ही नहीं। मैं तुलाई किसकी करता ? घर चला आया।"

"भगवान्‌की कृपासे पूर्व पुरुषोंने पुख्ता मकान बनवा दिया था तो आज हम सुख पूर्वक रह रहे हैं। वरना गरीबोंके झोपड़ोंको देखो कितना बुरा हाल है ?"

छः मास पीछे ही गंगा जमुनाके समीप-वर्ती इलाकोंमें बहुत जोरसे ज्वरका प्रकोप हुआ कोई कहता था बाढ़के कारण मच्छरोंकी अधिकतासे ऐसा हुआ है, कोई कहता यूरोपमें जरमनीकी लड़ाई में जहरीली गैसें छोड़ी जाती हैं उसके कारण ऐसा हुआ, जितने मुँह उतनी बातें।

बाढ़की तबाहीमें भक्तरामको ऐसी परे-शानी नहीं हुई जैसी अब हुई। कारण, उसके माता पिता इस बीमारीमें चल बसे। उनको मरे हुये अभी छः महीने भी नहीं हुये थे कि उसके चाचा, चाची, ताऊ ताई विधवा फूफी भी काल का कलेवा हो गईं। उनका परिवार सुखी परिवार था। जो कम आमदनीमें भी सन्तोषपूर्वक गुजारा करता था।

यही नही, कुछ समय बाद भक्तरामकी धर्मपत्नी "नारायणी" भी चल बसी, पत्नीका दुःख ताजा ही था, एक मात्र चार सालका पुत्र भा भगवान्‌ने छीन लिया। भक्तराम अकेला रह गया, एक दम अधीर हो उठा। परन्तु भगवान् जो कुछ करता है अच्छा ही करता है। यह समझकर भक्तरामने सन्तोष कर लिया। परन्तु उनकी रोगचर्या, दवा-दारू अन्त्येष्टि आदिके खर्चमें कमर टूट गई। आदमी आदमी का ऋणि हो गया।

× × ×

"भाई! भक्तराम तुमने हमारे बीस रुपये आज तक नहीं दिये !"

"अभी मेरे पास तंगी है। दूंगा जरूर दूंगा।'

क्या धूल दोगे ? चार पांच दिनके लिये' लिये थे, आज पांच महीने हो गये। शर्म नहीं आती।' तब तक एक और महाशय आ धमके। और बाहिरसे ही पुकारने लगे। 'अरे ओ ! भक्त ! रुपये देता है या दूसरा उपाय करूं ?'

"मैं अब तो अपने काम पर जा रहा हूं लाला नाराज होगा।" भक्तरामने कहा।

'मैं लाला वालाको कुछ नहीं जानता कहते कहते हुये उसने भक्तरामका हाथ पकड़ लिया, मेरे रुपये दो तब जाने दूंगा।' भक्तरामने उसके चरणों पर सिर रखकर कसम खाई मैं आपके रुपये जल्दी ही दे दूंगा।

भक्तराम उस व्यक्तिसे पीछा छुड़ाकर दुकान पर पहुंचा ही था कि एक सज्जन दुकान पर आकर पन्नीलालसे बोले, लालाजी तुम्हारे भक्तकी ओर मेरे दस रुपये हैं। इस महीनेकी तनखा, इसे न देकर मुझे देना, भक्तजी अपने लालासे कहो तनखा मुझे दे।

भक्तरामने सौदा पकड़ाते हुये—खड़े-खड़े हां तो कर ली। परन्तु उसका दिल बैठ गया। तभी सुखवा कहारने आकर २) का सौदा तुलवाया और कहा लालाजी यह रुपये भक्तके नाम लिख लेना, इसकी पत्नीकी अन्त्येष्टिमें, मैंने पानी भरा, बर्तन मांजे और और काम किये, परन्तु मेरी मजूरी आज तक नहीं मिली।

लालाने आवेशमें आकर कहा। मैं इसके कर्जका जुम्मेवार नहीं हूँ कुल ८) तनखा लेता

सन १९७४ का व्यापार दिग्दर्शन

[लेखक :—श्री ओंकार प्रसाद दैवज्ञ ज्योतिष शास्त्री]

जनवरी १९७४ में पांच सोमवार और पाँच मंगलवार तथा पौषकी अमावस्या सोमवारी मूल नक्षत्रमें इसी दिन सूर्य ग्रहण होनेसे मार्केटोंमें विशेष चहल पहल होगी और भर तेजीमें घी तेलमें जोरदार मंदी आवेगी। जनवरीमें वक्री भृगु, ता० ६ को होने पर रुई चांदी बिनौलामें और रसकसमें जोरदार मदी आयेगी, महीनेके अंतमें गुड़ आदि खाद्य पदार्थोंमें तेजी आयेगी, क्योंकि मकर सक्रांन्ति १४ जनवरीको सोमवारी ३० मुहुर्ती और पश्चिममें अस्तः भृगु होने पर पहिले मंदी बादमें तेजीके योग बन जायंगे वर्षा और ओले से सर्द हवा जोरदार चलेगी।

फरवरी १९७४ ई० में पश्चिमास्तं गुरुः होते ही जोरदार तेजी तेल घी और अनाजोंमें आयेगी। बुध व्यापारादि सुपीरियर चाल चलनेसे चना गेहूँ मक्कामें जोरदार तेजी करेगा, बीच बीचमें वायदेसे सट्टेमें मंदीके रियक्शन आयेंगे।

मार्च १९७४ ई० में २ मार्चको शनि मार्गी होने पर पहिले तो मंदी खाद्य व तेलोंमें आयेगी लेकिन उदय गुरुः जब ४ मार्चको होगा तो घी तेलमें पहिले तो मंदी आयेगी उसके बाद मिट्टीसे लेकर सोने तककी तमाम वस्तुएं तेज होंगी और अच्छे चांस तेजीके सम्पन्न होंगे क्योंकि मार्चके महीनेमें चैत्रका महीना पांच शनिवारसे संलग्न होनेसे खाद्य पदार्थोंमें विशेष रूपसे चना बाजरा मक्का गेहूंमें जबरदस्त तेजी आयेगी। वायदेमें जोरदार चांस रुई चना बिनौला तेल आदिमें सम्पन्न होंगे।

अप्रैल सन् १९७४ ई० में वैशाखका महीना पांच सोमवारसे संलग्न रहेगा, इसीलिए गल्लेमें जोरदार मंदी आयेगी, इसके अलावा बुध सूर्यसे आगे जब चलेगा तो जोरदार तेजी सरसों अरंडा सींगदाना आदिमें आयेगी और जूटपाट बारदाना विशेष तेज होगा। चांदीमें मेषकी संक्रान्ति १४ अप्रैलसे जोरदार तेजी करेगी और २८ अप्रैलके बाद रुईमें मोटी तेजी चमकेगी लेकिन गेहूँ चना जौ मटर आदि का स्टाक इस महीनेमें भूलकर भी न करें, क्योंकि इस महीनेमें कभी भी मोटी मंदी आ सकती है।

मई सन् १९७४ में जेठका महीना ५ मंगलसे संलग्न रहेगा। इस महीनेमें जोरदार मांग अनाजोंकी दक्षिण प्रान्तोंसे होगी, जिस कारण अनाजोंके भाव पुनः भड़केंगे। सोना चांदीमें जोरदार आखीरी तेजी, पीतल तांबे आदिमें भी आयेगी और वृषकी संक्रान्ति १४

है, दुनिया भरका कर्ज कर लिया है। भक्तराम ! मैं तुम्हें चार दिनका अवकाश देता हूँ चार दिन तक सबका ऋण चुकाकर दुकान पर आना। कर्ज न चुका सको तो मत आना, पांचवें दिन मैं किसी और को नौकर रख लूंगा। लाचार होकर भक्तरामने अपनी पक्की हवेली मथुराके सेठ सम्पतरायके आड़ रहन रखकर सबका ऋण चुका दिया।

मईको लगते ही तिलहन तेल सरसों आदिमें जोरदार तेजी आयेगी । जूट पाट बारदानेमें आखीरी तेजी इस महीनेमें आयेगी । २६ मई पर कर्कका मँगल आनेके साथ ही तेजीके भाव पीछेको हटने लगेंगे और मंदीका श्री गणेश होगा ।

जून सन् १६७४ में आषाढ़का महीना ५ बुधवारसे संलग्न होता हुआ बीदमें तिथि वृद्धि और मिथुन संक्रांन्ति बैठेगी इसलिए अनाजोंमें पुन: मंदीका एक दौर आयेगा विशेष रूपसे लगते महीने तो तेजी शुरु होंगी । क्योंकि शनिका अस्त गुड़ आदिमें जोरदार तेजी कारक है । १६ जूनको वक्री बुध, ता० २० जूनको बृषे शुक्र और २१ जूनको बुधास्त, पश्चिममें जूटपाट बारदाना और हैशियनमें तथा रुईमें ऊंचे भाव एक दम गिरने लगेंगे । चांदीमें मोटी मंदी लेकिन सोनेमें कम, साथ ही अन्य धातु पदार्थ मन्दे होंगे, जूनके लास्ट हफ्तेमें ग्रीष्म ऋतुकी वस्तुओंका स्टाक करना चाहिये ।

जुलाई सन् १६७४ ई० में श्रावणका महीना पांच शुक्रवारसे संलग्न मंदीकारक लेकिन पांच ही शनिवार भी हैं, इसीलिए वायदे सट्टे मार्केटोंमें न ऊंची तेजी न नीची मंदी आयेगी, बल्कि मार्केट तेल तिलहन आदिके सम पड़े रहेंगे, लेकिन बारदानेमें जोरदार मंदी आयेगी । ता० ५ जुलाईसे पहिले जिन वस्तुओं में जोरदार तेजी आयेगी उनमें डबल मंदीका चांस ६ जुलाईसे प्रारम्भ होगा । ता० १० और १४ जुलाईसे बुध उदय और मार्गीका संक्रमण चांदीकी लाइनको पलट देगा । लेकिन तेल तिलहन आदिमें और हल्दी आदि पंसारकी कुछ वस्तुओंमें तेजी चमकेगी । ता० १६ को कर्क संक्रांन्तिके असरसे सोनेमें जोरदार मंदी आकर फिर आखीर जुलाईमें तेजी आरंभ होगी ।

अगस्त सन् १६७४ में भादोंका महीना ५ इतबारसे संलग्न होनेसे और बुधका अस्त ५ अगस्तको होनेसे सभी वस्तुओंमें मोटी मंदी मीठे या तेलमें और बोरी बारदानेमें आयेगी । जन्माष्टमी इस महीनेमें ता० ११ को इतवारके दिन होने पर पहिले तेजी बादमें चना गेहूं बिनौला आदिमें मंदी करेगी । चन्द्र-दर्शन सोमवारी ता० १६ अगस्तको होनेसे चादी सोनेमें अगर पूर्व तेजीका रियक्शन आ लिया होगा तो एक जोरदार तूफान मंदीका आ सकेगा । लेकिन २५ अगस्तके बाद तिलहन तेलमें खासतौरसे सरसों अरंडा सींगदानामें तेजी भड़क उठेगी । सिर्फ घीके भाव मंदे रहेंगे ।

सितम्बर सन् १६७४ ई० में दूसरा भादोंका महीना पांच सोमवार और पांच ही मंगलवार से युक्त होगा और कन्याकी संक्रान्ति सोमवार को चन्द्रदर्शन मंगलवारको और बुध सुपीरियर गतिसे चलेगा इसलिए सरकारी अफवायें उड़ेंगी कि लाइसेंसदार स्वर्णकार और जौहरियों की आभूषणकी खरीद पर नियन्त्रण होनेकी संभावनासे सोने चांदीके भाव घटेंगे और डालर की स्थिति सुधरेगी । विशेष रूपसे अफ्रीका व रूसकी बेच मंदीका कारण बन सकते हैं । सोमवती अमावस्या पर अगर जोरदार मंदी आ गई तो भाव आगे पड़ जायेंगे वर्ना चांदी सोनेके साथ तिलहन तेल मूंगफली खल बोरी बारदानेमें मोटी मंदी बादमें भी निकल सकती है । गेहूं चनामें मंदीका झटका आकर बाजार स्थिर हो जायेंगे । भादों सुदीमें २४ सितम्बर पर तिथि वृद्धि मंदीकारक है।।

अक्टूबर १६७४ ई०. में आश्विनका महीना ५ बुधवारसे संलग्न होना भी मंदीकारक है। लेकिन सूर्य कन्याका २६-४० अंशके बाद जब अपने वर्गोत्तममें होगा ता० १३ अक्टूबर के बाद तो गुड़ खांड चीनी तैल घी आदिमें पहिले जोरदार मंदी लाकर बादमें जोरदार तेजी कर देगा। रुई बिनौला जूटपाट बारदाने में १८ अक्तूबरको तुलाका सूर्य तुलाका बुध, और २१ अक्टूबरको तुलाका शुक्र ये सभी ग्रह मिट्टीसे लेकर सोने तक सभी वस्तुओंमें अचानक तेजीका दौर कर देंगे। इसीलिए इस महीनेमें पूर्व मंदीकी चालको देखकर वायदे सट्टेमें या हाजिरीमें और मंदी मत धार लेना। अक्टूबर में विशेष रूपसे ता० १८ व १६, २० व २२ और आखिरमें ३१ इन सभी तारीखोंमें अंदाज से अधिक लक्ष्मी चांस तेजी मंदीके समाप्त होंगे। हैशियन सूतली पुराना बारदाना और टाटा आर्डनरी शेयरके भाव एक दम ऊंचे होने लगेंगे।

नवम्बर सन् १६७४ ई० में कार्तिकका पूरा महीना पांच शुक्रवारसे संलग्न मंदीकारक होता है। लेकिन इस महीनेमें शनि वक्री इतना ही जोरदार तेजीकारक है। इसलिए किसी वस्तुके भाव तो एक दम ऊंचे टंग जायेंगे और किसी २ वस्तुमें भारी मंदी आनेका संकेत है। विशेषतया ५ नवम्बरको गुरु मार्गी होगा, इस ता० से पहिले जिन वस्तुओंमें भड़कती तेजी आई होगी उन वस्तुओंमें एक दम पानी पानी हो जायेगा। कार्तिकके कृष्णपक्ष का महीना सिर्फ १३ दिनका और कार्तिकके शुक्ल पक्षके महीनेका पक्ष १६ दिनका होना एक खास योग है। इसलिए हमारे विचारसे क्योंकि सूर्य मंगल और बृहस्पतिका तेलमें असर बहुत डबल होता है अत: मूंगफलीकी पैदावारकी वृद्धि होनेकी संभावना होनेसे तिलहन मार्केटोंमें डबल मंदीका योग दीपावली के बाद प्रारंभ हो जायेगा। साथ ही मक्का बाजारके भाव जहाँ मंदे होंगे वहाँ धातु पदार्थों के भाव मंदीसे रुक जायेंगे। बल्कि नई आशा तेजीकी बनेगी। इस महीनेमें ता० ४,१५ और २७ नवम्बरसे नजराने तेजी मंदीके चांस जोर दार सम्पन्न होंगे।

दिसम्बर १६७४ ई० में मृगशिरका महीना ५ शनिवार और ५ ही इतवारसे संलग्न रहेगा और पहिली दिसम्बरको वृश्चिकका मंगल निरयन पद्धतीके हिसाबसे रात्रिको लगेगा। संवत् २०२६ में इसी पोजिशनसे जब यह ग्रह आया था तो अलसी अरंडा सींग-दानामें और तेलमें ४४)२७ पैसेसे ५१) ३० पैसेका भाव ५ दिन पहिलेसे ही मंदीका श्रीगणेश कर दिया था और मंदी २ अंश तक करनेके बाद मंदी रुक गई थी इस वर्ष भी पहिलेसे ही चालू मंदी हो जायेगी और २ दिसम्बरको ४ से ८) पैसेकी एकदम मंदी आकर नये नीचे भाव पांच दिन पहिलेसे ही आते हुये ३)१३ पैसे या ३० पैसे पूरी मंदी आयेगी यही मंगल ता० ६ दिसम्बरको १ या १॥ बजेके करीब अनुराधा नक्षत्रमें आते ही मंदीको समाप्त कर देगा। संवत् २०२६ में भी ऐसा ही हुआ था। इसीलिए यह परीक्षित और अचूक चांस है। सिर्फ इतना डिफरैन्स है कि यहां इसी दिन मंगलका उदय भी हो रहा है जो मंदी कारक है। लेकिन ता० ७ को शुक्र का उदय भी पश्चिममें हो रहा है यह एक नया योग है कि पापग्रह मंदीकारक और शुभ ग्रह तेजीकारक यहाँसे बन जाते हैं। ऐसे योगों पर

हमारा यही फैसला है कि रुई बिनौला चांदी के साथ सोनेमें और पाट बारदानेमें तो अवश्य तेजी चमकेगी और खाद्य पदार्थ घी आदिमें भी तेजी आयेगी। साथ ही मेवा बादाम अखरोट आदिमें सवाये या ड्योढ़े भाव होने लगेंगे, लेकिन विशेष रूपसे तेल और तमाम तिलहनकी वस्तुओंमें अगर ता० ६ दिसम्बर को १२ बजकर ३६ मिनट तक पहिली चाल लाइनके भाव अगर क्रोस नहीं हुये तो यहाँसे लाइन ६ दिनके लिए ६ रोज़ा अख्तयार कर लेगी जिसको कोई रोक नहीं सकता। यद्यपि आगे धनु: संक्रान्ति ता० १५ दिसम्बरको मंदी कारक आ रही है। लेकिन इस संक्रान्तिके आते ही मंदी नहीं आयेगी, बल्कि जब धनुका सूर्य ८ अंशसे निकल जायेगा तब एक चांस मंदीके रियक्शनका आयेगा, क्योंकि मृगशिर सुदीमें ३ शनिश्चर तेजीकारक है लेकिन पंचमीकी वृद्धि तेल तिलहन मक्का बाजराके अलावा सोना चांदीमें मंदी आयेगी।

विघ्नबाधाओंको दूर करनेका अनुभूत प्रयोग

[लेखक :—श्री अमरनाथ गोस्वामी]

"ज्योतिष्मती" के नववर्षाङ्क अर्थात् अक्टूबर मास १९७३ के अङ्कमें "विघ्नबाधाओं को दूर करनेका अनुभूत प्रयोग" नामक लेख पढ़ा, मन प्रसन्न हुआ। परन्तु इसका प्रयोग अभियोग (मुकद्दमे बाजी) तथा शत्रुनाश के लिये ही प्राय: प्रयुक्त होता है।

विनियोग तथा ध्यानमें कुछ अशुद्धियां हैं, उन्हें कृपया साधक शुद्ध करके पढ़ें तभी लक्ष्यकी प्राप्ति हो सकती है।

मन्त्र दो प्रकारसे मिलता है, जिसमें प्रथम पदमें ही अन्तर है—कहीं—"सर्वा बाधा प्रशमनं" और कहीं—"सर्वबाधा प्रशमनं" है।

अर्थ दोनोंका समान ही, जैसे—हे अखिलस्य-विश्वेश्वरि! सर्वव्यापिके त्रैलोक्य स्वामिनि त्वया त्रैलोक्यस्य सर्वबाधा प्रशमनं सर्वदु:खोपशमम्। सर्वाबाधेति पाठे—आसमन्ताद् बाधनं आबाधा दु:खम्। त्रैलोक्यस्य सर्वजगतां सर्वा आध्यात्मिकाधिदैविकाधिभौतिका: या बाधाया: पीड़ा तासां सर्वाबाधा सर्वदुखानां प्रशमनं उपशम:।

अस्माकं वैरिणो दैत्या तेषां विनाशनं एवं विध जगदुपकारकं कर्म कर्तव्यं इति वर प्रार्थनम्। यद्वा हे सर्वप्रपञ्च स्वामिनि! त्वया त्रैलोक्यस्य उपकारकं कर्म एतत् कार्य कर्तव्यं। कीदृशं तत्। सर्वाबाधानां प्रशमन अस्मद् वैरिणां विनाशनम्।

देवताओंने यह वर तब मांगा था जब भगवतीने एकादशाध्यायमें "नारायणी स्तुति" से प्रसन्न हो कहा था—वर मांगो जो तुम्हारी इच्छा हो, परन्तु साथमें ये शब्द और जोड़ दिये—"जगतामुपकारकम्" संसारको सुख देने वाला।

अब इसकी विधि भी सुनिये—

दो प्रकारसे आप इसका प्रयोग कर सकते हैं। प्रथम—

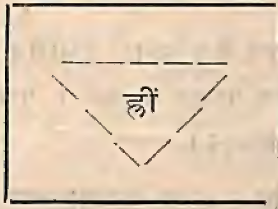
मुकद्दनेमें विजय प्राप्तिके लिये—

सर्वबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि !
एवमेव त्वया कार्यमस्मद् वैरि विनाशनम् ॥'

इससे सम्पुटित सप्तशतीके चौदह पाठ करें, परन्तु विनियोगमें—

धर्माधीश मुखेन अमुकस्य विजयाय...... ..... पाठं अहं करिष्ये। ग्यारह मास इसकी अवधि है निश्चित सफलता मिलती है।

द्वितीय—शत्रुदमनके लिये—



त्रिकोण यंत्रमें शत्रुका नाम लिख प्राण प्रतिष्ठा करे।

यदि हो सके तो मृत्तिकासे शत्रुकी मूर्ति बनायें। मूर्तिके पैर दक्षिणकी ओर हों, स्वयं उत्तराभिमुख बैठे। नाभिमें शत्रुका नाम लिखे। त्रिकोणमें मीठा तेल तथा कालीमिर्चसे एक हजार आहुति डाले इसी मन्त्रसे।

विनियोग

अथोत्तर चरित्रस्य अनेक चरित संज्ञकस्य शिवात्मा भगवान् सुमेधा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः महासरस्वती देवता भीमाशक्तिः हुं भ्रामरी बीजं क्लीं सूर्यस्तत्वं ह्रीं सामवेदो मूर्तिः सर्व-बाधा विध्वंसनार्थे जपे विनियोगः।

न्यासाः

मन्त्रके न्यास इसलिये आवश्यक होते हैं इसलिये स्पष्ट संकेत दिया गया है—

"न्यास हीनो भवेन्मूकः" न्यासके बिना मन्त्र गूंगा है।

कर न्यास :—

ॐ सर्व इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ बाधा प्रशमनं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ त्रैलोक्याखिलेश्वरि मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ एवमेतद् अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ त्वया कार्य कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ अस्मद् वैरिविनाशनं करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

वर्ण न्यास :—

ॐ सं नमः मूर्ध्नि।
ॐ वं नमः ललाटे।
ॐ बां नमः दक्षिणकर्णे।
ॐ धां नमः वामकर्णे।
ॐ प्रं नमः दक्ष नासायां।
ॐ शं नमः वामनासायां।
ॐ मं नमः उत्तरोष्ठे।
ॐ नं नमः अधरोष्ठे।
ॐ त्रैं नमः ऊर्ध्वदन्त पंक्तौ।
ॐ लों नमः अधो दन्त पंक्तौ।

एवं हृदयादिन्यास :–

ॐ क्यं नमः जिह्वायां।
ॐ स्यां नमः कण्ठे।
ॐ खि नमः दक्षांसे।
ॐ लें नमः वामांसे।
ॐ श्वं नमः दक्षमणि बन्धे।
ॐ रि नमः वाममणि बन्धे।
ॐ एं नमः दक्ष करतले।
ॐ वं नमः वाम करतले।
ॐ में नमः दक्ष करपल्लवे।

ॐ तत् नम: वाम करपल्लवे
ॐ त्वां नम: हृदये ।
ॐ यां नम: जठरे।
ॐ कां नम: नाभौ।
ॐ यँ नम: गुह्ये ।
ॐ ग्रं नम: दक्षोरुमूले ।
ॐ स्मत् नम: वामोरुमूले ।
ॐ वैं नम: दक्षजानुनि ।
ॐ रिं नम: वामजनुनि ।
ॐ विं नम: दक्षवामजङ्घयो: ।
ॐ नां नम: दक्षपादाङ्ग लिषु ।
ॐ शं नम: वामपापादाङ्ग लिषु ।
ॐ नं नम: पादयो: ।

ॐ सर्वबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि!
एवमेव त्वया कार्यमस्मद् बैरि विनाशनम् ।।
सर्वाङ्गे !

ध्यानम् :—
पाणिग्रन्थनमीलितान् रिपुगणान्निघ्नन्त्यभीक्षणं मुहु:
विघ्नध्वंसनकारिणी निजपदप्राप्तानवन्ती जनान् ।
भक्तत्राणपरायणाभयकरी विद्वेषिणां सर्वत:
भूयान्मे भवभूतये भगवती दुर्गारिगर्वापहा ।।

यदि इस मंत्र द्वारा एक लक्ष जप करके गुग्गुलसे दशांश हवन कर दिया जाय तो भी इष्ट कार्य सिद्धि होती है। असमर्थ व्यक्ति यदि रात्रिमें एक माला जप कर प्रात: दस आहुति डाल दें तो शत्रु अपने कार्यमें सफल नहीं होता ।

आगामी अङ्कमें हम पंचदशी तथा बीसा का शास्त्रोक्त पद्धतिसे सप्रमाण विधान देंगे, केवल 'ज्योतिष्मती'' के लिये ।

मैं केवल ये पंक्तिया इसलिये लिख रहा हूं कि ब्राह्मण याचक न बने । पंचदशीसे वह दाता बन जायेगा ।

पता—३, ए. कमला नगर, दिल्ली–७

★

त्रैमासिक व्यापार दिग्दर्शन

[लेखक :—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन]

माघ मास

माघमें ५ बुधवार होनेसे सभी खाद्यवस्तु एवं सोना चांदीमें तूफानी तेजी मन्दी ऐसी चलेगी कि व्यापारियोंका संभलना मुश्किल होगा। कोई व्यापारी निहाल तो कोई पामाल होगा। गुरुका राश्यन्त एक मास पूर्वसे ही तेजीकी लाइन देता है, किन्तु बाजारकी लाइन पर कार्य करना उचित होगा। कृष्णा ५ शनिवारी गुड़ खांडको मन्दा करेगी। शीघ्री धनिष्ठायां गुरु साथ ही शनि वक्री सभी खाद्य वस्तुओंमें तेजी लाने वाला शास्त्रोक्त योग है, किन्तु धनिष्ठायां गुरुके साथ मृग. केतु सभी वस्तुओंको मन्दा करने वाला शास्त्रोक्त योग है, अतः मार्केटकी चलती लाइनका उपयोग करें। ता० १२ जनवरीको मकरे बुध होकर गुरु+शुक्र+बुध योग जलराशिमें होनेसे यदि वर्षा करेगा तो सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी ही होंगी, साथ ही गुड़ खांड प्रत्येक अवस्थामें मन्दा होगा। १४ जनवरी ७४ को मकरे सूर्य होकर सूर्य+बुध+गुरु+शुक्र योग बनकर ३१ जनवरी ७३ की भांति वर्षा न होने पर तेजीका बिगुल बजेगा। गुड़ खांडमें मन्दा होगा। ता० १५ को सभी वस्तुयें मन्दी होनेकी आशा है। जहां कृष्णा ९ को बादल नहीं होंगे (उ०प्र० पंजाब राजस्थान म०प्र) उस क्षेत्रमें आगे वर्षाकाल सूखा रहेगा। कृष्णा १२।१३ को यदि इन्हीं क्षेत्रोंमें बादल बिजली गर्जना होगी तो घोर सुभिक्ष किराना भी अवश्य ही मन्दा होगा। ता० १८ को सूर्य-हर्षल केन्द्रसे महान् दुष्काण्ड, गुड़ खांड अच्छा मन्दा तो अन्य वस्तुयें तेज भी हो सकेगी। ता० २२ को वक्री हुआ शुक्र सवेरे पश्चिममें अस्त यदि वर्षा लावे तो भूमिज वस्तुयें मन्दी तथा खनिज पदार्थोंमें कोई चाल विशेष रूपसे निकलेगी। आज ही रातको ९ बजे चन्द्रमा भी उपर्युक्त चतुर्ग्रहीमें सम्मिलित होकर सूर्य+बुध+गुरु+शुक्र+चन्द्र योगसे वर्षा और तेजी ओलापात भारत व इतर देशोंमें नैऋत्य दिशाकी प्रजा का विनाश होगा। हिन्दव्यापी केवल वर्षा ही होगी तो मन्दा अन्यथा गत वर्षकी भांति तेजी होगी। इस मासमें दक्षिणी वायु जोरसे चलने पर श्रेष्ठ वर्षा होती है। शुक्ला २ शुक्रवारी शुक्ला ३ शनिवार कहीं-कहीं युद्धकी भेरी बजवा देगी। माघ शुक्ला ३ शनिवार हिजरी सन् १३९४ का प्रारम्भ शनिवारा गुर्रा यवनोंका सर्वत्र सर्वनाश किये बिना नहीं रहेगा। ता० २७ को पूर्वोदयी शुक्रसे बादल वर्षा वायुवेग या शीतवृद्धि ता० २२ को चली लाइनको बदल देगा साथ ही किसी महान् नेताका निधन भी सम्भव है, तत् स्वभावानुसार सभी वस्तुओंमें कोई चाल निकलेगी। ता० २८ को सायं पश्चिमोदयी बुध भी वर्षा वायुवेग करेगी। ता० २४ को चली लाइन बदल भी सकेगी। ता० ३० को कुम्भे बुध होकर सूर्य+गुरुशुक्र योग यदि वर्षा करे तो मन्दा, वायुवेग हो तो तेजी होगी। शुक्ला ७ से चतुर्दशी पर्यन्त यदि उपर्युक्त क्षेत्रोंमें वर्षा होगी तो आगे उसी क्षेत्रमें वर्षाकाल भी

निश्चित रूपसे श्रेष्ठ रहेगा, परीक्षित है। १ फर्वरी को वक्री हर्षलका प्रभाव तेजीका होगा। ता० ३ को ढाई बजे गुरु अस्त पश्चिममें वर्षा कारक साथ ही मन्दा, वर्षा न हो तो तेजी। ता० ४ को सभी वस्तुयें तेज, माघी पूर्णिमाका क्षय कालीमिर्च रुई पाट चांदी सोनामें मन्दी, और खाद्य वस्तुयें तेज होंगी।

फाल्गुन मास

६ फर्वरीको कृत्तिका भौमसे सभी वस्तुयें तेज साथ ही कृम्भे गुरुसे बादल वर्षा वायुवेग या शीतवृद्धि, रुई रेशम ऊन कपड़ा पाट कालीमिर्च ६ मास तक तेज. सोना चांदी सर्वधातु शेयर्स ३ मास तक मन्दे, शास्त्रोक्त वचन है। अन्य वस्तुओंमें कोई चाल, वायुवेग हो तो तेजी अन्यथा मन्दा ही होगा। कृष्णा ३ शनिवारी तुरन्त अच्छी तेजी लावेगी। ता० १२ को रातमें कुम्भे सूर्य होकर सूर्य+गुरु+बुध योग वर्षा लावे तो मन्दा अन्यथा तेजी किन्तु यहीं "शनिअङ्गारकयोग" भी बना है जो सभी वस्तुओंकी तूफानी तेजी-मन्दीसे कुछ व्यापारियोंकी दुर्दशा तो कुछ मालामाल भी होंगे। ता० १५ को बृषे भौम, रातको बुध वक्री बादल वर्षा वायुवेग खाद्य वस्तुओमें अच्छी तेजी, धातुओंमें भी कोई विचित्र चाल निकलेगी। कृष्णा १४ की वृद्धि तेजीकारक, शिव चतुर्दशी से मार्केटमें पहले ही कोई ऐसी चाल देती है जिससे व्यापारियोंको सदैव आश्चर्य होता है। ता० २७ को शनि मार्गी बादल वर्षा वायुवेग मार्केटकी चलती लाइनमें एकदम पलटा करेगा। बजटका ध्यान रखिये। ३ मार्चको पूर्वोदयी बुधसे वायुवेग वर्षा सम्भव, ता० ५ को पूर्वोदयी गुरु समर्थक है, सायं रोहि० भौम तेजीकी सूचना देता है। ता० ६ को शुक्रका गुरु-बुधसे चरण वेध ता० ९।१० तक वर्षा और तेजीकी आशा है। गुरुवार पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्रमें होलिकादहन श्रेष्ठ है। मार्च मासमें पतझड़ जहां विशेष होगा, वहां आगे उपज श्रेष्ठ होगी।

चैत्र मास

चैत्रमें ५ शनिवार दुर्भिक्षकारी, ९ मार्चको शनि गुरु गेहूं सोना लाल रंग हल्दी व अन्य वस्तुयें मन्दी करेगा। सायं मार्गी बुधसे बादल वर्षावायुवेग। ता० ४ को चली लाईन ता० ११ को निश्चित रूपसे बदल सकेगी। ता० १० को धनिष्ठायां बुधका श्रवणे शुक्रसे च० वेध कल सायं तक कहीं-कहीं बादल वर्षा वायुवेग सभी वस्तुयें मन्दी कर देगा। ता० १२ को नेपच्यून वक्री सभी खाद्य वस्तुओंको तेज करेगा। कृष्णा ४ प्रातः पञ्चमी भौमवारी समर्थक है। ता० १४ को सायं शनि दृष्ट मीने सूर्य साथ ही कुम्भ राशिमें बुध+गुरु योगसे चांदी सोनामें विचित्र चाल, गुरुवारी मीन संक्रान्ति रुई रेशम पाट कालीमिर्च देशी घी को मन्दा करेगी। कृष्णा ७ को घटाटोप बादल होने पर लाल रंग गुड़ तिल तेल सींगदाना सरसों मसूरान्नको मन्दा कर देगी। ता० १५ को सभी वायदे मन्दे होंगे। ता० १८ से ता० २० तक तेजी सभी खाद्य वस्तुओंमें होगी। ता० २३ को कर्काशे भौम-शुक्र, शनैश्चरी अमावस तेजीकारक है। चैत्र शुक्ला १ रविवारी संवत् २०३१ को वर्षेश सूर्य होगा जो शासन सूत्रको दृढ़ बनावेगा। घी गुड़ खांड तेलके बीज चना लाल रंग हल्दी लालमिर्च अन्नादिके संग्रहसे आषाढ़ शुक्ला १ से एक

मासमें लाभ देगा । लड़ाई झगड़े बहुत ही अधिक होंगे । पश्चिमी हिन्द (पाकिस्तान) में उत्पात, चनाके साथ सभी अन्न वैशाखमें ही खरीदें, श्रावण भाद्रपदमें बेचनेसे लाभ होगा ऐसा दूसरा मत है । इस वर्षमें वायुवेग विशेष रूपसे होगा, नोट करें । शुक्ला २ को सोमवारा दक्षिण शृंगी ३० मुहूर्ता चन्द्रोदय सोना चांदी सर्व धातुको तेज करेगा । २५ मार्चकी रातको वृश्चिके राहु वृषे केतुसे सर्वधातुमें घोर तेजी, परन्तु राजकीय नीतिको समझते हुये व्यापार करें । शेयर्स रुई पाट किराना भी तेज, अन्नादि सामयिक मन्दा लावेगा । १५ दिन पूर्वसे चली लाइन आज बदल भी सकेगी । ता० २७ से ता० ३१ तक सभी खाद्य वस्तुयें, तेलके बीज मन्दे होंगे । ३१ मार्चको कुम्भे शुक्र होकर गुरु +बुध+शुक्रयोगसे बादल वर्षा वायुवेग ओलापात सम्भव है । शेयर्स सोना चांदी सर्वधातु गुड़ खांड रुई पाट कालीमिर्च रेशमको मन्दा करेगा । गुड़ खांडके स्टाकिष्ट पर संकट सवार होगा । ३ अप्रैलको रातसे ता० ७ तक तेलके बीज मन्दे, शुक्ला १३ का क्षय वीर जयन्ती जैन जाति पर सङ्कट. सोना चांदी तेलके बीज रुई पाट रेशन कालीमिर्च मन्दे होंगे । ता० ६ को सवेरे भौम-प्लूटो केन्द्रसे महान् दुष्काण्डसे त्राहि-त्राहि होगी, किन्तु चैत्री पूर्णिमा शनिवारी हस्त संयोगी आगे उपजकी सारी वस्तुओंको एकदम तेज करेगी । रातको शनि शुक्र ता० ८ को मन्दा लावेगा । लाभ-हानिका पूर्ण उत्तर दायित्व प्रयोक्ता महोदय अपने ही ऊपर जानकर बाजारकी स्थितिको देखते हुये अपनी शक्तिके अनुकूल ही कार्य करें ।

नोट :—९ जनवरी आलू प्याज लहसुन अदरख सोंठ हल्दीके साथ सभी खाद्य वस्तुयें तेलके बीज तेज, ज्वार बाजरा मक्का मन्दे, दाल अन्न तेज होंगे ।

चेतावनी :-

मुष्टिक योगमाला —

पारम्परिक चमत्कार पूर्ण योग

[लेखक :—श्री वैद्य वाचस्पति शर्मा आयुर्वेदाचार्य]

रजोऽवरोध

मासिक धर्म होनेमें जब समयसे कुछ अधिक दिन चढ़ जाते हैं तब भावी आशंकाओं से उल्लसित होकर क्षुब्ध ललना जगत् परिजनों के लिये अरुन्तुद हो जाया करती है। तब यह योगिवर्य निर्दिष्ट सुलभ योग सञ्जीवनी तुल्य है।

तुलसी मञ्जरी (बीज) ५० ग्राम।
पुराना गुड़ ५० ग्राम।

तुलसीकी मञ्जरीमेंसे बीजोंको अलग कर उक्त मात्रा ग्रहण करे। पीसकर गुड़में मिला लेवें। दोनोंकी एक मात्रा बना लेवें। उष्णोदक के अनुपानसे प्रातः १ दिन ही सेवन करें। कुछ ही घण्टोंमें रजोऽवरोध दूर होकर ललना ऋतुमती हो जाती है।

गर्भस्थापक योग

बम्बूलका गोंद	१ किलो।
मिश्री	१ किलो।
गोघृत	१ किलो।
छोटी इलायची	१० ग्राम।

प्रथम बम्बूलके गोंदको घीमें भूनकर फूलिया बना लेवें। पश्चात् मिश्रीकी चासनी बनाकर फूलियामें मिला बर्फी बना लेवें। एला सिद्ध होते समय ही प्रक्षेप करें। मात्रा २५।५० ग्राम। गोदुग्धानुपानसे प्रातः जल पान (लघु आहार नाश्ता) में प्रयोग करें। औषध सेवन कालमें भगवान् शंकरकी नियमित उपासना करें। यथासंभव मनसा वचसा कर्मणा पुनीत रहे। इससे भगवान् देवाधिदेव महेश्वरके महाप्रसादसे सभी प्रकारके गर्भाशय सम्बन्धी विकृति जन्य रोग दूर होकर गर्भ स्थापन हो जावेगा। भगवान् शिवकी उपासनामें किञ्चित् भी प्रमाद हनीं होना चाहिये, क्योंकि वे ही एक मात्र दुग्ध एवं पुत्र विभागके अधिष्ठाता हैं। भगवान् कृष्णको भी शिवोपासनासे ही पुत्र प्राप्ति हुई थी। 'नान्यःपन्थाः विद्यतेऽयनाय।'

धातु स्राव

यह रोग प्रायः ४० वर्षके आसपास प्रारम्भ होता है। इसमें मलोत्सर्ग करते समय यदि ध्यानसे देखा जावे तो मूत्रोत्सर्गसे पूर्व या पश्चात् वीर्य स्राव होता रहता है। इससे शनैः शनैः शरीर निस्तेज हो जाता है अतः—

कोकिलाक्ष (तालमखानाबीज) चूर्ण ३ ग्राम। मिश्री ३ ग्राम। मिलाकर एक मात्रा बना लेवें। प्रातः सायं धारोष्ण गोदुग्धके साथ सेवन करें। मूल बन्ध लगावें। प्राणायाम करें। पदभ्यां चले। स्वावलम्बनका समभ्यास यथा सम्भव करें।

शोथहर प्लास्टर

ज्ञाताज्ञात कारणसे यदा कदा शरीरके किसी भागमें शोथ (सूजन) आ जावे तब—

बिना बुझा हुआ सुधा चूना १ भाग। गुड़ १ भाग। दोनोंको सम भाग ले थोड़ा सा पानी डाल पीस लेवें। पश्चात् शोथ स्थान प्रमाणानुसार मोटा (लट्ठा, रेजी) कपड़ा काटकर लेप (गुड़ चूनेका) कपड़े पर लगा शोथ स्थान पर लगा देवें। इससे स्थानीय सूजन तत्काल शमन हो जावेगी। (क्रमशः)

"JYOTISHMATI" REGISTRAR NEWS PAPERS FOR INDIA R.N., 4941/57

हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा कुमार प्रि० प्रैस सोलनमें छपकर ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन से प्रकाशित